

ज्ञानार्थं चित्तं शुभाशुभं यत् ज्ञानेन हि ज्ञायते ॥

मेघमहोदय-वर्षप्रबोध.

कृता -

श्रीमन्महामहोपाध्याय श्रीमेनविजयगणि.

(हिन्दी अनुवाद मंगल)

यदि आप सो वर्षों कर और कीर्तनी बामेंगी. मुकाल
होगा या दुकाल ये जानना सो तथा मरम्मत प्रसार के भाव,
सोना चांदी आदि धातु, मट्ट कपड़ा आदि वस्तु ने बढ़ेगा
होगा या समता इत्यादि बहुत उपयोगी विषयों को जानने की
उत्कंठा हो तो इसको अवश्य मगवा कर पढ़ें ।

पृष्ठ ४२५ पकी जीम्ह की कील ४) रूपिषा पोम्ह
खर्च मलग ।

मिलने का पता—

पं० भगवानदास जैन.

मेटियाँ जैन थिस्टिंग प्रेम.

बीकानेर. (राजपुताना)

इस विनाय दायने के लिए जिन
 महाजयने महायना दी है
 उनही अभिनामायनी,

- १५) विनाय पत्नी-निधारी सुमनमदुर्गा भारेष्ठा
 की धर्मपत्नी राजपट्ट की मरफ. से भेट ।
- १६) विनाय राजपट्ट-निधारी मंगलमर्यादा माधवा-
 मृगा की मरफ. से भेट ।
- १७) विनाय राजा के धर्मपत्नी मरफ. से भेट ।
- १८) विनायमोहाय विनाय सुनीया आशासमर्ती
 संपादानती की मरफ. से भेट ।
- १९) विनाय राजपट्ट के धर्मपत्नी आविशर्मा की
 मरफ. से भेट ।

इस पुस्तक, मित्रों का दिवना—

श्रीगुरु रत्नलालजी मिसरूप

देवती की मरफ. —

राजपट्ट (राजपुत्राना)

प्रस्तावना .

प्रियवर जैन बन्धुओं!

यह “ पूर्णक्षेमवह्मविलाम ” नामक छोटाम
ग्रन्थ प्रकाशित कर भेंट रूपमें आपकी सेवा में उप-
स्थित किया जाता है, पूर्ण आशा है कि इसका अव-
लोकन तथा नैमित्तिक किया आदि विषय में सद्गुणों
कर आप मेरे परिश्रम को सकल करेंगे ।

चिरकाल पूर्व इस ग्रंथ का संग्रह कर श्रीमान् मान्यवर
गुरुवर्य प्रातःस्मरणीय श्री १००८ श्री क्षेमसागरजी मह-
राज ने परम कृपा कर मुझे इसे इसलिये सौंपा था कि
मैं इसका प्रकाशन कर जैन समाज की सेवामें उपस्थित
करूँ। मैं भी अपने ऊपर स्थित भार से उद्गुण होने
लिए चिर समय तक इच्छा और चेष्टा करता रहा, व-
स्तु दैवयोग से अब तक अपने कर्तव्य का पालन न
कर सका ।

क्षेत्रप्रशाना के अनुसार संवत् १९८२ का मेरा
मास्य श्री पीकानेर नगरमें हुआ और यहां के

एव सुयोग्य भूमिगत आयक. यों को यह बात किमो प्रचार विहित हो गई कि हम सब लोगों के लिए आयुष्यो-
गी तथा जैन समाज के लिये परम लाभदायक ग्रन्थ प्रकाशनार्थ प्रयत्न है, फिर भी क्या था. अधिकांश आयक. घण्टाएँ इस के प्रकाशन के लिये अनुरोध करने लगी, ऐसा होने पर मैंने भी यह निश्चय कर लिया कि अब इसको छीप ही प्रकाशित कर अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये. इस निश्चय के कर लेने पर भी मैं अपनी संशोधनीय प्रवृत्ति के कारण तत्पर्य महाप-
ना प्राप्ति के विषय में कुछ कहने सुनने में सह्योप ही करता रहा, अतः फिर भी कुछ दिनों तक असमंजसमें ही रहा रहा तथा आयक. यों ने तत्पर्य ही ही की क-
रता रहा, अन्ततः कनिष्ठ धर्मजील आयक. जनों ने स्वयमेव इस कार्य को अपने हाथ में ले कर इस के लिये उद्यम करना प्रारंभ किया. बस ऐसा होते ही कार्य का आरंभ हो गया और बोलत वहीं से नहीं कि-
न्तु बाहर से भी महापना प्राप्त होने लगी, प्रति फल यह हुआ कि लगभग पांच मास में ही ग्रन्थ मुद्रित हो कर भिचार हो गया और मैं इसे आर की सेवा में उपस्थित कर अपने कर्त्तव्य का पालन करने में समर्थ हो सका।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में जिन २ महाशुभाव सज्जनों तथा वाइयों ने आर्थिक सहायता प्रदान कर अपनी धर्मशीलता का परिचय दिया है, उनको इस धर्म कार्य में योग देने के हेतु धन्यवाद है, उनकी नामावली भी शानार्थ पहले प्रकाशन की गई है।

इस ग्रन्थ में—देववन्दन, गुरुवन्दन, सामायिक विधि, रायसी देवमा प्रतिक्रमण, प्रम्याह्वान, गुरुवर कृत स्तवन, अष्टक, धुडियाँ, वासशेष पूजा, नवपद ओली विधि, प्रम्याह्वान पारणविधि, चौबीस महाराज के १५० कल्पाणक तथा वास विहरमाणजी के नाम, इत्यादि अनेक उपयोगी विषयों का संग्रह है, जिनकी उपयोगिता का निश्चय पाठक जन अवलोकनके द्वारा स्वयमेव कर सकेंगे।

मेरा विचार यह भी था कि—ग्रन्थ के अन्त में आचार्योंके निर्मित नीति और पैराग्व के उपदेशदायक कविषय उत्तमोत्तम श्लोकों का भी अर्थ सहित संग्रह कर संयोजन किया जाता कि जिससे गृहस्थ आचार्यों को नैतिक क्रिया के ग्रन्थ के द्वारा ही उक्त विषय के उत्तमोत्तम श्लोकोंका भी अभ्यास होकर लाभ पहुँचना; परन्तु पुस्तकप्रकाशन की शीघ्रता आदि कई कारणों से ऐसा नहीं हो सका, अस्तु— ध्याता है कि

किसे अन्य उपयोगी पुस्तक के साथ में गमा करनेका सुभाषण ही हो प्राप्त होगा ।

अन्न में हम कार्य में योगदान करनेवालों को तथा पालीवाना निवारण के भगवान्द्वारा जिन ने हमका मुक्त होने में परिश्रम किया है हमलोग उस को भी भगवान्द्वारा प्रदान कर पाठकाल में मेरा निवेदन है कि यन्त्र में लेखन, छापन और मुद्रण आदि के द्वारा जो २ पुस्तिकाएँ रही हो उनका संशोधन कर तथा अन्वय या अन्वयार्थ और मनुष्ययोग कर साथ में परिश्रम को करता करे । किम-
धितः विज्ञेय.

निवेदक—

वीर मंत्र २४२ १

मुनि यलुभसागर.

द्वितीय संस्करण १५

वीराने.

विषयानुक्रमणिका.

नं०.	विषय.	पृष्ठ.
१	देवचंदन विधि	१
२	गुरुचंदनविधि ..	११
३	सामायिक लेने की विधि	१२
४	सामायिक पारने की विधि ...	१८
५	राईप्रतिक्रमणविधि . . .	१६
६	मंघ्यासामायिकविधि	२७
७	देवसिपप्रतिक्रमणविधि	३३
८	जिनकुशलमृरिजी महाराजका स्तवन	१०३
९	पञ्चकलागविधि	१०४
१०	श्रीसद्गुरुगुणाष्टक	१११
११	श्रीकुशलसूर्यष्टक .. .	११३
१२	श्रीगीतमदेव स्तवन ..	११४
१३	श्रीगुरुगुण स्तवन . . .	११६
१४	जन्ममहोत्सव स्तवन ...	११७
१५	श्रीपार्श्वप्रभु स्तवन	११७
१६	श्रीनेमिनाथस्वामी स्तवन	११८
१७	अजितनाथस्वामी स्तवन ..	१२०
१८	श्रीपार्श्वजिन स्तवन . . .	१२१

१६	मधुशान्ति स्तवन	१६१
१७	श्री भोरीपार्श्वजिनपूजस्तवन (शणो ह्यग्रायादिनी)	१६१
१८	श्रीगौतमस्वामी का श्लोक	१६०
१९	देसायनामिकवपरागणसेनैकीविधि	१६१
२०	देसायनामिकवपरागणवारने की- विधि	१६४
२४	गामसेन दशा	१६७
२५	नवपद के नव वैष्णवंदन, नव स्तवन गण नव गुण	१६१
२६	नवपदपूज स्तवन	१६४
२७	नवपद स्तुति	१६७
२८	नवपद वैष्णवंदन	१६८
२९	नवपद स्तुति	१६९
३०	सादश आर्चन गण	१७०
३१	मिष्ट आष्टगुण	१६१
३२	आचार्यका उत्तीसगुण	१६२
३३	उपाध्याय पर्यासगुण	१६४
३४	साधु के सत्परासगुण	१६५
३५	सम्पन्न के महमद भेद	१६६
३६	ज्ञानपद के गजायन भेद	१७०

३७	भारित्रयद के ७० भेद	...	१७२
३८	तपपद के पचास भेद	...	१७१
३९	चोवीस जिन के १५० कल्याणक (पंचकल्याणक टीप)	...	१७८
४०	दीपमाला को गुणनो	...	१८३
४१	वीसविहरमान के नाम	...	१८३
४२	चारसाध्वता जिनवर के नाम		१८३
४३	मेरी भावना	...	१८७
४४	घारह भावना	...	१८८
४५	आठ घुई से देववन्दन विधि	...	१९१
४६	बाँदह नियमकी विधि	...	२०१
४७	आवकोंके प्रत्याख्यान के ४९ भाँगा		२०७
४८	आराधना का स्तवन	...	२११
४९	पंचमी का छोटा स्तवन	...	२२२
५०	ग्यारह का स्तवन	...	२२२
५१	श्रीऋषभजिनेश्वर का स्तवन	...	२२४
५२	श्री सीमंभरस्वामी का स्तवन	...	२२५
५३	पर्युषण की स्तुति	...	२२८
५४	भगवंत के अंगपूजन का दृष्टा	...	२२८
५५	पद्मावती आराधना	...	२२९
५६	आवक का तीन मनोरथ		२३३

१७	सुमक विचार	२३६
१८	प्रतुयनी र्वःसंकी सुमक विचार	२३७
१९	इयोस जानका धोषण धाणी ...	२३९
२०	षायोस अभक्ष के नाम ..	२३९
२१	तपामच्छीय राहप्रतिप्रमणविधि ..	२४०
२२	जगच्चिन्तामणि दैत्यवन्दन ...	२४१
२३	भरहेमर की सज्जाय ...	२४२
२४	मार्धवन्दना ...	२४२
२५	तपामच्छीय दैवसिय प्रतिप्रमण विधि	२४८
२६	दीपमाला की स्तुति	२५१
२७	देषचन्द्रजी गृह स्नात्रपूजा ..	२५२
२८	अष्टमरारीपूजा अर्ध समेत ...	२५३



३७	चारित्र्यपद के ७० भेद	...	१७२
३८	तपपद के पचास भेद	...	१७६
३९	चोवीस जिन के १५० कल्याणक (पंचकल्याणक टीप)	...	१७८
४०	दीपमाला को गुणनो	...	१८३
४१	षीसविहरमान के नाम	...	१८३
४२	नारसाश्वना जिनधर के नाम	१८३
४३	मेरी भावना	१८७
४४	मारह भावना	१८८
४५	आठ गुह से देववेदन विधि	...	१९१
४६	शौदाह नियमकी विधि	२०१
४७	आवकोंके प्रत्यारूपानके ४९ भांजा		२०७
४८	आराधना का स्मयन	२११
४९	पंचमी का छोटा स्मयन	२२९
५०	गारस का स्मयन	२२९
५१	श्रीकृष्णजिनेश्वर का स्मयन	...	२२४
५२	श्री सीमंथरग्वामी का स्मयन	...	२२५
५३	पर्युषण की स्तुति	२२८
५४	भगवंत के अंगरुजन का दृष्टा	...	२२८
५५	पद्मायनी आराधना	२२९
५६	आयक का तीन मनोरथ		२३३

५७	सूक्तक विचार	२३६
५८	अनुवमी स्त्रीसंबंधी गूढक विचार	२३७
५९	इषीस जातका धोवन पाणी	२३९
६०	षावीस अभक्ष के नाम	२३९
६१	तथागच्छीय राहप्रतिक्रमणविधि	२४०
६२	जगचिन्तामणि चित्यवदन	२४१
६३	भरद्देसर की सज्जाय	२४२
६४	तीर्थवदना	२४२
६५	तथागच्छीय देवसिप धर्मिकमय विधि	२४८
६६	दीपमाला की स्तुति	२५१
६७	देवचन्द्रजी मृत स्नायपूजा	२५२
६८	अष्टप्रकारीपूजा अर्ध समेत	२५३



श्री पंच परमेष्ठिने नमः

मंगलाचरणम्

सुरनर वंदित पोधमय, चन्दन हूँ श्रीअरिहंत ।
होन तुरत जिन भजन में, भव कन्दन को अंत ॥१॥
सिद्धि सुधित सिद्धन नमूँ, पुनि आचार्य अनेक ।
जिन जिन शासन की करी, उन्नति सहित विवेक ॥२॥
उपाध्याय उपदेशप्रद, साधु साधुना लीन ।
प्रणमहुँ तिन के पदकमल, होय कर्म मल छीन ॥३॥
पूज्य पंच परमेष्ठि नित, शुभ मंगल के धाम ।
भय हेतु मैं तासु गुण, ध्यावहुँ आठहुँ याम ॥४॥
पूजनीय परमेष्ठि शुभ, पूरहि मम आश ।
सकल जैन जन लाभ हित, हो यह ग्रन्थ विकाश ॥५॥
पूर्णक्षेमवल्लभ सुजन, करिहहि पठन विलास ।
नित्य क्रिया विधि से रहहि, सुहृद हृदय उजास ॥६॥
मय विधि निपट अजोग मैं, कीन्हो ग्रन्थ प्रकास ।
सज्जन क्षमिहहि शुटि कहँ, यह मम दद विश्वास ॥७॥

सुजन कृपाभिलाषी—

साधु बह्मभसागर

पीकानेर.



धीरेन्द्रवर्मेश्वर्यो नमः ।

धीरिन्दन-वृन्दन-गुरुयो नमः ।

धीरेव-गुरु-धर्म-वन्दनविधिः ।

प्रथम पाठः ।

बिभी स्थान में धीरेव गुरु धर्म भक्त दो आरक रहते थे, दोनो मने भाई थे, उनमें से बड़े का नाम विरेकचन्द्र और छोटे भाई का नाम विन्दनचन्द्र था, दोनो भाई मार्भक नाम वाले थे अर्थात् बड़ा भाई भगवन् ही विवेकवान् था, तथा छोटा भाई वय विनयमयन था, बड़ा भाई विवेकचन्द्र प्रणिदिन को धीरेव गुरु धर्म वन्दनक्रिया को निशुद्ध भाव से किया करता था, चित्तुं छोटा भाई विन्दनचन्द्र छोटी अवस्था का होने के कारण उन क्रिया में अनभिज्ञ था, अर्थात् उक्त क्रिया के योग्य और लाभ को नहीं समझता था अतएव बड़े भाई विवेकचन्द्र को यह हुआ थी कि मेरे समान मेरा छोटा भाई भी उक्त क्रिया के महत्त्व और लाभ को समझे, तथा प्रणिदिन उसे अत्यावश्यक जान कर गुरुको, अनन्तर एक दिन प्रान्तर काल विवेकचन्द्र ने शिव प्रसाद प्रतिपत्ति देकर अपने छोटे भाई को इस क्रिया का महत्त्व बतला कर इसमें प्रवृत्त किया तदर्थ प्रवृत्त है—

विवेकचन्द्र— माई विनयचन्द्र! उठो प्रातःकाल होने का
 भाषा है अब तक सोते रहना उचित नहीं है, क्यों की मनुष्य के
 प्रातःकाल शीघ्र ही उठकर शौच आदि आवश्यक क्रिया से निरत होकर
 श्रीदेव और गुरु आदि की वन्दन क्रिया में प्रवृत्त होना चाहिये ।

विनयचन्द्र— (उक्त बात को सुनते ही शीघ्र उठ बैठा और
 बोला) हाँ माई साहब! ये उठ बैठा आज्ञा दीजिये ।

विवेकचन्द्र— अच्छा चलो पहिले अपने परमदेव बीतना
 परमात्मा के दर्शन का पीछे अन्य काम को काँगे, क्योंकि शान्त
 और भक्तिक शोभावाले देव के मुखाग्रविन्द का दर्शन करेगे तो
 अपने को विद्या और सद्बुद्धि प्राप्त होगी और उस के प्रभाव से अपने
 मग्न दिन का व्यवहार सुलभकारी होगा, नीतिशास्त्र में कहा है की
 प्रातःकाल महात्मा महानुभाव का दर्शन होने से मनुष्य का समा
 दिन अच्छे प्रकार बीतता है, उस को उत्तम लाभ होता है, तथा बुद्धि
 निर्मल रहती है तो भला अपने अभीष्ट देव के मुखाग्रविन्द का दर्शन
 करने से बेसा ही क्यों नहीं होगा ।

विनयचन्द्र— हाँ माई साहब ! आपका कथन यथार्थ है
 आज्ञा की आज्ञा के अनुसार हम अभी आपके साथ चलेंगे, तथा मर्य सु
 दायक परमानन्द का दर्शन कर अपने को कृतार्थ करेंगे, (यह कह
 कर साथ चलने के लिए तैयार हो गया) ।

विवेकचन्द्र— नीतिशास्त्र में कहा है की - देव गुरु मा
 अपना महानुभाव के पास भाली हाथ नहीं जाना चाहिये, यथा

परिजडत्वेन नो देवाद् गजानं देवतां शुभम् ।” हम विष्णु देवदरीन के निम्न करने समय अपने को गामी हाथ नहीं चलना चाहिये कुछ चारों ओर से लेना चाहिये ।

विनयपत्र— जी माहर्! मानाई (चाहते हैं कि दोनो भाई पहले और मन्दिरमें पहुँच कर नीचे निम्ने अनुमात्र वन्दन किया की, इसी प्रकार सब को करना चाहिये ।

निर्मोषवाक्य :

‘निमीही निमीही निमीही’ १ दद दाठ मन्दिर में पैरना करना । (देवमन्दिर में जाकर विनय के साथ दद दाठ बोले) —

श्रीलोकेश आर्त्ति हर नाथ! तुझे नमूँ मैं ,
हे भूमि के विमल रत्न ! तुझे नमूँ मैं ।

हे ईश! सर्वजगत के तुझे नमूँ मैं,
मेरे भगवदधि नाथक ! तुझे नमूँ मैं ॥ १ ॥

प्रभुमुद्रा को देने से हा दोनो हाथों को जोड़ कर तथा स्वरूप को समय का रिक्त मान प्रशिक्षण देने समय यह भावना करनी चाहिये —

हे प्रभो ! ज्ञानगुणस्य प्राप्त्यर्थं प्रथमप्रदक्षिणां ददामि ।

दरती प्रशिक्षण देने समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो ! दर्शनगुणस्य प्राप्त्यर्थं द्वितीयप्रदक्षिणां ददामि ।

तीसरे प्रशिक्षण को देने समय यह भावना करनी चाहिये —

हे प्रभो! चारित्र्यगुणप्राप्त्यर्थं तृतीयप्रदक्षिणां
ददामि ।

इस के पश्चात् साधिका करे और यह बोले —

हे प्रभो! चतुर्गतिनिर्माहार्थं स्वस्तिकं रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो! चारों गतियों का नाश करने के लिये मैं साधिका
बनाना हूँ ।

इस के पीछे तीन पुंज (दिगलौ) करे और यह बोले—

हे प्रभो ! ज्ञान-दर्शन-चारित्र्यप्राप्त्यर्थं त्रिपुञ्जं
रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन और चारित्र्य की प्राप्ति के लिए मैं
तीन दिगम्बियों का बनाता हूँ ।

और एक दिगम्बी पीछे चर्द्ध चन्द्राकार करे और यह बोले—

हे कुरुणामिन्धो! सिद्धस्थानप्राप्त्यर्थमर्द्धचन्द्राकारं
करोमि। पुस्तमेकं च सिद्धवत्स्थित्यर्थं करोमि ।

अर्थ— हे कृपासिन्धो! सिद्धस्थान की प्राप्ति के लिये मैं
चर्द्धचन्द्राकार बनाकर करता हूँ और एक दिगम्बी सिद्धममान स्थिति
के लिये करता हूँ ।

इसके पीछे मगवान की दाहिनी भुजा की लम्ब लम्बा दोहा
कराई और नौ मगवान की बाईं भुजा की लम्ब लम्बा दोहा कर
कराई और दोनों गोदा को और मगवान को नवाकर यह बोले

इच्छामि राममममणे ! यदि तुं जायणिञ्चाण निर्मादि-

छाण मन्यण्णं वंदामि ।

इस दारुण हो उठ फट के साथ में भीन दार कोलना पादि-
ए । हम के दोहरे इच्छामो करना पारिये ।

इरियायटिपाण ।

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! इरियायटिपं पटि-
वमामि ? इच्छं । इच्छामि पटिकमिडं, इरियायटिपाण,
विताहणाणं समसाममणे पाणक्कमणे वीपक्कमणे हरिय-
क्कमणे आमा उभिंण पणम दम सद्धा मक्कहासंताणा
संक्रमणे, जं मे जीया विराटिया, पणिंदिया, वेइंदिया, तेइं-
दिया, पउरिंदिया, पंचिंदिया, अमिहया, वसिया, लेमिया,
मंथाया, मंघटिया, परियाविया, किलामिया, उइविया,
आणाओ ठाणं मंकाभिया, जीवियाओ यपरोविशमस्स
मिच्छामि दुक्कं ।

मम्म उत्तरी ।

मम्म उत्तरीकरणेणं, पायन्दिस्सकरणेणं, विमोहा-
करणेणं, विमह्हाकरणेणं, पायाणं कम्माणं निग्धापण्डाण,
आमि काउम्ममं ।

अथन्य उमसिण्णं ।

अथन्य उमसिण्णं, नीमसिण्णं, स्वामिण्णं,
छीण्णं, जंभाइण्णं, उड्डुण्णं, वापनिममंणं, भम-

हे प्रभो! चारित्र्यगुणप्राप्त्यर्थं तृतीयमद्विष्टां
वदामि ।

इस के पश्चात् साधिया कर और यह बोले —

हे प्रभो! चतुर्गतिनिर्मोहायै स्वस्तिकं रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो! चारों गतियों का नाश करने के लिये मैं साधिया
बनाना हूँ ।

इस के पीछे तीन पुंज (दिगल्लो) कर और यह बोले—

हे प्रभो ! ज्ञान-दर्शन-चारित्र्यप्राप्त्यर्थं त्रिपुञ्जं
रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो ? ज्ञान दर्शन और चारित्र्य की प्राप्ति के लिए मैं
तीन दिगलियों को बनाता हूँ ।

और एक दिगल्लो पीछे चर्द चन्द्राकार कर और यह बोले—

हे कृपासिन्धो! सिद्धस्थानप्राप्त्यर्थमर्द्धचन्द्राकारं
करोमि । पुञ्जमेकं च सिद्धवत्स्थित्यर्थं करोमि ।

अर्थ— हे कृपासिन्धो! सिद्धस्थान की प्राप्ति के लिये मैं
चर्दचन्द्राकार के समान आकार करता हूँ और एक दिगल्लो सिद्धस्थान स्थिति
के लिये करता हूँ ।

इसके पीछे भगवान् की दाहिनी भुजा की तरफ खड़ा होकर
नगार्झी हो तो भगवान् की बाईं भुजा की तरफ खड़ा होकर हाथ
जोड़कर तथा दोनों गोड़ा को और मस्तक को नवाकर यह बोले—

इन्द्रामिन्द्रमाममणे ! यदि उ जायणि ज्ञान विमोहि-
 स्मात् सन्धरणं यंदामि ।

एग घाम्न को उड रेट के माध मे मान दार खानना चादि-
 वे । इम के दोहे इन्द्रमो काना पारिषे ।

इन्द्रायतिष्ठान ।

इन्द्रायतिष्ठानं यदिमात् भगवन् ! इन्द्रायतिष्ठानं यदि-
 यमामि ? इन्द्रां । इन्द्रामिन्द्रमाममिन्द्रं, इन्द्रायतिष्ठानं,
 विराट्पणं गमतागमणे पातवमणे धीपणमणे हरिय-
 वमणे प्रोसा उभिग पणम दग मदी मण्डामनाणा
 मंमणे, जे मे जाया विराट्पण, एगिदिपा, वेइदिपा, तेइ-
 दिपा, अइदिदिपा, पंविदिपा, अभिदिपा, पलिपा, लेमिपा,
 मंपाइपा, मंघदिपा, परियाविपा, विस्तामिपा, उदविपा,
 अणाओ टाण मंमामिपा, जाविपाओ पणोविपा तास
 मिच्छा मि दुष्टं ।

मम्म उत्तरा ।

मम्म उत्तराकरणेणं, पायन्निस्तकरणेणं, विमोही-
 करणेणं, विमोहीकरणेणं, पायानं वम्मणं निग्घापणद्वाए,
 आमि पउममगं ।

असन्ध उममिण्णं ।

असन्ध उममिण्णं, नाममिण्णं, एममिण्णं,
 छीण्णं, जंमाइण्णं, उइण्णं, पायनिसुमंणं, भम-

हे प्रभो! चारित्र्यगुणप्राप्त्यर्थं तृतीयपदश्रिणां
ददामि ।

इस के पश्चात् साधिका को और यह बोले —

हे प्रभो! चतुर्गुणनिर्मोहार्थं स्वस्तिकं रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो! चारों गुणों का नाश करने के लिये मैं साधिका
बनाता हूँ ।

इस के पीछे तीन पुत्र (दिगन्तो) को और यह बोले—

हे प्रभो ! ज्ञान-दर्शन-चारित्र्यप्राप्त्यर्थं त्रिपुञ्जं
रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन और चारित्र्य की प्राप्ति के लिये मैं
तीन दिगम्बियों को बनाता हूँ ।

और एक दिगम्बी पीछे चतुर्गुणप्राप्ति के और यह बोले—

हे कल्लामिन्धो! मिदग्भानप्राप्त्यर्थमर्द्धचन्द्राकारं
करोमि । पुरुषमेकं च मिदुवस्थित्यर्थं करोमि ।

अर्थ - हे कलामिन्धो! मिदग्भानकी प्राप्ति के लिये मैं
चतुर्बुद्धिके समान चाँदा बनाता हूँ और एक दिगम्बी मिदग्भानस्थिति
के लिये बनाता हूँ ।

इसके पीछे अश्वत्थ की दाहिनी भुजा को मकर मण्डा होकर
मण्डलु होकर अश्वत्थ की बाईं भुजा को मकर मण्डा होकर दाहिनी
भुजा पर मकर मण्डा का कोमलपत्र को नवाकर यह बोले—

इच्छामि नमःसमगो ! संदिउ जावणिजात निमीहि-
 क्षाण मन्थणण संदामि ।

इस वाक्य दो उठ बैठ के साथ में गीत कर संभना चादि-
 वे । हम के देखे इतिहासो करना चाहिये ।

इरियावहियाण ।

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! इरियावहिणं पटि-
 कमामि ? इच्छं । इच्छामि पटिकमिउं, इरियावहियाण,
 विराहणाण ममत्तामरणे पाणकमणे पोटकमणे हरिण-
 कमणे ओसा उभिण पणग दग मही मक्काहामनाणा
 मंक्रमणे, जे मे जाया विराहिया, गुमिदिगा, बंइदिगा, सेइ-
 दिगा, चउरिदिगा, पंनिदिगा, अभिहगा, वसिया, लेमिया,
 मंभाइया, मंघहिया, परियाविया, रिलामिया, उइविया,
 ठाणाओ ठाणं मंकामिया, जावियाओ यपरोविया तास
 मिच्छा मि दुवटं ।

सम उत्तरी ।

सम उत्तरीकरणेणं, पापच्छिन्नकरणेणं, यिसाही-
 करणेणं, यिसच्छिन्नकरणेणं, पावाणं कम्मणं निग्घापणद्धाए,
 ठामि पाउमगं ।

असत्थ उमसिणं ।

असत्थ उमसिणं, नामसिणं, त्वासिणं,
 जीणं, जंभाइणं, उइणं, पापनिमग्गेणं, भम-

लिपं, पित्तमुच्छ्राण, सुहृमेहि अंगमंचालेहि, सुहृमे-
हि खेलसंचालेहि, सुहृमेहि दिट्टिमंचालेहि, एवमाह-
एहि आगारेहि अभग्गो अविराट्ठिओ हुउज मे काउ-
हसग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न
पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ब्राणेणं अप्पाणं बो-
सिरामि ॥

किर एक लोगस्स काउस्सग के, काउस्सग पारेके एक लोग-
स्स प्रगट फहे ।

लोगस्स उज्जाअगरे, धम्मनित्थपरे जिणे । अ-
रिहंते कित्तइस्सं, चउधीमं पि केवली ॥ १ ॥ उसभम-
जिअं च वंदे, संभवमभिगंदणं च सुमहं च । पउमप्प-
हं सुवामं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च
पुष्कदंतं, सीअलमिउज्जंसवासुपुज्जं च । विमलमणं
च जिणं, धम्मं मंतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंभुं अरं च मल्लिं
वंदे मुणिसुत्थयं नमिजिणं च । वंदामि रिहुनेमिं, पामं तह
वट्ठमाणां च ॥ ४ ॥ एधं मण अमिथुआ, विहुवरयमला
पहाणजरमरणा । चउधीमं पि जिणवरा, तिन्थवरा
मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिव वंदियमहिआ, जे ण लोगस्स
उत्तमा सिद्धा । आरज्जापाहिलाभं, ममाहिपरमुत्तमं
दिनु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलवरा, आइचेसु अहिपं पयासवरा ।
मागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिवंतु ॥ ७ ॥

जिणाणं जिजमग्गणं ॥ ६ ॥ ते यं चट्ठेण भिन्ना, ते
 यं भवमंनिष्णागणं यानि।मंगटं यं वट्ठमाणा, मत्ते
 तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावन्ति चेत्थत्थं उट्ठे अ अट्ठे अ तिरिगुल्लोणं प
 मत्थात्तं मात्तं धेत्तं इत्तं मत्तां मत्थं मत्तात्तं ॥ १ ॥

इत्थत्थमि म्ममाममणां वंदित्तं जायणिप्पाणं निर्मा
 तिप्पाणं मत्थण्णं वंदामि ।

भगवन्!— जावन्न केविमाह भगहेरुपमत्तावि-
 देहेयं। मत्थेसि तेमिं पणत्थो तिविहेण तिंदट्ठवि-
 पाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हन्तिमद्वाचार्योपाध्यायसर्वमाधुभ्यः ॥ २ ॥

चोर्वास भगवान् का स्तवन ।

ग्रह उर्दी में मद्द नमु वारि हाथ जोड के साम ।
 चोर्वास जिनेराज को मैं निम्न करुं परणाम ॥ १ ॥
 (हेक) १ कृपम २ अजित ३ मंभर ४ अभिनंदन अरु
 ५ सुमति महाराज । ६ पद्मअमुपारम ७ चंदाप्रभुजो से लग
 न लगी है आज ॥ २ ॥ प्र० ॥ ९ सुविधि १० शीतल
 ११ श्रेपांस सवाई दीजे मुक्ति नाथ । १२ वासुपूज्य जिन
 पारमा वारि १३ विमल १४ अनन्त क नाथ ॥ ३ ॥ प्र० ॥
 १५ धर्म १६ शान्ति अरु १७ कुन्धु जिनेश्वर १८ अरु
 १९ महिल महाराज । २० मुनिमुघत २१ नमि २२ नेमजी

जिणाणं जिअमणं ॥ ६ ॥ ते अ चार्त्ता मिद्धा, ।
अ भवमंनिज्जाणणं काले।मंपट् च वट्ठाणा, म
तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावन्ति चेद्भाटं उट्टं अ अट्टे अ निगिन्तोण प।
सव्याटं ताटं वंदे इह मंनो नन्ध मंनार्त् ॥ १ ॥

दृच्छामि गमाममगां वंदितं जायणिज्जाणं निर्मा
हिष्माणं मन्धणं वंदामि ।

भगवन!— जावन्न केवि साह्म भाहेग्गवमहावि-
देहे अ। मय्येमि तेमि पणभां निविहेण तिंदट्ठि-
याणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हन्मिद्राचार्योपाध्यायमर्वमाधुभ्यः ॥ २॥

चोर्धाम भगवान् का स्तवन ।

यह उठी मैं सदा नमं चारि हाथ जोट के साम ।
षोर्धाम्भे जिनराज को मैं निन्य करूं परणाम ॥ १ ॥

(टंक) १ ऋषभ २ अजित ३ मेभर ४ अभिनंदन अ
५ सुमति महाराज । ६ पद्म ७ सुपारम ८ चंदाप्रभुजी से ल
न लगी है आज्ञा ॥२॥ प्र० ॥ ९ सुविधि १० शान्त
११ श्रेष्ठाम सवाई दीजे मुक्ति नाथ । १२ वासुपूज्य जि
पारमा चारि १३ विमल १४ अनन्त क नाथ ॥ ३ ॥ प्र० ।
१५ धर्म १६ शान्ति अरु १७ कुन्भु जिनेश्वर १८ अ
१९ महिलं महाराज । २० मुनिसुवत २१ नमि २२ नेमन

आप न समाननिशान मकारनिशान मकारनिशान
 आप नानिपाननिशान आप निपाननिशान निपाननिशान (१)
 मकार निशान निशान निशान निशान निशान निशान
 नादि कायममम ॥ २ ॥

अथान्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न
 नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न
 ॥ ३ ॥ मृदुमिदि कायमम नैरि, मृदुमिदि नैरिमम
 निदि, मृदुमिदि निदिमममिदि ॥ ४ ॥ नमामिन्न
 आपानिदि, नमामिन्न नमामिन्न निदिमममिदि ॥ ५ ॥ कायमममिदि
 आप नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न
 आप नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न

इति नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न
 नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न नमामिन्न
 निदिमममिदि निदिमममिदि निदिमममिदि निदिमममिदि
 निदिमममिदि निदिमममिदि निदिमममिदि निदिमममिदि

नमामिन्न निदिमममिदि, नमामिन्न निदिमममिदि ॥ ६ ॥

आपानिन्न निदिमममिदि, आपानिन्न निदिमममिदि ॥

नमामिन्न निदिमममिदि, नमामिन्न निदिमममिदि ॥

मृदुमिदि निदिमममिदि, मृदुमिदि निदिमममिदि ॥

शुद्ध नमामिन्न निदिमममिदि, शुद्ध नमामिन्न निदिमममिदि ॥

इति प्रकार दर्शन का नमामिन्न निदिमममिदि निदिमममिदि

हमदी" को सोन राग बरु को मन्दिम से बाहर निकाल ।

तृतीय पाठ : ।

द्वयोक्त गीति से देवानन्दनविधि १३ पूर्ण कानक पात्र मुखन्दन विधि को करना चाहिये, अथाने गुम्फागात्र के सम्बन्ध में दे देकर नीचे लिखे वाक्य से ६३ बार जपाममम देना चाहिये ।

इच्छामि गमासमगां वंदितं जयणिज्जाणं निर्मा-
दिआणं मन्थणं वंदामि ॥ १ ॥

इस प्रकार गमासमग देख नीचे लिख पाठ को वाक्य का गु-
म्फागात्र से सुवसाना पूरना चाहिये

इच्छाकार भगवन्! सुह राह्य, सुह देवसिय सुय
तव शरीर निरापाय सुय संयमपात्रा निर्वाहं छो जा
ह्यामी म्यामा हो जा ॥ २ ॥

तृतीय पाठ का कह का भाग्य १३ का नम-इत १३, पीछे नीचे
केट का डहिने हाव का नीचे गच्छा नम हाव को मुखपलित
सुय या ललाहा नीचे लिखे ६३ पाठ को गोपना चाहिये

इच्छाकारेण मंदिमह भगवन्! अचुद्धिओऽग्नि
अभिभनर रोडवे स्वामेडं इच्छे स्वामेमि देवसियं, जं कि-
लि अपलित्यं परवन्तिअं भरो पाणे विण्णं वेत्ताववे

१ दिनके पाठ यत्र तक यह पाठ कहना चाहिये, किन्तु पाठ
यत्रने के पीछे "राह्यं" को जगह "देवसिय" जगह को धोखना
चाहिये ।

आण पूछणवत्तिआण सक्कारवत्तिआण सम्माणवत्ति
आण योहिलाभवत्तिआण निरुवसुग्गवत्तिआण ॥१॥
सद्धाण मेहाण चिहेण धारणाण अणुप्पेहाण बहुमाणो
ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥

अन्नत्थ ऊमसिण्णं नीमसिण्णं खासिण्णं छीणं
जंभाइण्णं उड्डुण्णं वायनिसुग्गेणं भमलीणं पित्तमुच्छं
ण ॥ १ ॥ सुहमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहमेहिं खेलमंच
लेहिं, सुहमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइणं
आगारेहिं, अभग्गो अविराट्ठिओ हृत्त मे काउस्सग्गो।
जाय अरिहेत्ताणं भगयंमाणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥
माय कायं ठाणेणं मोणेणं छायेणं अप्पाणं योमिरामि।

इस के पीछे काउस्सग्ग में दोनों हाथों को नीचे की ओर
रखे करके नेत्रों को बन्द करके तथा होठ और जीभ को नि
दिसाये यह विनियोग करना । काउस्सग्गवार के (पीछे दोनों हाथों
को बाँध कर यह बातें -

नमोऽर्हमिद्वानायांवाण्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ १ ॥

श्रीजगन्निनाथर्जा, साताकारक देव ।

मनमोहन म्यामी, अनुग्रह मूर्ति सेव ॥

मुझ गंग हूलमिया, बन्दूँ प्रणमूँ नाथ ।

नृद गमस्ति मार्ग, मैं जोड़ प्रभु के हाथ ॥२॥

इस दशावस्था में जो पीछे पश्य ग्यायू कर के -

स्मृती" को भीन सार कह कर मन्त्रों से बलि नार्थ ।

तृतीय पाठ : ।

द्वितीय गीति में देवयन्त्रनिधि की पुस्तक के एक पाठ पुरुषवन्दन विधि को करना चाहिये, अर्थात् पुरुषवन्दन के मन्त्र पढ़े हाकर नीचे मिले वाक्य से दो बार स्वयम्भुवम् इत्यादि चालिये ।

इच्छामि स्वयम्भुवम् संदिद्धं जायमिञ्चाण निर्मा-
दिञ्चाण मन्थमण्णं संदामि ॥ १ ॥

इस प्रकार स्वयम्भुवम् इत्यादि मन्त्र पढ़ने के बाद दो बार नीचे के पुस्तक से सुक्तमात्रा प्रणीत चालिये

इच्छाकार भगवन्! सुह गह्वर, सुह देवमिय सुग्य
नर शर्गर निरापाथ सुग्य मन्थमण्णाय निर्वाहो हा जी
शर्मा मन्त्रा मे जी ॥ २ ॥

तृतीय पाठ को कर कर मन्त्रों की मन्त्रों से बलि नार्थ ।
द्वितीय गीति में देवयन्त्रनिधि की पुस्तक के एक पाठ पुरुषवन्दन विधि को करना चाहिये, अर्थात् पुरुषवन्दन के मन्त्र पढ़े हाकर नीचे मिले वाक्य से दो बार स्वयम्भुवम् इत्यादि चालिये ।

इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! अन्नुद्भिर्भांद्भि
अन्भिन्नर रोहये स्वामेकं इच्छं स्वामेमि देवमिय, ज कि-
मि अपत्तिमं परपत्तिमं भजे पाणं विमणं देव्यायधे

१. दितके पाठ्य यज्ञे नर यज्ञ पाठ करना चाहिये, किन्तु वाह्य यज्ञने के पक्ष में "राह्य" को उगत देवमिय शब्दको ध्यान रखना चाहिये ।

आ० पृथग्वसिआ० सकाग्निसिआ० सम्मानवति-
 आ० पोहिताभवसिआ० त्रिमसमगवसिआ० ॥१॥
 सदा० मेदा० विदु० धारणा० अगुलेंदा० यदुमाना०
 ठामि काउममगं ॥ २ ॥

अन्नम्भ ऊममिणं नाममिणं गामिणं जेणं
 जंभाइणं उहुणं वाग्निसमगं भमर्त्ता० पित्तमुच्चा
 ० ॥ १ ॥ सुहृमेहि अगमं चालेहि, सुहृमेहि गेशमं
 लेहि, सुहृमेहि दिदिसं चालेहि ॥ २ ॥ एवमादि
 आगारेहि, अभग्गो अविगहिअो हृत्त मे काउमगो॥
 जाय अरिहेताणं भगधंणं नमुक्काणं न पारेमि ॥३॥
 ताव कायं ठाणेणं मोणेणं प्रायेणं अप्पाणं योमिगमि॥

इस के पीछे काउममग में दाना हाथों को नीचे की ओर
 लम्बे करके नेत्रों को बन्द करके तथा होठ और जीभ को तिर
 दिलाये यह चिन्तन करना । काउममग पर के (पीछे दोनों हाथों
 को जोड़ कर रहेंगे -

नमोऽर्हसिद्वाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ १ ॥

श्रीशान्तिनाथजी, साताकारक देव ।

मनमोहन स्वामी, अनुपम मूर्ति सेव ॥

सुध राम हृलसिया, वन्दूँ प्रणमूँ नाथ

शुद्ध समकित माँगूँ, मैं जोड़ प्रभु के हाथ ॥२॥

इस प्रकार दर्शन कर तथा पीछे पञ्चकश्याय कर के श्रद्धा

आलाये मंलाये उचासणे समासणे अंतरभासाण उ
 मिभासाण जं किंचि मज्झ विण्ण परिहीणं, सुहमे
 पापरं वा तुम्हे जाणह, अहं न जाणामि, तस्म मिच्छा
 बुद्धं ॥ ३ ॥

उक्त पाठ को बोल चुकने के पीछे नीचे लिखे हुए पाठ
 बोल कर भाद्रप मासी के लिये निवेदन करना चाहिये—

इन्द्राक्षरेण संदिमह भगवन्! भान्तवर्गा रं लाभ दीप्तो

चतुर्थपाठ : ।

पूर्वांक गुह्यन्दन के पीछे सामाधिक करना चाहिये, सामा
 काम के मध्य पहिले श्रीगुरुजी के सामने (यदि श्रीगुरुजी उपस्थित
 हो तो स्वामीमायाजी के सामने) दाहिना हाथ कर के नीचे लि
 खे नमस्कारनाम्य को जान बार गुह्यता चाहिये—

गमो अरिहताणं ॥ १ ॥ गमो सिद्धाणं ॥ २ ॥
 गमो आगमिणं ॥ ३ ॥ गमो उयदभाषाणं ॥ ४ ॥
 गमो लोण मन्त्रमाहणं ॥ ५ ॥ गमो पंचकमुकारं ॥ ६ ॥
 मन्त्राव्ययनामणं ॥ ७ ॥ मंगलात्तं च मन्त्रेभि ॥ ८ ॥
 वरमं हवतु मंगलं ॥ ९ ॥

इस के पीछे श्रीगुरुजी के सामने स्वामीमायाजी के सामने
 दाहिने हाथ कर के नीचे लिखे नमस्कार नाम्य को जान बार गुह्यता
 चाहिये—

१-गुरु, २-सिद्ध, ३-आगम, ४-उयद, ५-लोक, ६-पंचक, ७-मन्त्राव्यय, ८-मन्त्रेभि, ९-मंगल

४-मरुतिमरुतणाशुदि, ५ प्ररुपणाशुदि ७ द्वांनशु
दि, ८-मरुति पांच आशुदि पाठे पला १०
अनुमोदै, ११-मनांगुमि । १२-मननगुमि । १३-कावगमि
आदरे ॥

इस के पीछे जो अर्थ है वह यह है कि
क. मासने यह दृष्टि है कि जो न केवल
उने आदि

इच्छामि मयाममणो वदिउ आरणिआण निमा
दिआण मयणण पेटामि ॥ १ ॥

इस के पीछे जो अर्थ है वह यह है कि
जो निमा दृष्टि है कि जो न केवल

इच्छाकारेण मंडिमह भगवन् अन्नुद्विआमि अःम-
मरराहणे मयमेउ । इच्छे । मयामि देवमि । उ किनि
अपत्तिं परपत्तिं भन्ते पाणे विण्ण वेभावण आलाये
मंदाये उचामणे मयामणे अन्त मयाम उचरि मयाम
जे किनि मउझ विण्ण परिणीण सुहम वा वापर वा
कुम्भे जाणह, अहं म जाणामि नम्म मिउडामि वृक्षहे ॥ २ ॥

अन पाठ का अर्थ है कि जो मयामि देव
देव इस प्रकार बोले

इच्छाकारेण मंडिमह भगवन् ' मयामि देव सुहप-
त्ति पटिलेहं ? ॥ ३ ॥

इस के पीछे इन्हें ११११ दुसरे चरणों में
 मुद्रादि का पटिलेदमा करना चाहिये। इस समय जो न हो सके
 मुद्रादि पटिलेदमा तथा बहुत पटिलेदमा के बोलों को भी
 मन में गिनना करना चाहिये, इसमें नाचविना मुद्रादि के न
 बोलों को करना चाहिये।

मृग्य अभिर्माणो मरुहं ॥६॥ मङ्गलान्यमोहनीयः
 मिथ्यान्यमोहनीय ॥ ३ ॥ मिथ्रमोहनीय परिहर्ह ॥४
 कामराग ॥५॥ स्नेहगम ॥६॥ दृष्टिगम परिहर्ह ॥७॥

इस के पीछे सायं प्रायः का पटिलेदमा के समय नीचे लिखे
 हुए नव बोलों को मन में गोलना चाहिये -

सुगुरु-सुदेव सुधर्म आदर्ह ॥१॥ २॥ ३॥ कुगुरु कुदेव
 कुधर्म परिहर्ह ॥४॥ ५॥ ६॥ ज्ञान-दर्शन नाग्रि आदर्ह
 ॥७॥ ८॥ ९॥

इस के पीछे सायं प्रायः का पटिलेदमा करना चाहिये, नव
 नीचे लिखे हुए नव बोलों को वासना चाहिये—

ज्ञानविराधना, दर्शनविराधना, चारित्रविगधना
 परिहर्ह ॥१॥ २॥ ३॥

मनागुप्ति धचनगुप्ति कायगुप्ति आदर्ह ॥४॥ ५॥ ६॥

मनोदण्ड धचनदण्ड काय दण्ड परिहर्ह ॥७॥ ८॥ ९॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए अगपटिलेदमा के बोलों को वासना चाहिये—

कृष्णलेण्या नीललेण्या, कापोतलेण्या, ये तीनों

ममके परिहर्ते । फट्टिगारय, रमगारय, मानागारय,
ये तीनों मुझे परिहर्ते । मायाजाल्य, निपाणजाल्य, मि-
च्छादमणजाल्य, ये तीनों हृदये परिहर्ते ।

क्रोध, मोह, ये दोनों दाहिने गम्मे परिहर्ते ।

माया, मान, ये दोनों बाएं खम्मे परिहर्ते ।

हाम्य रनि अरनि ये तीनों बाएं हाथे परिहर्ते ।

भय टांक दृगंज्झा ये तीनों दाहिने हाथे परिहर्ते ।

पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेजकाय, ये तीनों बाएं पादे
परिहर्ते । पाउकाय, वनस्पतिकाय, व्रसकाय, ये तीनों
दाहिने पादे परिहर्ते ।

ऊपर परी दृष्टे निम्न से महत्त्वपूर्ण को परिहरेन्द्रा ॥ ३४ ॥
ममके देवा-

इच्छाकारेण मंदिसिह भगवन्! सामागिरु मंदिसा-
हं?, इच्छं ।

इस व. ३४ में वरकर नि गन्तव्य देवा —

इच्छाकारेण मंदिसिह भगवन्! सामागिरु आडे, इच्छं ॥
एक नरकग गुणना । फीले

इच्छाकारेण मंदिसिह भगवन्! पम्पायकरी सामा-
गिरिदंतक उचरायो जी । तहत्त ।

इस व. ३५ में निम्न से महत्त्वपूर्ण मृत वातोंनका उच-
रायो वातोंन चाहिये—

इस के पीछे “उन्मत्त” कहकर दुसरा समय मनाया ।
 मुद्रपत्र की पहिलेदशा करना चाहिये, उस समय नीचे किं
 मुद्रपत्र पहिलेदशा तथा चन्द्र पहिलेदशा के बोलों का गीत
 मन में चिन्तन करना चाहिये, प्रथम नीचे लिखे मुद्रपत्र के
 बोलों को कहना चाहिये—

मृग्य अर्थ साँचो मद्रहं ॥१॥ मद्रगन्धमोहनीय
 मिथ्यात्वमोहनीय ॥ ३ ॥ मिथ्रमोहनीय परिहर्हं ।
 कामराग ॥५॥ स्नेहराग ॥६॥ दृष्टिराग परिहर्हं ॥७॥

इस के पीछे बायें हाथ की पहिलेदशा के समय नीचे ।
 हुए नव बोलों को मन में बोलना चाहिये ---

सुगुरु-सुदेव सुधर्म आदर्हं ॥१॥२॥३॥ कुगुरु व
 कुधर्म परिहर्हं ॥४॥५॥६॥ ज्ञान-दर्शन चारित्र्य अ
 ॥७॥८॥९॥

इस के पीछे दाहिने हाथ की पहिलेदशा करना चाहिये,
 नीचे लिखे हुए नव बोलों को बोलना चाहिये---

ज्ञानविराधना, दर्शनविराधना, चारित्र्यविरा
 परिहर्हं ॥१॥२॥३॥

मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति आदर्हं ॥४॥५॥६॥

मनोदण्ड वचनदण्ड काय दण्ड परिहर्हं ॥७॥८॥९॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए अंगपहिलेदशा के बोलों को बोलना चाहिये

कृष्णलेश्या नीललेश्या, कापोतलेश्या, ये

सुहृमेहि दिहिमंचालेहि न्यमाइणहि आगारेहि अभग्गो
अयिराहिओ हज्ज मे काउत्सग्गो जाय अरिहंताणे भगवं-
साणे, नमुक्कारेणे न पारेमि ताव कायं टाणेणं माणेणं
आपेणे अप्पाणे वामिरामि

यदा एव चारु 'नरका' 'अभय' 'लोक' 'काउत्सग्ग' काउत्सग्ग
काके 'तमो अरिहंतारो' यदाइ काउत्सग्ग वं 'पान' चाहिये
पीछे प्रसन्नप मे नाथे निरे एण 'लोका' इत्यादि १३ वं काउत्स
चाहिणं—

लोकस्स उज्जाअगरे, भम्मनिन्धये जितो । अरिहंते
जितइस्सं, यउवांसं पि वेवली ॥१॥ उत्तममज्जिअं च यंदं
संभवमभिजण्डणं च सुमत्तं च । यउमण्ह सुपांसं,
जिगां च यंदण्हं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुत्तइंस, रीअल
मिउजंस पात्तुपुत्तं च । विमलमणमं च जिगां, भम्मं संमि
च वंदामि ॥३॥ कुंभुअरं च महिं, वंदे सुणितुत्तयं नमि-
ज्जिणं च । यदामि रिद्धंमि, पामं महं वट्ठमाणं च ॥४॥
अरं मण अमिभुआ, विहृयरयमना वरुणजरमणा ।
यउवांसं पि जिणवरा, निन्धयरा मे पमोयंतु ॥५॥ किन्तिप
यदिय महिया, जे न लोकस्स उत्तमा निट्ठा । आरय-वं-
हिलांमं ममाहियसुत्तमं दिनु ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मलपरा
आहंसेसु पदियं पणामपरा । मागरपरंभीरा, मिट्ठा

सिद्धिं मय दिसंतु ॥ ७ ॥

इस के पश्चात् एक एक समासमय देकर नीचे सिले हुए पाठों को बोलना चाहिये—

१-इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! वेसणे संदिमा-
उं? इच्छं ।

२- इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! वेसणे ठाउँ
इच्छं ।

३- इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सज्जाय संदि-
माउँ? इच्छं ।

४- इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सज्जाय कहैं ।

हि। पी.पी। म. तमस्य दह्य मादयान्नकार मन्त्र को बोलें।

॥ इति प्रमाण सामादिकविधि मूर्तम् ॥

मन्त्र पढ़ कर पुनः निनिः की होना है जिसमें ज्ञान ध्यान करना।

इसके पश्चात् सामादिक को पढ़ना चाहिये उसकी विनियम है—

हि। म. तमस्य दह्य मादयान्न को धीमे धीमे बोलनी चाहिये, हि।

दह्य मादयान्न दह्य नीचे गिने पाठ को बोलें —

इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामादिक वाहैं, यथाशक्ति

१४ के पाठ हि। म. तमस्य दह्य नीचे गिने पाठ को बोलें—

इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामादिक वाहैं, यथाशक्ति
महर्षि ।

देका नीचे निचे पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छासारेण मंदिसह भगवन्! चैत्यवन्दन कर्त्तुं,
इच्छं ।

इस के पश्चात् नीचे निचे दृष्ट मंत्रों को क्रमशः बोले—

जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेतुंजि उज्ज-
नि पहु नेमिजिण जयउ धार मधउरि-मंडण ॥ १ ॥
भरुअच्छय मुणिसुअय, मुहरि पाम दुह-दुरिय-खंडण।
अपरविदेहि जे नित्थपरा, चिहंदिमि विदिसि जं केवि।
तीयाणागय-संपड य वंदं जिण सुअेवि ॥ २॥

कम्मभूमीहिं कम्मभूमाहिं पटम-संघयणि, उफोसय
सत्तरिसय जिणवराण विहरंन लब्भइ । नव-कोडीहिं
केयलीण, कोडी- सहस्स नव माहु-संपड । संपड जिणवर
धासमुणि, विहुंकोडीहिं वग्गण । समणह कोडीसहस्स
दुअ, धुणिउजइ निअविहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा,
लक्खला लप्पअ अट्ट कोडीअं । चउमयहापामीया, तिहिंके
चेइण यंइ ॥ २॥ यंइ नवकोटिमयं, पणवीसे कोडी लक्ख
सेयग्रा । अट्टाथीम महमा, अउमय अट्टामिया प-
डिमा ॥ ३ ॥

जं किंचि नामानिअं, मग्गे पायान्ति माणुसे लोण ।
जाइं जिणपिपाइं, ताइं मअ्याइं वदामि ॥ ४ ॥

नमोऽधु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थ-
 पराणं संपंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिमसीहाणं पुरि-
 रिसवरपुंढरीआणं पुरिसवरगेपट्ठनीणं लोमुत्तमाणं लोग-
 नाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगवज्जोअमराणं
 अभयदयाणं अयस्सुदयाणं मग्गदयाणं सरग्गदयाणं यो-
 हिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्म-
 सारहीणं धम्मवरचाउरंमच्चवट्ठीणं अण्णहिहयवरचा-
 णदेसण-घराणं विअट्ठ उमाणं जिणाणं जावयाणं निस्साणं
 नारयाणं बुद्धाणं योहयाणं मुत्ताणं मोअयाणं सव्वन्नूणं
 सव्वदरिसीणं मियमयलमरुअमणं ममस्सयमव्यापाहम
 पुणरावित्तिसिद्धिगइनामपेये ठाणं संवत्ताणं नमो जिणा-
 णं जियभयाणं ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अभयस्मं-
 ति जागण काले । संपड अ दट्ठमाणा, मय्ये निविहेण
 यन्दामि ॥ १ ॥

(जावनि चेइआहं)

जावनि चेइआहं, उड्डे अ अहे अ निरियत्तो? अ ।
 मय्याहं ताहं धंदे, इह मत्तो नत्थ मत्ताहं ॥ १ ॥

(जावनि केवि साह)

जावनि केवि साह, भरहेरवयमयाविदेहे अ । स-
 व्येमि तेसि पय्मा, निविहेण तिदंठविरयाणं ॥ १ ॥

(परमेष्ठि नमस्कार)

देकर नीचे लिखे पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवन्दनं कर्तुं,
इच्छे।

इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए मंत्रों को क्रमशः बोले—

जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेनुजि उज्ज-
नि पहु नेमिजिण जयउ धार सचउरि-मंडण ॥ १ ॥
भरुअरुछव मुणिसुब्बय, मुहरि पास दुह-दुरिय-खंडण।
अवरविदेहिं जे नित्थपरा, चिट्ठदिसि विदिसि जं केवि।
तीयाण्णागय-संपइ य वंदु जिण सत्थेवि ॥ २ ॥

कम्मभूमीहिं कम्मभूमीहिं पढम-संघयणि, उक्कोसप
सत्तरिसप जिणवराण विहरन लब्भइ । नव-कोडीहिं
केवल्लण, कोडी- सहस्म नय साहु-संपड । संपइ जिणवर
धीसमुणि, विट्ठुकोडीहिं वग्गण । समणह कोडीसहस्म
दुअ, धुणिउज्जइ निघविहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवड सहस्सा,
लक्खणा द्दप्पन्न अट्ठ कोडीअं ॥ चउमयझापासीया, तिर्लुक्क
चेडण यदे ॥ २ ॥ वंदे नवकोडिसयं, पणवीसं कोडी लक्ख
तेयन्ना । अट्ठावीस महत्तमा, चउमय अट्ठासिया प-
ट्टिमा ॥ ३ ॥

जं किंनि नामानित्थं, मग्गे पायालि मारुसे लीण ।
जाइं जिणपिथाइं, ताइं सत्थाइं वंदामि ॥ ४ ॥

नमोऽग्नौ चोऽग्निं नमो भगवन्माते आइतराणं निग-
 यमाणं सयं संबुद्धाणं पुरिभुजमाणं पुरिसर्भीहाणं पुरि-
 रिम्वरपुंरसायाणं पुरिम्वरमेषान्धीणं त्रोगुजमाणं लोम-
 वाहाणं लोमतिष्ठाणं लोमपट्टेयाणं लोमवज्जोष्यमाणं
 अभयदयाणं अश्वबुद्धाणं मन्मदयाणं मरुतदयाणं धो-
 तिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेस्सिगाणं धम्मनायगाणं धम्म-
 मारुताणं धम्मवरणादं नचउद्धाणं अत्तरहितम्वर-
 णदं गल-पराणं विअहत्त इमाणं जिणाणं जाययाणं निस्साणं
 मारयाणं बुद्धाणं धोदयाणं मुत्ताणं मोक्षराणं मज्जन-
 म-इदं निस्संसे विवमवज्जमण्यमलं ममइत्थमवज्जावाहम
 पुणराविमिमिद्धिगट्टनामपेयं टाणं संसत्ताणं नमो जिणा-
 णं जिपभयाणं ॥ जे अ अईआ मिद्धा, जे अ भयिस्सं-
 नि जागाव काले । संपट अ दहमाणा, मज्जे निविहेण
 पन्दामि ॥ १ ॥

(जायंमि चेइआई)

जायंमि चेइआई, उट्टे अ अट्टे अ निरियत्तो? अ ।
 मज्जाटं नाटं धेदे, इह संसे मज्ज संनाई ॥१॥

(जायंम येवि म्माट्ट)

जायंम येवि म्माट्ट, भरहेत्थममराविदेहे अ । स-
 य्थेमि मेमि पणआं, निविहेण निदेहविग्घाणं ॥१॥

(परमेष्ठि नमस्कार)

इच्छं ।

कुसुमिण-दुसुमिण-राई- पायच्छिन्नविमोहणत्थं
करेमि काउत्तसग्गं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए “असन्ध उममिणं” इत्यादि
पाठ को ध्यान से धारिये—

असन्ध उममिणं भीममिणं खामिणं ह्रीणं
जंभाइणं उह् एणं दायनिरुग्गं भमलिणं पित्तमु-
च्छाणं । सुहमेहि अंगमंचालेहि सुहमेहि रोत्तमंचाले-
हि सुहमेहि दिट्ठि वंचालेहि वयमट्ठेहि आगारेहि अ-
भग्गं अरिहंसाणि सुज्ज मे काउत्तसग्गं जाय अरिहंसाणं
अमरंसाणं न सुदारेणं न पारेमि ताव कायं ताणेणं मो-
येणं भाणेणं अप्पाणं वामिसमि ॥१॥

इसके पीछे सोलह अक्षर मन्त्र वा चिन्तन करने हुए पाठ
+ समाग करना चाहिये, इसके द-वा नू “सुमो अरिहंसाण” इस पाठ
को बह बार काउत्तसग्ग को पढ़ कर नीचे लिखे हुए “सोगस्स”
इत्यादि पाठको ध्यान से धारिये—

सोगस्स उउमोअगरे, धम्ममित्थपरे जित्ते । अरि-
हंसे कित्तइस्सं, चउत्थानं पि केवली ॥१॥ उमभमजिअं
अ वंदे, मंभरमभिगदणं अ सुमई अ । पउमप्पहं सुपासं,
जिणं अ वंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहि ॥ पुप्फदंमं, सी-
अल सिउजंस्स पासुपुजंस्स अ । विमलमणंमं अ जिणं, ध-

नमोऽर्हस्मिद्धापागोपागमर्मापुष्पाः ।

(उपमार्गमन्त्र)

उपमार्गमं वामं, वामं वंदामि कम्मचममुहं । वि-
सद्वरविमनिधामं, मंगलद्वारागम्यामं ॥१॥ विमहर
कुलिगमंनं, कंठे पारेड जां मया मणुसां । नममार्गो-
गमारी-द्वजरा जंति उपमामं ॥२॥ चिट्ठ उ दूरे मंनो,
तुल्लम पणामोयि सहकल्लो होइ । नरनिगिणमुयि जीया,
पावंति न दुक्खदोहरां ॥३॥ नृत्त मध्यमे लद्वे, विना-
मणि कण्ठपायवद्वह्नि । पावंति अयिग्गेणं, जीया अ-
परामरं ठाणं ॥४॥ इय मंशुआं महाममं, भस्तिग्गा-
निग्गमरेण हियण्ण । ता देव! दिज्ज पोट्ठिं, भये भये
पास जिणनन्द ॥५॥

(जय धीधराय)

जय धीधराय ! जगद्गुरु! होउ ममं तुह पभायओ
भववं । भवनिध्वेओ मग्गाणुमारिण इट्ठफलसिद्धा ॥१॥
लोगविरुद्धाओ, गुरुजणपूजापरत्थकरणं च । सुद-
गुरुजोगो मध्ययणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥

इस प्रकार चैत्यद्वन्द्वन करने के पाँचे त्रयाममण देकर नीचे
लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! कुसुमिण-दुसु-
मिण-राई-पायच्छित्त-विसोद्दणत्थं काउत्सग्ग करूँ ?

इच्छं ।

कुसुमिण-इसुमिण-राई- पावच्छित्तविमोहणत्थं
करेमि काउरसगं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए, "मन्त्रः उन्मत्तः" इत्यादि
पाठ को ध्यानपूर्वक चढ़िये—

असमिणं उन्मत्तमिणं खामिणं ह्रीं गुणं
जैमाह्वयं उह्वयं वायविमृगं भूमिणं विमृ-
गं । सुहृमेति ध्वंगमंचालेति सुहृमेति रेलमंचाले-
ति सुहृमेति दिट्ठि वंचालेति एवमाहुति आगारेति अ-
भगं अविरोहिणो ह्यस्य मे काउरसगं जाय अविरोहिणं
भगवंतां नमुयारेणं न पारेमि ताय कायं आणेणं मा-
णेणं आणेणं अप्पणं वासिमि ॥१॥

इसके पीछे सोलह नवकार मन्त्र का चिन्तन करने हुए पाठ
भस्म करना चाहिये, इसके दश नू "उन्मत्तः उन्मत्तः" इस पाठ
को बहुत बार काउरसग को पाठ कर नीचे लिखे हुए, "लोगस्स"
इत्यादि पाठको ध्यानपूर्वक चढ़िये—

लोगस्स उज्जो अगरे, धम्ममित्थरे जिणे । अरि-
हंसे कित्तइरसं, चउर्यात्तेपि वेयली ॥१॥ उसभमजिअं
च वंदे, संभममभिगंदणं च सुमडं च । पउमप्यहं सुवासं,
जिणे च चंदप्यहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंमं, सी-
अल्ल सिउजं स पासुपुज्जे च । पिमलमणं च जिणं, ध-

ममोदरिणि दायागोपात्पापमर्षमाधुनः ।

(११मोद१११३)

उत्पन्नमदरे पापं, पापं नरादि कर्मपापमुक्तं । वि-
मरनिमन्त्रितामी, संगदृष्ट्यागमासम् ॥१॥ विमर-
कुम्भितमने, कटे पादं ता मर मनुजं । मम मरमो-
ममादि-दृष्टता जेति उत्पन्नम् ॥२॥ निद्रा दरे ममो,
मुक्ता यमांमनि पदुपल्लो होइ । नमनिमिगुविज्ञाया,
पापंति न कृष्णदोहमं । ३॥ मृद मममे मृद, विम-
मनि कल्परागवःमदिग । पापनि अविममेग, जीया अ-
पाममं दामं ॥४॥ इय मंगुमा मद्रागनः, अनिद्रम-
निद्रमरेग विमपुज । मा देव! दिज बादि, नो भवे
पाम जिगमन्द ॥५॥

(जय शीषगाय)

जय शीषगाय ! जगगुरु! होउ ममे तुह वमायमो
भपवं । भयनिच्येओ मगागुमागिग इद्रकनमिर्द्धा ॥१॥
लोगविरुद्धाओ, गुरुजगगुमापान्थकरणं न । सुद-
गुरुजोगो मध्यगमेवगा आभवमम्वेदा ॥२॥

इन प्रकार चित्पान्दन करने के लिये ममामङ्ग देकर नीचे
लिखे हुए पाठ को ध्यान साधिये—

इच्छाकारेण मंदिमह भगवन् ! कुसुमिग-दुसु-
मिण-राई-पापच्छित्त-विमोहणात्यं काउस्मग फई ?

इच्छं ।

कुसुमिण-सुसुमिण-राई- पावनिष्ठसविमोहणत्वं
करेमि काउत्सगं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए "बसन्त उन्मेषः" इत्यादि
पाठ को धोखना चाहिये --

अस्य उन्मेषः नीममिणं त्वामिणं स्त्रीणं
जंभाहणं उद्-एणं वापनिष्ठसगं भूमलिणं विममु-
च्छाण । सुहृमेहि भंगमंचालेहि सुहृमेहि गेहमंचाल-
हि सुहृमेहि दिट्ठि वंचालेहि गयमाहणहि आगारेहि अ-
भगं अचिरादिको हृष्ट मे काउत्सगं जाय अहिहणाणं
भगवन्नाणं न सुधारणं न पारेमि माय काये ठाणेणं मो-
णेणं आणेणं अप्पाणं धोमिगमि ॥१॥

इसके पीछे सोलह नवकाय मन्त्र ३। चिन्तन के त ह ४। ३
स्वाग काना चाहिये, इसके ६। १५ 'सुभा कविन्तन' इस १३५
को यह का काउत्सग को पण पर नीचे लिखे हुए 'लोकात्म'
इत्यादि पाठको धोखना चाहिये-

लोकस्य उज्जोत्तमरे, भूमनिष्ठस्य जिते । अरि-
हंते कित्तइसं, चउधासपि केयला ॥१॥ उसभमजिष्णं
च वंदे, संभरमभिगंदणं च सुमई च । पउमप्पहं सुवासं,
जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहि च पुप्फदंसं, सी-
अल सिज्जंस पासुपुज्जं च । विमलमणं च जिणं, ध-

५. संजरेससि वि राइय-दुचितिय-दुम्भासिय-दुषिदिय,
इच्छं तरस मिच्छा मि दुफटं ॥ १ ॥

इस के पीछे दूरी लिखा हुआ “अमोत्यु जे” का पठ बोलना चाहिये। तदनन्ता छंदे होकर नीचे लिखा हुआ “करेमि भंते” का पठ बोलना चाहिये—

करेमि भंते! सामाइयं सायजं जोगं दयकलामि
जाय नियमं पज्जुवासामि दुयिहं सिविहेणं मणेगं वापा-
ण काएणं न करेमि न करयेमि तरस भन्ते! परिक्कमामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पश्चात् नीचे लिखा हुआ “इच्छामि ठ मि” का पठ बोलना चाहिये—

इच्छामि ठामि काइसंगं जो मे राइओ अइआरो
कओ पाइओ पाइओ माणसिओ उरसुओ उम्मगो
अरओ अकरणिओ दुज्जमाओ दुयिनिनिओ अणापा-
रो अणिट्ठियओ असायगपाइओ नाणे तहं दंसणे च-
रिसापरिते सुण सामाइण निणं सुओणं चउणं कला-
पाणं वंददहमणुज्जयणं निणं सुवज्जयणं चउणं सि-
क्खतापपाणं पारसविहस सायगपज्जस जं खंदिपे जं
विराहिवं तरस मिच्छा मि दुफटं ॥ १ ॥

इसके पश्चात् नीचे लिखा हुआ “एतम उरणी” का पठ बोलना चाहिये—

मं मेति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंभं अं च मद्भिः, यैः मुनि
 सुखं नमिजिणं च । वंदामि गिद्धनेमिं, तामं तद् यद्
 माणं च ॥ ४ ॥ एवं सग अमिभुया, विहगगम
 पर्हाणजममगा । अर्धमं वि जिहमगा, मिभगगा मे प
 मीयंतु ॥ ५ ॥ किनिग-यंदिय-महिगा, जे एलंगम्म उम
 मा मिद्धा । आरगयोहिन्नाम ममादियमुत्तमं दि
 ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्ममगा, आरगेसु अदियं पयास
 रा । सागरवरगंभारा, मिद्धा मिद्धि मम दिमंतु ॥ ७ ॥

इसके पीछे पट्टिमणू के ग्रामों ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 वे, उम की विधि यह है कि—

१- प्रथम खमामण देकर "आरगयोहिन्नाम" कहकर वन्दन
 करना चाहिये ।

२- दूसरा खमामण देकर "आरगयोहिन्नाम" कहकर
 वन्दन करना चाहिये ।

३- तीसरा खमामण देकर "जद्धन्नुगमभान वत्तमान भद्र
 श्रीद्वयर्जी" का नाम लेकर वन्दन करना चाहिये ।

४- चौथा खमामण देकर सर्वमाधुओ को वन्दन करना चाहिये ।

इस प्रकार चार खमामण देकर पट्टिमणू को ठाकरगोरे
 हन- आसन से बैठकर मस्तक को नमाकर दोनों हाथों से मुंहपत्ती को
 मुक्षपर देकर नीचे लिले हुए "मज्जिमावि" इत्यादि वाक्य बो
 लना चाहिये—

५ "सुखं संवि राक्ष-दुचिनिष-दुष्मासिष दुचिद्विष,
इच्छं तस्स मिच्छा मि दुष्कटं ॥ १ ॥

इस के पीछे दूरे लिखा हुआ "भोन्धु जं" पाठ बोलना चाहिये। तदनन्तर सके दोहर नीचे लिखा हुआ "वंमि भवे" वा पठ बोलना चाहिये—

करेमि भवे। सामाहयं सायज्जं जोगं पघरुत्थामि
जाय निगमं पउजुवास्सामि दुचिटं निविहेणं मणेगं थापा-
ए कापणं न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते! परिक्कमामि
निदामि गरिहामि अण्णाणं वामिसामि ॥ १ ॥

इसके पश्चात् नीचे लिखा हुआ "इच्छामि ठ मि व" पाठ बोलना चाहिये—

इच्छामि ठामि काइस्समं जों मे राइओ अइय्थारां
कमों काइओ पाइओ माणसिओ उस्सुनो उम्मगो
अकप्पो अकरणिओ दुज्झाओ दुचिचिनिचिओ अणापा-
रो अणिद्वियथो असावगपाउगो नाणे तट दसणे च-
रित्ताचरित्ते सुए सामाहए मिण्हं गुर्माणं चउण्हं कसा-
पाणं पंदरुहमगुज्जदाखं तिण्हं गुणव्यपाणं चउण्हं सि-
फलायपाणं पारसविट्ठस्स सावगभरस्स अ एवंदिपं अ
विरादिवं तस्स मिच्छा मि दुष्कटं ॥ १ ॥

इसके पश्चात् नीचे लिखा हुआ "लस उलो" वा पठ बोलना चाहिये—

दुक्खरवरदीवहे, धापरुंदे अ जंजूदीये अ । भ-
 रहेरधयबिरेहे, धम्माहगरे नमंस्सामि ॥१॥ तमतिमिर-
 पटलविद्धमणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स । सीमाधरस्स
 बरे, पण्कोटिपमोहजालस्स ॥२॥ अ.ईजरामरणसोगप-
 णासणस्स, कल्लाणपुण्ड्रलघिसालसुहायहस्स । को दे-
 वदाणवनरिंदगणविग्गस्स, धम्मस्स मारमुपलब्ध करे
 पमार्य ॥३॥ सिद्धे भो पयओ यमो जिग्गमणं मंदी स-
 पा संजमे, देवंनागसुवक्किअरगणसब्भूअभायणिप ।
 लोणो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेसुअमपासुरं । धम्मो
 वड्डुअ सासओ विजयओ धम्मनुत्तरं वड्डुअ ॥४॥ सुअ-
 स्स भगवओ करेमि काउत्सगं ।

इस के पीछे पूर्व लिखे हुए “वंश्यविमार” इत्यादि पाठ
 को तथा “अवाः ऊमसिरयं” इत्यादि पूर्ण पाठ को जोड़ कर भाउ
 मन्त्र का काउत्सग करना चाहिये ।

काउत्सग में आठगुना बार प्रहर को बिल्लावा चाहिये, जो
 घाते आसोपणाविधि में लिखी जावेगी, इस के पीछे नीचे लिखे हुए
 “सिद्धायं सुद्धायं” इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

सिद्धायं सुद्धायं पारमयाणं परंवरमायाणं । लोअ-
 ग्गामुयमायाणं, नमो सपासय्यसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण
 वि देवो, अं देवा पंजली नमंसंति । नं देवरेवमहिअं,
 सिरसा बरे भदावीरं ॥ २ ॥ इको विअनुकारो, जिणवर

तस्य उत्तरीकरणेण पायच्छिद्रसकरणेण विसोदीकर-
णेण विसद्वीकरणेण पायाणं कम्पारणं त्रिग्यापणद्वार-
ठामि काउत्सग ॥१॥

इसके पीछे पूर्व लिखा हुआ “मन्त्रत्थ उमसिरयं” का इ-
पाठ बोलना चाहिये ।

इसके पीछे चरित्रशुद्धि के निमित्त चार नवकारमन्त्र प्रत्येक
पूर्व लिखे हुए एक “लंगरन” का काउत्सग करके उनसे चार नव-
कार दशमशुद्धि के लिये पत्ररूपमें पूर्व लिखे हुए “लोगस्त” इत्यादि
दि पाठ को बोलना चाहिये ।

इसके पीछे नीचे लिखा हुआ पाठको बोलना चाहिये—

सन्वडोए अरिहतचेइआणं करेमि काउत्सग ॥१॥
बंदगवत्तिआए पूजणइ.तेआए सद्धारवत्तिआए सम्मा-
णवत्तिआए मोहिलावत्तिआए निरुवसगवत्तिआए
सद्धार मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए बहुमाणी-
ए ठामि काउत्सग ॥१॥

इसके पीछे पूर्व लिखा हुआ “मन्त्रत्थ उमसिरयं” इत्यादि
पाठ बोलना चाहिये ।

तदनन्तर चार नवकारमन्त्र का अथवा पूर्व लिखा हुआ एक
“लोगस्त” इत्यादि पाठ का काउत्सग करके, उसके पीछे शानाचार
के निमित्त नीचे लिखा हुआ पाठ बोलना चाहिये—

घसहस्र घट्टमाण्डम । संभारभागराओ, तारेड नरं व
 नारि वा ॥३॥ उच्चिनसेलसिद्धरे, दिवहा, नार्गु निसी-
 हिआ जस्त । तं धम्मवक्कवद्धि, अरिद्वनेमि नमंसामि ॥
 ४॥ चत्तारि अट्ट दस दो ग वंदिआ जिणवरा चट्ठवीसं ।
 परमद्वनिद्विअट्ट, सिद्धा सिद्धि मम दिमंतु ॥५॥
 १. किं तीसरे अक्षरपत्र को मुद्रपत्ती पडिलेइया, कानी चाहिये ।
 २. बायें हाथ में मुद्रपत्ती को लेकर उम में बायें गल से दाहिने कान तक
 लड़ाट को पूँजकर मुद्रपत्रों को अंगे रखनेना चाहिये और उस के
 मुद्रनाम में गुरुवरण की कल्पना करनेनी चाहिये ॥

३. सुगुम्फुन्दना का पाठ यह है—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिअं जावणिज्जाणं निसी-
 हिआए अणुजाणह मे मिडगहं । निहीहि । म्हाकायं
 कायसंकासं खमणिज्जां मे कल्लामो अप्पविल्लताणं
 पट्टसुभेण मे राई वडक्कंता, जत्ता मे जावणिज्जं च मे,
 खामेमि खमासमणो । राइयं वडक्कं, आइत्तियाणं
 पडिक्कमामि खमासमणार्गं राइआए आसायणाए ति
 तीसन्नपराए जं किंचि मिच्छाए मणहुक्कडाए वयहुक्कडाए
 कायहुक्कडाए कोट्टाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिया-
 ए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणा-
 ए जो मे अइयारो कज्जो तस्म खमासमणो । पडिक्कम-
 मि । निदामि । गरिहामि । मप्पाणं । वोस्सिरामि ॥ १॥

पदमस्य पदमागच्छय । संसारसागरात्, शारेण न
 मारि या ॥३॥ उत्तिग्नेन मित्रे, दिग्गा नागे नि
 दिष्टा जम्भ । तं भस्मवद्गच्छि, अग्निदेवि नर्ममा
 ४॥ यत्तामिच्छद्दमयोनयेदिगा जिगवा यत्तु
 परमद्विद्विच्छा, निष्ठा मित्रं मम शिष्य ॥ ४ ॥

[illegible]

॥ सुगुणान्ता का पत्र बंद है —

इच्छामि स्वमात्ममणो ! वेदं ज्ञायामि ज्ञायामि
हि मायं अणुजामाह मे मिदमाह । निद्राहि । अतो
कादहंकासं स्वमात्ममणो मे कदासो अप्पविंदन
यदुसुभेग मे राई यदहंता । जता मे जायमिदं च
स्वामेमि स्वमात्ममणो राइय यदहंता, आदित्मि
पुदिक्रमामि स्वमात्ममणां राइयाय आसायणा
त्तीसत्तवराणं जं किंचि मिच्छाण मणदुक्कडाण यदुक्क
कापदुक्कडाण कोहाए माणाए मायाए लोभाए सुव्वकालि
ए सव्वमिच्छोव्वाराण सुव्वधम्मादुक्कमणाण आसाय
ए जो मे अइआरो कजो तस्म स्वमात्ममणो ! वेदिक्र
मि निदामि गरिहामि अप्पाणं, वोस्तिरामि ॥

“ यह सुमुखन्दना का पाठ सर्वत्र उक्तविधि से दो बार पढ़ना चाहिये, तथा दूसरी बार पढ़ने के समय “ वागस्तिपदम् ” यह एक पद नहीं करवा चाहिये, तथा इस के पंछे नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छासारेण सेदिरुह भगदन् रादृघं आलोडे?
इच्छं, आलोपमि जो मे राडजो अदृषारो० ॥

“ इत्यादि बोलकर दोहे पूर्व लिखे हुए “ इच्छानिटावि ” इत्यादि समस्त पाठ को बोलना चाहिये ।

इस के पञ्चम वागस्तिपदो अतिपद भी आलोचना नीचे लिखे हुए पाठ से करे—

आशुना चार घट्ट रात्रि में मैंने आं बिराध्या होय,
सामलाय वृथिबीकाय, सामलाय अण्णाय, सामलाय
ते उकाय, सामलाय पाउकाय, दाना लाय प्रत्येक पन-
रतिकाय, चौदह लाय सायारखयनरतिकाय, दोलाय
वेइन्द्रिय, दोलाय तेइन्द्रिय, दोलाय चौरिन्द्रिय, चार
लाय देवता, चारलाय नारकी, चारलाय तिदधवअेन्द्रि-
य, चौदह लाय मनुष्य, एवं चारगति के चौरासी लाय
जीवायानि में मेरे जीवने जे कोई जीव हण्यो होय, हण-
यो होय, हणतां प्रत्ये भलो जाण्यो होय, ते सख्ये हूँ
मने पचने कायायें करी तरस मिच्छामि इच्छं ॥

इस के पीछे अठारह पाप स्थानक की झालोचना नीचे
दूर पाठ से करनी चाहिये—

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन पा
क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्यास्य
शून्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद मिथ्य
वात्स्य, ये अठारह पापस्थानक सेव्या होय, मेवराज्य
सेवनां प्रत्ये भला जाण्या होय, तं सर्व्वे हूँ मन बच
पापें करी तस्म मिच्छा मि दुष्कण्ड ।

ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पंथा ठवणी कबल
कारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय,
कर्मादानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देश
स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप प
न्दादि कीधूँ होय, कराध्यु होय, करमां अनुमोक्षुं हो
सर्व्व मने बचने काय, ये करके रात्रि अनिचार आ
ण कर के पश्चिक्कमणा में आलोइं तस्म मिच्छा मि दु

इस झालोचना पाठ के बाद पूर्व्व लिखा हुआ "सत्यम्न
हय" पाठ शोभना चाहिये ।

इस के पीछे संसार का प्रसर्जन का आसन पर से
दाहिने गोड़े को ऊँचा और दायें गोड़े को नीचा कर कर
"मगाने गुरु मरौ" इस के पीछे " इच्छ" ब्रह्मका ता
नवकार मन्त्र को तग तीन बार पूर्व्व लिखे हुए " कोमि

इस के पीछे अठारह पाप स्थानक की चालोचना नीचे लिखे हुए पाठ से करनी चाहिये—

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैयुन परिग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्याख्यान वैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद मिथ्यात्व शल्प, ये अठारह पापस्थानक सेव्या होय, सेवराख्या होय सेवनां प्रत्ये भला जाय्या होय, से सध्वे हूँ मन वचन कर्मा पापें करी तत्स मिच्छा मि दुष्कृतं ।

ज्ञान दर्शन चारित्र्य पाटी पोंथी ठकणी कयलीख कारयाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पन कर्मोदानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप परानिन्दादि कीछू होय, कराध्यु होय, करता अनुमोद्यु होय मोसर्व मने वचने काय, ये करके रात्रि अनिघार आलोचना कर के पद्धिपमणा में आलोचें तत्स मिच्छा मि दुष्कृतं ।

इस चालोचना पाठ के बाद पूर्व लिखा हुआ "सत्यम्स त्रि त इय" पाठ होचना चाहिये ।

इस के पीछे संहारना का प्रार्थन कर आसन पर बैठ कर दाहिने गोंदे को ऊंचा और बायें गोंदे को नीचा कर कह कि — "मगान! सूत्र मरी" इस के पीछे "इच्छ" बड़का तीन बार मगान सूत्र को तम तीन बार पूर्व लिखे हुए "करमि मी"

इन्द्रादि पाठ को बहू कर “ इन्द्रामि पटिकमिडे जो में राक्षसो”
 इन्द्रादि “ इन्द्रामि टामि” इन्द्रादि मण्ड्यं पाठ को बोल कर नीचे
 लिखतदुक्ता वशिष्ठु सुत्र को बोलना चाहिये, तथा इम सुत्र को ४२
 वी गाथा तक बैठ कर ही बहना चाहिये, तथा होयपाठ गाथामें
 को छोड़े हो कर बहना चाहिये—

यंदिनु सप्यसिद्धे, पम्मापरिण अ सप्यसाहु अ ।
 इन्द्रामि पटिकमिडे, सावगपम्माइआरस्स ॥१॥
 जो मे वयाइआरो, नाये तद् दंसुये चरित्ते अ । सुहु-
 मां अ पापरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २॥ दुवि-
 हे परिगाहमि, सावमे दहुविहे अ आरंभे । वारावणे
 अ कारणे, पटिकमे राइयं सव्यं ॥३॥ उं पट्टमिदिण्हिं,
 नउहिं वसाएहिं अण्यसत्तेहिं । रामेण च दोसेण च, तं
 निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निगममये, ठाणे
 थेहमणे अणामांगे । अमिआंगे अ निआंगे, पटिकमे
 राइयं सव्यं ॥ ५ ॥ संजजंत्तविमिच्छा, पढंस तद्
 संगयो कुलिगीतु । सम्मत्तसइआरे, पटिकमे राइयं
 सव्यं ॥ ६ ॥ दव्वायत्तमारंभे, पयये अ पयायये अ जे
 दोहा । अत्तट्ठा च परट्ठा, उम्पट्ठा येव तं निंदे ॥ ७ ॥
 पंपप्पमत्तुप्पपाणं, इक्कप्पपाणं च तिरहम्माइआरे ।
 तिक्कसाणं च चउयहं, पटिकमे राइयं सव्यं ॥ ८ ॥ परमे
 अणुप्पपंमि, मूलगपायाइवापविहंओ । आपरिअम-

इस के पीछे अठारह पाप स्थानक की चालीसवा नीचे लिखे पाठ से करनी चाहिये—

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्यास्यानवैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद मिथ्यात्व शल्प, ये अठारह पापस्थानक सेव्या होय, सेवराव्या होय सेवमां प्रत्ये भला जाय्या होय, ते सव्ये हूँ मन वचन कर्मायें करी तस्स मिच्छा मि दुक्खं ।

ज्ञान दर्शन चारित्र्य पाटी पांथी टथणी कथलीन कारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पन कर्मोदानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप परिग्रहदि कीधूँ होय, कराव्यु होय, करतां अनुमोयुं होय मो सर्व मने वचने काय, ये करके रात्रि अतिचार आलोचन कर के पट्टिक्खमणा में आलोचं तस्स मिच्छा मि दुक्खं ।

इस आलोचना पाठ के बाद पूर्व लिखा हुआ "सव्यस्त मि होय" पाठ भोजना चाहिये ।

इस के पीछे सिंहास्ता का प्रमार्जन कर आसन पर बैठ कर दाहिने गोड़े को ऊँचा और बायें गोड़े को नीचा कर कहे कि—
"मगगन्! सुय भयूँ" इस के पीछे " इच्छ" कहकर तीन बार नवशार मन्त्र की तम तीन बार पूर्व लिखे हुए " करेमि मंते

त्वादि पाठ को हृद कर “ इच्छामि पटिकमिडे जो मे राह्यो”
 त्वादि “ इच्छामि रामि” इत्यादि सम्पूर्ण पाठ को बोल कर नीचे
 सज्जाम्मा वरिष्ठ सुत्र को बोलना चाहिये, तथा इस सुत्र को ४२
 वीं गाथा तक बैठ कर ही करना चाहिये, तथा छेपचाठ गाथामें
 हो खदे हो कर करना चाहिये—

यदित्तु सव्यसिद्धे, एम्मयारिण अ सव्यसाहू अ ।
 इच्छामि पटिकमिडे, सावगधम्माइआरत्त ॥१॥
 जो मे क्याइआरो, नाणे तह दंसणे वरित्ते अ । सुहु-
 मो अ वापरो या, तं निदे तं अ गरिहामि ॥ २॥ इदि-
 हे परिगार्हमि, सायजे दहुदिहे अ आरंभे । कारावणे
 अ करणे, पटिकमे राह्यं सव्यं ॥३॥ जं मद्धमिदिपहिं,
 यउहिं कसाएहिं अण्यसत्तेहिं । रागेण अ दासेण य, तं
 निदे तं अ गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निगमणे, ठाणे
 धकमणे अणामांगे । अमिआंगे अ निआंगे, पटिकमे
 राह्यं सव्यं ॥ ५ ॥ संजाकंसविनिष्ठा, पसंत्त तह
 संययो कुत्तिगीसु । रुम्मत्तरत्तइआरे, पटिकमे राह्यं
 सव्यं ॥ ६ ॥ द्वापसमारंभे, पणणे अपयावणे अजे
 दास्ता । अत्तहा य परहा, उमयहा येव तं निदे ॥ ७ ॥
 पंचण्हमत्तुदवाणं, इण्यवणं य तिरहमइआरे ।
 सिक्खणां य यउण्हं, पटिकमे राह्यं सव्यं ॥ ८ ॥ परमे
 अणुप्यपंमि, भूलगपायाइयावपरिहंओ । आपरिअम-

एतत्सत्ये, इत्थं पमायन्संगे ॥ ६ ॥ यद्वयं पंचविच्छेत्,
 अङ्गारे भस्मराणवुच्छेत् । पदमवयवसङ्गारे, पद्विमे
 राङ्गं सत्यं ॥ १० ॥ वीणं अणुव्ययंमि, परिधूना
 अलिमरणगिरिङ्गो । आयसिमपसत्ये, इत्थं पमा
 यन्संगे ॥ ११ ॥ मद्रमारुहसङ्गारे, मोसुवगमे अ
 कृतेदे अ । वीणयवमङ्गारे, पद्विमे राङ्गं सत्यं ॥
 १२ ॥ गङ्गा अणुव्ययंमि, धूम्रमवयवसङ्गारेणगिरिङ्गो ।
 आयसिमपसत्ये, इत्थं पमायन्संगे ॥ १३ ॥ तेना
 हृत्प्रांगे, मद्रादित्ये विच्छेदगमने अ । कृदनुल कृ
 म्मने, पद्विमे राङ्गं सत्यं ॥ १४ ॥ यद्वयं अणुव्य
 यंमि, निधे पद्विमे राङ्गं सत्यं । आयसिमपसत्ये,
 इत्थं पमायन्संगे ॥ १५ ॥ अपविमगिरिङ्गा उपा
 मगम रिताङ्ग निधे अणुव्ययंमि । यद्वयं पद्विमे राङ्गं
 सत्यं ॥ १६ ॥ इतो अणुव्ययंमि निधेममि
 आयसिमपसत्ये । पद्विमे राङ्गं सत्यं, इत्थं पमा
 यन्संगे ॥ १७ ॥ यण-वज्र-मिन्-मय-मय-सुवयं अ
 कृदनुलमिन् । यद्वयं यद्वयंमि अ, पद्विमे राङ्गं
 सत्यं ॥ १८ ॥ यम-मय-मय-मिन्-मिन्-मिन् अहं
 म मिन्मि अ । यद्वयं यद्वयंमि अ, यद्वयं अणुव्य
 यंमि ॥ १९ ॥ यद्वयं यद्वयंमि अ, यद्वयं अणुव्य
 यंमि अ । यद्वयं यद्वयंमि अ, यद्वयं अणुव्य

२० ॥ सविते पट्टिपट्टे, अप्पोलिट्टुप्पोलियं च आहा-
 । तुच्छोसहिम्बकखण्डा, पट्टिपट्टे राइयं सुव्यं ॥
 । ॥ इंगालो-यत्तुसालो-भाही फोही तुच्छणं वरमं ।
 णिज्जं चेय देन-त्तफत्त-रत्त-चेत्त-वित्त-वित्तये ॥ २२ ॥
 । खु संनट्टिपट्ट-वत्तं निहंत्तणं च दवदायं ।
 । दहनलायमोमं, अम्भपोमं च पट्टिज्जा ॥ २३ ॥
 । त्थिगिप्पुसलज्जता-तत्त-रत्ते संनट्टमेत्त-त्ते । दिक्के ददा-
 ण दा, पट्टिपट्टे राइयं सुव्यं ॥ २४ ॥ वराणुत्त-दत्ता-
 । लेवणं सुदत्तपरत्तमे । दत्तात्तण आभरणे, पट्टिपट्टे
 इयं सुव्यं ॥ २५ ॥ वंदप्पे पुत्तुत्त, मोहरिअट्टिपट्टे
 । भाज्जट्टिपट्टे । दंत्तमि अण्णट्टाण-नट्टयंमि गुण-त्त-
 नि- ॥ २६ ॥ निविट्टे द्दुप्पणिट्टाणे, अण्णट्टाणे तद्दा सुद-
 द्दणे । सामाज्जयविनट्टकण, पट्टमे सिक्कयावणं निदे ॥
 ७ ॥ आण्णट्टे पेत्तयाव, तदे त्वे अ पुत्तलपत्तये ।
 । ज्ञाणासिपमि, धाणं सिक्कयावणं निदे ॥ २८ ॥
 । धाण्णट्टे विट्टि-पत्ताय मात्त चेत्त भोयत्ताभोण । पोत्त-
 । ट्टिपट्टिपट्टे, तद्दा सिक्कयावणं निदे ॥ २९ ॥ सविते
 । विट्टिपट्टे, विट्टिपट्टे दवत्तमत्तट्टरे चेत्त । बालात्त-
 । दत्तये सिक्कयावणं निदे ॥ ३० ॥ सुट्टिपट्टे अ द्दुत्त-
 । अ, जा मे अत्तज्जत्तु अत्तज्जत्ता । रात्तेण च दोत्तेण
 । तं निदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ सात्तु संविभाणो,

न कश्चो तवचरणकरणजुतेसु । संते फासुजदंगे,
 निदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोण परलोण, जीवि
 मरणे च आसंसपञ्चोमे । पंचविहो अइआरो, माम
 हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पट्टिकमेव
 यस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सब्बस्स वयाए
 रस्स ॥ ३४ ॥ बंदणवयसिक्खामा-रयेसु रुक्काकसायंदे
 । गुत्तीसु च समिहंसु च, जां अइआरो अतं निदे ॥ ३५ ॥
 सम्महिही जीवो, जइ विहु पावं समायरइ किंचि । जना
 होइ वंजो, जेण न निद्रंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥
 तं पि हु सपट्टिकमणं, रूपपरिआधं सउत्तरगुणं
 खिप्पं उघसा मेइ, बाहिच्च सुखिखिखमो विज्जो ॥ ३७ ॥
 जइ विसं कुट्टगयं, मंतमूलविसारया । विज्जाहं
 मंतैहिं, तो तं हवइ निधिसं ॥ ३८ ॥ एवं अइविहं कम
 रागदोससमज्जिअं । आलोअंतो ज निदंतो, खिप्पं
 णइ सुसावमो ॥ ३९ ॥ कयपावो विमणुस्सो, आलो
 निदिप गुरु-सगासे । होइ अइरेमलहुओ, ओहरि
 भवः३ भारवहो ॥ ४० ॥ आसस्सएण एएण साव
 जइवि यहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अ
 रेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा दहुविहा, नयसं
 रिया पट्टिकमणकाले । मूलगुण उत्तरगुणे, तं निदे
 च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स घम्मस्स केवलपत्त

सुभेग मे राई बड़कना, जत्ता-भे जवणिजं च भेस
 मेमि खमासमणो राइयं बड़कमं, आवस्सियाणं पडि
 मामि खमासमणायं राइयाणं आसायणाणं तिस्सीरुत्त
 राणं, जं किंचि मित्छाणं भगदुक्कडाणं वयदुक्कडाणं काय
 दुक्कडाणं फोहाणं भाणाणं मायाणं लोभाणं सज्जकालियाणं
 सज्जमित्छोवयाराणं सज्जवग्गमाइक्कनणाणं आसायणाणं
 जो मे अइमारो दओ नत्तस्स खमासमणो! पडिक्कनामि
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं घोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे अगम में ही गृहते हुए नीचे लिखे हुए पद्य को
 बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण मंदिसिद्ध भगवन्! अब्भुट्ठिओग्धि
 अविभतराइयं खामेडं, उच्छं, खामेमि राइयं। जं किंचि
 अरत्तिपं परपत्तियं भने पाणं विणग्गेवावचे आलाये
 संलाये उद्यम्मणे ममाग्गे अंतरभामाण उवरिभासाए
 जं किंचि मज्झ विगपग्गिह्माणं सुद्धमं वा पापरं वा तुब्भे
 जाएह अहं न जाणामि नम्म मित्छा मि वृष्टं ॥

इस पद्य को वाचक गायता १) अगम के पादोद्देश-आगत
 में बैठकर दोनों हाथों का पहिले-दम का मुद्राभी को बायें हाथ में
 मुच पं दक्षर ओर दाहिने हाथ को गुरु के गान्धे गायक गायत्री के
 ओम् नमः “जं किंचि चरितं” इत्यादि “अभुट्ठिओग्धि” का
 तमूर्ति पद्य कहना चाहिये, फिर दोसर “सुगुरुसंज्ञा”-देवतार्थमि

प्रमनान्न करते हुए पीछे पाने भरप्रद के बाहर जाना चाहिये,
 पान नीचे लिये हुए पाद को बोलना चाहिये—

प्रापरियउदजप्राप, सीसे माटमिए कुलगणे अ ।
 जे मे वेड कसाणा, मध्ये निविहेण खामेमि ॥ १ ॥ मध्यस्त
 समणसंघस्त भगवणो अंजलि करिअ सीसे । सव्यं
 खमायइत्ता, खमामि सव्यम्म अटयंवि ॥ २ ॥ सव्यस्त
 जीवरासिस्त, भावणो धम्मनिदिप निवचितो । सव्यं
 खमायइत्ता, खमामि सव्यम्म अटयंवि ॥ ३ ॥
 इन के पीछे नीचे लिखा हुआ “करेमि भंते” का पाठ वें तला
 चाहिये—

करेमि भंते! सामादयं सावज्जं जोग पघरएयामि जाव
 निपमे पज्जुगाहामि दुविहं निविहेण मणेगे वायाण काप-
 थो न करेमि न कारयेमि तस्म भंते पटिकामामि निदामि
 गरिहामि अप्पाण तानिरामि ॥ १ ॥
 इन के पद्य नीचे लिखे हुए “इच्छामि टामि” इत्यादि पद्य

को बोलना चाहिये -

इच्छामि टामि पाउस्सग्ग, जो मे राइओ अइय
 फजो, पाइओ पाइओ माणमिओ उरगुत्तो उम्प
 अकण्णो अकरगिज्जो इज्जमाप्यो दु-रिनिज्जो अण
 रो अणिउअव्यो अग्गयणपाइओ नाणे ता
 परित्ताचरित्ते सुए सामाए । तिण्ह पुत्तीणं,

कसायाणं, पंचगदमगुद्वयाणं, त्रिण्डं गुणत्रयाणं, षडण्डं
सिक्खयाययाणं, पारसविदस्स सत्थगधम्मस्स जं संदिपं
जं धिरादिपं तस्स मिच्छा मिदुक्खं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए “तस्स उत्तरी” इत्यादि पाठ को
बोलना चाहिये—

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्चित्तकरणेणं विसोद्धीकर-
णेणं विसोद्धीकरणेणं पायाणं कम्माणं निग्घायणद्वाए ठामि
काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे यह बोलना चाहिये कि—

श्रीमहावीरस्वामि- छम्मासीतप- चिन्तन- निमित्तं
करेमि काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए “मक्ख” इत्यादि पाठ को
बोलना चाहिये—

अन्नरथ ऊत्तसिएणं नीत्तसिएणं खासिएणं छीएणं
जेभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भम्मलिए वित्तमुच्छाए
अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो धवि-
हुज्ज मे काउस्सगो जाव अरिहंताणं भग-
वन्ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं
क्काणेणं अप्पाणं घोसिरामि ॥ १ ॥

उक्त पाठ को बरकरार काउस्तग्य करना चाहिये तथा उस में श्रीमहावीर स्वामीके किये हुए छमासी तथा चिन्तन करना चाहिये, भयना चौबीस नवकार या छ - "लोगस्स" का काउस्तग्य करना चाहिये, तथा काउस्तग्य को पाकर नीचे लिखे हुए "लोगस्स" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरं, धम्मतिथ्यपरं जिणे । जरिहं-
 ते कित्तस्सं, चउवीसं पि वेचली ॥ १ ॥ उसममजिअं
 च वेदे, संमयमभिणंदणं च सुमहं च । पउमपहं सुपासं,
 जिणं च चंदपहं वेदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंनं,
 मीअलसिअस वासुपुअं च । विमलमणं च जिणं,
 धम्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंयुं अरं च महिं, वेदे
 सुणिसुअयं नमिजिणं च । वंदामि रिद्धनेमि, पासं तह
 बदमाणं च ॥ ४ ॥ एवंमण अभिपुआ, विहपरवमला
 पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तिथ्यपरा मे
 पहीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिप वेदिप महिणा, जे एलंगारस
 उत्तमा सिद्धा । आरगगोहिलाअं, रुमाहिबरुत्तमं
 दिंतु ॥ ६ ॥ वेदेसु निम्मलपरा, आरवेसु अहियं पपा-
 सपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिहंतु ॥ ७ ॥

उक्त पाठ को बरकरार सुदली की पहिले पा बार के नीचे
 लिखे हुए "सुगुणवन्दना" पाठ को दो बार बोलना चाहिये—

उक्त वाक्य को मस्तिपूर्वक बोलना चाहिये ।

इस के पीछे गुह्यमुक्त से पदसङ्गात का के “इच्छानो वसु-
सहि” इस वाक्य को बोलना चाहिये ।

इस के पीछे “नवकारमी” से लेकर ओ कोई पदस्त्रोत ब्र-
ण हो उसे काना चाहिये, पदस्त्रोत की विधि यह है कि—

नवकारसहियं मुद्रिसहियं पञ्चकस्याप चउग्र्यहंपि
आहारं अस्त्रं पाशं खादमं सारमं अन्नमथयाभोगेणं
सहस्रगारेणं महत्तरागारेणं मन्त्रममाहिषसिमागारेणं
बोसिरामि ॥ १ ॥

पीछे “एनो व्यसन्नगाय, नमोऽर्हसिद्वाचाप्योपाध्यापसर्वमा-
बुद्ध.” इस पाठ को बोलकर नीचे लिखे हुए “परसमयनिमित्तादि”
अथवा “मंसादाया” इत्यादि दोनो पाठो में से किसी एक पाठ के-
प्रारम्भ की तीन गायत्रियों को बोलना चाहिये—

परसमयनिमित्तरश्मि, भवसागरधारितरणपर-
णिम् । रागपरागसमीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥ १ ॥
निरुद्धसंसारनिहारकारिपुनस्तभाधारिगच्छा विक्रामम् ।
निरन्तरं केवलसिद्धमा वो, भवावहं मोहभरं हरन्तु
॥ २ ॥ मन्देहकारिकुनयागमसुदृग्द-सम्माहपदुहरणा-
मलधारिपुत्रम्, मंसारसागरममुत्तरणोऽरुभावं, धीरागमं
परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥

इस के बाद नयेस्थुयं बहना ।

परिमलभरंलोलालालिमाला, वरकमल-
निवासे हारनीहारहामे, अखिलभवकारागविच्छित्ति-
कारं, कुरु कमलकरे ! मे मङ्गलं देवि ! मारम् ॥४॥

संसारदावानलदाहर्नारं, संमोहधुलीहरणे समी-
रम् । माघारसादारणसारसारं, नमामि शीरं गिरिसारर-
रम् ॥१॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चलाविलोल
कमलावलिमालितानि । संपूरिताभिननलोकममीहिना-
नि, कामं नमामि जिनराजपदानि नानि ॥२॥ योधागा-
धं सुपदपदधीनीरपराभिरामं, जायाहिमाविरललहरी-
सङ्गमागाहदेहम् । चलावेलं गुरुगममर्णामङ्गलं दूर-
पारं, सारं वीरागमजलनिधि मादरं माधु मेवं ॥ ३ ॥
अमृलालोलपूर्यायहुलपरिमलालालालिमाला

भङ्गारारावसारामलदलकमलागारभूर्मानिवासे
ह्यापासम्भारसारं वरकमलकरे नारहाराभिरामे, धार्गी-
सन्दोहदेहे भवविग्रहवरं देहि मे देवि ! मारम् ॥४॥

इम के पथान् नीचे लिखे हुए पञ्चमन्त्राणां अष्टादि पाठ को
ध्यानना चाहिये—

नमोऽन्तुषु णं अरिहन्ताणं भगवन्ताणं आङ्गराणं त्रिन्ध-
पराणं मयमन्तुद्वाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिममोहाणं पुरिस-
परपुंहराआणं पुरिमवरगंधर्वाणं लोणुत्तमाणं लोमना-
हाणं लोमदिआणं लोमपईवाणं लोमपज्जोअगराणं अभ-

दयाणं चरुदयाणं ममदयाणं मरुदयाणं बौद्धि-
 दयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसिध्याणं धम्मनायकाणं धम्म-
 सारहीणं धम्मवस्त्राउरंतचक्रवर्दीणं अप्पट्टिमवरणाण-
 दंसाणधराणं विअट्टउमाणं जिणाणं जावयाणं तिलाणं
 तारायाणं सुद्धाणं पोट्टयाणं सुत्ताणं मोअगाणं सज्जनूणं
 मज्जदस्सीणं सिधमयलमरुअमणंनमरुखयमज्जयायाह-
 मणुणराविसिद्धिगइनामयेणं ठाणं मधुरत्ताणं नमो जि-
 णाणं जिणभयाणं, जे अ अइया मिद्धा, जे अ भविसंनि
 णागण्वाले। मंडअ वट्टमाणा, मज्जे निविहेण वंदामि ॥१॥
 इस के पीछे गड़े हो कर नीचे लिखे हुए "अरिहंत चत्था-

गं" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

८ अरिहंतनेइआणं करेमि काउस्समं ॥ १ ॥
 इस के पीछे गड़े हो कर नीचे लिखे हुए "चंदमयवसिआण-

इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

चंदमयवसिआणं पुअणवसिआणं सवारावसिआणं
 सम्माणवसिआणं बौद्धिभावसिआणं निरुयमगावसि
 आणं मद्धाणं मेहाणं भिद्दणं धारणाणं अणुप्येहाणं प
 माणाणं ठामि काउस्समं ॥ १ ॥

इस के पश्चात् गड़े हो नीचे लिखे हुए "अज्जन्थ उस्समिणं

एव" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

अज्जन्थ उस्समिणं नामसिणं स्वामिणं तं

परिमलभरलोभालोदलोलालिमाला, - धरकमल
निघासे हारनोहारहामे, अचिरलभवकाराभारविच्छित्ति-
कारं, कुरु कमलकरे ! मे मङ्गलं देहि ! मारम् ॥४॥

संसारदावानलदाह्नारं, संमोहधूलीदरणे समी-
रम् । मायारसादारणमारम्भारं, नमामि श्वारं गिरिसारभ-
रम् ॥१॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोल
कमलावलिमान्निनानि । संपूरिताभिननलोकममीहिता-
नि, कामं नमामि जिनगजपदानि नानि ॥२॥ बोधागा-
धं सुपदपदवीर्णारप्राभिगमं, जायाद्विमाचिरललहरी-
सङ्गमागाहदेहम् । चूलावेलं गुरुगममर्णामङ्गलं दूर-
पारं, मारं धीरागमजलनिधि सादरं माधु मेवे ॥ ३ ॥

आमृलालोलचूलावट्टलपरिमलालोदलोलालिमाला -

भङ्गारागवमारामलदलकमलागारभ्रमीनिघासे
ह्यापासम्भारमारं धरकमल करं सारहागभिगमे, वागी-
मन्दोददेहे भवविग्रहवरं देहि मे देवि ! मारम् ॥४॥

इस के प्रधान नाच निम्न लक्षणादि पाठ को
बोझना चाहिये -

ममोन्मुग्धं अरिहन्ताणं भगवन्ताणं आट्टगराणं तिन्य
पराणं मयंसेवुट्टाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिसर्माहाणं पुरिस-
वरपुंढरीआणं पुरिसवरगंधद्वयाणं लोगुत्तमाणं लोमना-
हाणं लोमद्विआणं लोमपद्मेयाणं लोमपद्मोअगराणं अम-

जंभाइएणं उद्धुएणं धायनिसग्गेणं भमसिणं पित्तमुच्छ्रा-
 णं सुहृमेहिं अंगमंजालेहिं, सुहृमेहिं रोजसंचालेहिं,
 सुहृमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अमग्गे
 अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाय अरिहंताणं
 भगवंनाणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं
 कायेण अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

उक्त पाठों को जोड़ कर एक नवफल का काउस्सग्ग करना
 चाहिये, एक प्राक्क काउस्सग्ग पाठ कर 'नमोऽहंनिस्सुवायोंना
 धममसर्वसाधुम्भ' उक्त राज्य को कर्त्तक नीचे लिखी हुई स्तुति (धुई
 को बोले—

सिद्धं चक्रं चाहं वन्दे ॥ १ ॥

इस के पश्चात् काउस्सग्ग को पढ़ना चाहिये, तथा इसी विधि
 को आगेही तीन स्तुतियों में भी करनी चाहिये ।

इस के पीछे नीचे लिखे हुए "लोगम्भ" इत्यादि पाठ को
 बोलना चाहिये—

लोगम्भ उच्चोअगरे, धम्मनिग्गहरे जिणे । अरिहं-
 ते कित्तइस्सं, णउपीमं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं
 च वंदे, संभयमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं,
 जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं,
 मीअलसिअंसं वासुपुअं च । विमलमणं च जिणं,
 धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं, वंदे

सुणिसुष्ययं नमिजिणं च । पंदामि रिट्ठेमि, पास तह
 षट्ठमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मण्णमभिपुञ्जा, बिहपरयमत्ता
 पहीणजरमरणा । चउपीसं पि जिण्णवरा, तिण्णवरा मे
 पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिप पंदिय महिया, जेण लोमस्स
 उत्तमा सिद्धा । आत्तगणोदिलाभं, समाद्विरमुत्तमं
 दिंतु ॥ ६ ॥ पंदेसु निम्मलपरा, आद्वेसु अदियं पपा-
 सयरा । सागरयरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिंतु ॥ ७ ॥

उक्त पाठ को बोझ का तथा “मन्वसोर अतिष्ठेदमाय क-
 रेमि काउत्सगो” इस पाठ को बोझका तथा “वंदयस्तिनार” इत्या-
 दि पाठ को बोझका तथा “अज थ ऊमसिण्ण” इत्यादि पाठ को
 यह फल एक नरकत का काउत्सग्य करना चाहिये, इस के पश्चात्
 नीचे लिखी हुई दूसरी स्तुति (धुई) को बोलना चाहिये—

श्रीप्रत्येकं पादो वंदे ॥ २ ॥

इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए “पुनरारवादीयद्वे” इत्यादि
 पाठ को बोलना चाहिये—

पुनरारवादीयद्वे, धायसंदे अ जंपदीये अ ।
 भरहेरययविदेहे, धम्माहगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमनिमि-
 रपटलविट्ठंसणस्स सुरगणनरिंदमदिथस्स । सीमा
 परस्स वंदे, एप्फोडियमोहजात्तस्म ॥ २ ॥ जाहंजराम-
 रणसोगणामणस्स, काट्ठाणपुनरालविसालसुरावरस्स
 को देवदाण्यनरिंदगणधिपस्स, धम्मस्स सारमुयलब्ध-

दाणं, पुरिसवरपुंढरीआणं, पुरिसवरमंभहन्धीणं ॥३॥
 लोपुत्तमाणं लोमनादाणं, लोमहिआणं, लोमपईगाणं,
 लोमपडजोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं अयत्तुदयाणं
 मग्गदयाणं सरणदयाणं बोद्धिदयाण ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं
 धम्मदेसिआणं धम्मनाएगाणं धम्मसारहंणं धम्मपरमा-
 उरंत्तमववदीणं ॥ ६ ॥ अणट्टिहवग्गनाणंदसुणपराणं
 निअट्टउत्तमाणं ॥ ७ ॥ जिगाणं जाययाणं निजाणं तार-
 याणं पुट्ठाणं नेहयाणं मुत्ताणं धोअयाण ॥ ८ ॥ सुअत्तुणं
 सअत्तुत्तिमीणं सिअपल्लमहअमगनमअत्तपमअवाह
 मपुणरात्रिणि मिद्धिअट्टनापयेय दाग मयसग्ग मयो
 जिजाग जिअभयाय ॥९॥ जे अ अईपाभिद्धा. ले
 अ भविहसंनिअत्ताण काले । संवई अ वट्ठमाणा, सध्वे
 निविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जायंनि चेइयाई उट्ठे अ अहे अ निरिल्लाय वा
 मअयाई माई वेदे इह संयो तत्थ संताई ॥ १ ॥

इअट्टामि गमाममणो वंदिउं जायजिअाय नितां
 दिअाय मन्थण्ण वंदामि ।

जायन्त वेवि माए भरहेरवमहाविदेहे अ । मय्जेमि
 तेमि पणअं निविहेण तिदंइविरयाणं ॥ २ ॥

नमांइहंनिसट्ठाचार्योपाध्यायमवेसाधुभ्यः ।

इच्छामि स्वमाममणो वंदितं जावणिज्जाण निमी-
 ष्माण मत्थणण वंदामि ।

जावन्न वेयि माह भरोस्वनमहाविदेहे अ । सच्चं-
 वे तेसि णणओ तिचिहेण तिदंढचिरणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हस्मिद्धाचार्योपाध्यायमर्यमाधुभवः ।

॥ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे भग्य भाग्य हमारं ॥
 मलाचल गिरि ० ॥ एह गिरिवरनां महिमा महोदो-
 जेतां न आये पारा । रागणल्ल ममोसरया म्यामी,
 नवाणुं पारा रे ॥ ५ ० ॥ १ ॥ मूलनागक श्री आदि
 जनेश्वर, श्रीमुख्य प्रतिमा पारा । अष्ट इन्द्रमंजूजो भायें,
 मकिन मूल आचारा रे ॥ ५ ० ॥ २ ॥ दूर देशभी हं
 हां आगं, अथग सुणी गुण लहारा । पतिन उद्धारण
 वेन्द तुमारे, एह तीर्थ जग मारारे ॥ ५ ० ॥ ३ ॥
 माय भक्तिमें प्रभु गुण मारें, अपना जन्म सुधाग ।
 ताआ करि भविजन शुभ भावें, नरक निर्पेन गति पारा
 ॥ ५ ० ॥ ४ ॥ मयन अदार प्रथमी माम आचारे,
 यदि आठम मोमचारा । प्रभुके चरण परतापमे मंगमं,
 समारतन प्रभु प्यारारे ॥ ५ ० ॥ ५ ॥

जग रीगगजगगुरु, होउ मम तुह पभायओ भग-
 य । गगनिच्येशो मग्गणुमारिणा इहफलनिर्दी ॥ १ ॥

अथ सन्ध्यासामायिक-विधिः ।

पिठसे प्रहर भर्गशाखा में जाकर वहा उसका प्रमार्जन कर
 चूड़ा आदि की पीडिलेहया करनी चाहिए । यदि देर हो गई हो तो
 तबल दृष्टि प्रतिभेराना करलेनी चाहिए, इस के पीछे यदि गुरुजी
 प्रियमान हो तो उन के सामने (यदि वे न हो तो स्थापनाचार्य के
 सामने) आ कर भूमि का प्रमार्जन कर आसन की बायें पास में
 गङ्गासममग देकर चाहिए । यदि स्थापनाचार्य के सामने सामायिक
 वेनी पड़े तो नीचे दाग नयका मन्त्रको करकर स्थापनाचार्य के प्र-
 भेभेगन के तारा योमो का चिन्तन करते हुए स्थापनाचार्य की स्था-
 पना करलेनी चाहिए, इस के पीछे गङ्गासममग देकर नीचे लिखे
 हुए पाठको बोलना चाहिये -

**इच्छाकारेण संदिशत भगवन् ! सामायिक मुद्रप-
 नी पहिलेहूँ ? इच्छं ।**

इस के पीछे फिर गङ्गासममग दे कर मुद्रपत्ती का परिमेदन कर,
 फिर एक गङ्गासममग का देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोले—

**इच्छाकारेण संदिशत भगवन् ! सामायिक संदि-
 शायं ? इच्छं । इच्छाकारेण संदिशत भगवन् ! सामा-
 यिक टा उं ? इच्छं ।**

इस के पीछे फिर एक गङ्गासममग दे कर अर्द्धांगन हो कर
 नीचे दाग नयका मन्त्र का मुखना कर के नीचे लिखे हुए पाठ को
 बोले—

लोगविद्वद्वाओ, गुरुजगपूआपरत्थकरणं च। सुहृणु
जोगो तव्वयणसेवणा आभवमव्वंडा ॥२॥

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्समं, वंदणवत्ति
आण पूअणवत्तिआण सक्कारवत्तिआण सम्माणवत्ति
आण पोहिलाभवत्तिआण निम्बम्मगवत्तिआण ॥१॥
सद्धाए मेहाण निर्देण धारणाण अणुप्पेहाए वट्टमाणी
आमि काउस्समं ॥ २ ॥

अद्यत्थ उअमिण्णं नीममिण्णं त्यामिण्णं छीण्णं
जंमाइण्णं उट्टण्णं वायमिण्णं 'अमल्लिण वित्तमुत्तण-
ण सुहृमेहि' जगमंणालेहि, सुहृमेहि गेलमंणालेहि, सु-
हृमेहि दिट्ठिमंणालेहि, गयमाइणहि आगारेहि आभमं
अविराहिओ हृत्त मं काउस्समं । जय अरिहंताणं
'अगयणाणं जमुत्तारेणं न पारेमि माअ कायं आणेणं मो-
णेणं आणेणं अण्णाणं गेमिगामि ॥२॥

१६ नरइह १. काउस्समं १-१. जय अरिहंता ॥१॥ १७
मोनेण ॥१॥, १७१० नीम अवा 'अमल्लिण' ॥१॥ १८१० मो

जमुत्तरेणमि नमिणे, कयमदेय वट्टमाक । जमम
यने। मटिमा, मुणि मुह मुअ निरवाक ॥ जद मन उ
दयामं, विविमं धिय वदनाक । करिणं जित आणम
हाई। वयन अलाक ॥२॥

अथ सन्ध्यासामायिक-विधिः ।

पिछले प्रश्न धर्मशाला में जाकर बहा उसका प्रमात्रन कर मन्त्र आदि की पड़िलेहया करनी चाहिए। यदि देर हो गई हो तो केवल इष्टि प्रतिभोगना करलेनी चाहिए, इस के पीछे यदि गुरुजी विद्यमान हो तो उन के सामने (यदि वे न हो तो स्थापनाचार्य के सामने) आ कर भूमि का प्रमात्रन कर आभन को बायें पास में गमर उभारमग देना चाहिए। यदि स्थापनाचार्य के सामने भामायिक लेनी पड़े तो तीन बार नवकाय मन्त्रको करकर स्थापनाचार्य के प्रतिभोगन के संग्र बोधो का चिन्तन करते हुए स्थापनाचार्य की स्थापना करलेनी चाहिए, इस के पीछे गमामगन देकर नीचे लिखे हुए पाठको बोलना चाहिये -

**इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामायिक मुहप-
नी पदिलेहं? इच्छं ।**

इस के पीछे फिर गमामगन दे कर मुहपत्ती का पड़िलेहन कर, फिर एक उभारमगन को देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोले—

**इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामायिक संदि-
माडं? इच्छं । इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! सामा-
यिक ठाडं? इच्छं ।**

इस के पीछे फिर एक भनामगन दे कर चहोवनन हो कर तीन बार नवकाय मन्त्र का गुरुना कर के नीचे लिखे हुए पाठ को बोले—

लोगविरुद्धचाओ,गुरुजगपुआपगन्धकगंन। सुहृपु
जोगो तन्वयणसेवणा आभवमग्वंडा ॥२॥

अरिहंत चेष्टायां करेमि काउम्ममं, वंदणवत्ति-
 आण पूअणवत्तिआण मक्कारवत्तिआण सम्माणवत्ति-
 आण सोहिलाभवत्तिआण निम्बम्मगावत्तिआण ॥१॥
 सद्धाण मेढाण चिईण धारणाण अरुणोहाण वड्डमार्णा
 ठामि काउम्ममं ॥ २ ॥

अधस्त्य उममिणं नाममिणं स्वामिणं छीणं
जंभाहणं उहणं वायुनिमग्नं भमलिग वित्तमुच्छा-
प सुहमेहि अंगमंचालेहि, मुहमेहि गेलमंचालेहि, तु-
हमेहि दिट्टिमंचालेहि, गवमाहर्गहि आगार्गहि अभगं
अविराहिओ हृज्ज मे काट्ठमग्गो । जाय अरिहंताणं
भगवताणं नमुक्खारंणं न पारंमि ताव कायं दाणेणं मो-
णेणं ज्ञाणेणं सम्पाणं शेमिरामि ॥१॥

एक नरकाय का काउन्सिल कर्मके अभाव में ही मिला गया। यह
'मिथुन्य', योनिज नीचे मात्र मिथ्यात्व है की गति माने

शत्रुजयगिरि नमिषे, ऋषभदेव पुद्गरीक । शुभन
नो महिमा, मुनि गुरु मुग्य निरयोक्त ॥ शत्रु मन उ
यामे, विधिमुं चैत्य चंदनोक्त । करिगें जिन ध्यागल
रली यजन ध्यालोक्त ॥१॥

अथ मन्त्र्यासामायिक-विधिः ।

जिसके द्वार धर्मशास्त्र में उक्त है। उक्तका प्रमाणन कर कर खादि की परिशोधना करनी चाहिये । यदि देर हो गई हो तो केवल यदि अनिवार्यता करनेकी चाहिये, इस के पीछे यदि गुरुजी विद्वान् हैं तो उन के सामने । यदि वे न हो तो स्वामनाचार्य के सामने । जो जो भूमि का प्रमाणन कर चामन को बाधे वाम में गुरु गुरुगुरु देना चाहिये । यदि स्वामनाचार्य के सामने सामायिक सेही पड़े तो भोजन का नयका मन्त्र को कर्कर स्वामनाचार्य के अनिवार्य के लिए गोमो का विद्वान् करते हुए स्वामनाचार्य की स्था उक्त करनेकी चाहिये, इस के पीछे स्वामनाचार्य देकर नीचे लिखे हुए पाठों को करना चाहिये

**इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामायिक मुहप-
नी पहिलेहूँ? इच्छे ।**

इसके पीछे जिस एक स्वामनाचार्य के मुहपत्ती का परिशोधन करे, जिस एक स्वामनाचार्य के देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोले—

**इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामायिक संदि-
माते? इच्छे । इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! सामा-
यिक टाउं? इच्छे ।**

इस के पीछे जिस एक स्वामनाचार्य के चदावनन हो कर भोजन का नयका मन्त्र का गुणना कर के नीचे लिखे हुए पाठ को बोले—

इच्छाकारेण मंदिसह भगवन्! पसाय करी सप्त
यिक दंडक उचरायां जी?

इम के पीछे नीचे लिखे हुए करेमि भने ” ममादिह
को मुखचन का अनुभाषण करते हुए तीन वां कहना चाहि-

करेमि भंते! मामाडयं सावर्जं जोगं पञ्चकलामि
जाय नियमं पञ्चुवामामि, दुविहं निविहं मणं
याप काणं, न करेमि न कारयेमि तस्स भंते! एहि
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

कि एक प्रमाणन दकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना
चाहिये—

इच्छाकारेण मंदिसह भगवन्! इरियावहिणं पति
कमामि । इच्छं । इच्छामि पट्टिमिउं । इरियावहिण
विराहणाग गमणागमणे पायाकमणे पीयकमणे हरि
कमणे आमा-उत्तिग-पणग-दग-मट्टी-मकडा-संमाण
संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एहिदिवा तेइदिवा
तेइदिवा अउरिदिवा पंचिदिवा अभिहिया वलि
लेमिया संघादिया संघदिया परिपाविया किलामिया उ
दविया आणाउट्टाणं मंकाभिया जीवियाओ चवरोकि
तसर मिच्छामि दुक्खं ॥१॥

“तमस उठग” का पाठको बोलना चाहिये—

नाम उत्तरीक्षणेण पापविनाशकरणेण विमोही-
 'क्षणेण विमोहीकरणेण पापानां कर्म्मणां निष्ठागुह्या-
 टामि वाडस्मरणं ॥१॥

असम्भ्रमं उत्तरमिच्छन्तं नीममिच्छन्तं त्वामिच्छन्तं त्री-
 णां जम्भाहण्यं उद्दृष्टव्यं पापविमोहोऽयं भूमलिङ्गं वि-
 नमस्तुभ्यम् । सुहृमेति श्रुत्वा चालेति सुहृमेति श्रुत्वा च-
 'चालेति सुहृमेति दिदृक्ष्वचालेति । त्वमाह्वयति आमा-
 'ह्वयति अभयं अविगतिं ह्यहं मे वाडस्मरणं । जाय-
 'महिं तानां भगवन्तां नमुदारेण न पारिषि, ताव कार-
 'णोऽयं मोहोऽयं भूतयोऽयं अन्त्यायं बोधिरामि ॥२॥

इमं के पीठे एक. ' 'लोहम् ' का मध्य ॥ वा दाया का
 'मध्यमं वरदा वाहिदे, तद 'लोहं अविगतिं ' वर वर वाड-
 'म्याय वा दाया वाहिदे, इम के दधन वर वर गति मे नीमो लिये
 'ए 'लोहम् का पाठ वा वरदा वाहिदे

लोहम् उत्तरीक्षणे, भूममिच्छन्तं जिणे । अरिह-
 'मे विमोहम्, चतुर्विधं वि पेश्चर्या ॥ १ ॥ उत्तममजिच्छ-
 'य वंदे, ममममभिणंदने च सुमहं च । पञ्चमपाठं सुपामं,
 'जिणं च वंदय्यते वंदे ॥ २ ॥ सुविहि च पुष्पदंभं,
 'मीअलनिष्ठं च पामुपुष्ठं च । विमलमणं च जिणं,
 'दंभं संति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंभं धारं च मर्हि, वंदे

सीसध्वराण जं किंनि मिच्छाण मणदुष्काण वधदुष्काण
 कायदुष्काण कोहाण मायाण मायाण लोभाण सव्य-
 कालिणाण, मच्चमिच्छोवपाराण सव्यधम्मादुष्कमणाण
 आसापणाण जं मे अहंकारो कथो तस्स यमासमणो !
 पटिप्पामि निंदामि गिरिहामि अप्पार्णं पोसिरामि ॥१॥

इस के पीछे एक यमासज्ज द कर नीचे मिले हुए पाठ को
 ध्याना आदिने

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! मज्झतय संदिमाउ ?

इच्छं ॥

सिद्ध दम । यमासज्ज देकर

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! मज्झतय करं ?

इच्छं ॥

इस के पीछे यमासज्ज देकर आठ नवकाय वर गुणन करना
 आदिने, सिद्ध दम यमासज्ज दे कर नीचे मिले हुए पाठ को ध्याना
 आदिने

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! वेसणे संदिमाउ ?

इच्छं ॥

सिद्ध दम । यमासज्ज देकर

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! वेसणे ठाउं इच्छं ? ॥

यदि भीत आदिके कारण पर भोदने आदिको भावययवना
 है तो एव यमासज्ज देकर—

मुणिसुख्यं नमिजिणं च । वंदामि सिद्धिनेमिं, पासं त्व
 वदमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मण अभियुद्धा, विद्वपरपमला
 पक्षीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थपरा मे
 पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिथ वंदिय महिया, जे ए लोगस
 उत्तमा सिद्धा । आरुग्गयोहिलाभे, समाहिवरमुत्तमं
 दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आह्वेसु अहिपं पण
 मयरा । मागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इसके बाद नीचे बैठ कर चउविहाहा उपवास कीया हो ने
 मुखपत्ती नहीं पहिनेंगे और वादणा भी नहीं देना, परमाज
 भी किया गया हो तो कीर नहीं करना । यदि 'निविहाहा उपवास' हो ने
 मुखपत्ती का पहिनेंगे करना, किंतु वादणा नहीं देना चाहिये को
 यदि 'आयस्मिण एकज्ञान कर मोक्षण किया हो तो मुखपत्ती का
 पहिनेंगे करना और दो बार "मुमुखादता" इनी चाहिये को
 दमरी बार उदणामें "आयस्मिया" वर नहीं करना चाहिये -

इच्छामि स्वामममणो! वदिउं जायगिज्जा, निर्मी
 दिआण थणुजाणह मे मिउग्गहं । निर्मीदि । अहोरा
 कपमंरुमं स्वमगिज्जा मे किलामो आप्पविल्लया
 वट्टमुभेण मे, दिवमां यउंरुं, जणा मे जयगिज्जं च मे
 म्मामेमि स्वमममणो दिवमिणं यउंरुं आयस्मिया
 वदिहमामि स्वमममणार्ण देयनिआण आमायणा, नि

षेस! पास! धंभणपपुरट्टिअ ॥१॥ नइ ममरंन लहंति
 भक्ति वरपुत्तकलत्तइ , धण्णसुवण्णट्टिरण्णपुगण जण
 भुंजइ रज्जइ । पिकखइ सुक्ख अमंखसुक्ख तुह पास
 पसाइण, इच्च निहुजणवरकण्णसुक्ख सुक्खइ पुण मण
 जिण ॥२॥ जरजजर परिजुण्णकण्ण नट्टहु सुकुट्टिण,
 घक्खुक्खीण खण्ण खुण्ण नर सहिय मल्लिण । तुह
 जिण सरणरसायणेण लहुहंनि पुणण्णव, जयधंमरि
 पास मह वि तुह रोगहरो भव ॥३॥ विज्जाजोडसमंम-
 तंतसिद्धिउ अपयत्तिण, सुवणज्जुउ अट्टविह सिद्धि
 सिज्जसहि तुह नामिण । तुह नामिण अपयत्तिअं वि
 जण होइ पपित्तउ. तं निहुअणकट्टायकोम तुह पास
 निगत्तउ ॥४॥ खुदपत्तइ मंमनंतजेमाइ विसुत्तइ, प-
 रधिरगरलगहुग्गयमारिउयमा विगंजइ । इत्थियमन्थ-
 अणत्थयन्थ नित्थारइ दय करि. इत्थिय हरउ म पास
 देउ इत्थियकरि येससि ॥५॥

इसके पश्चात् "अरतिहृदय" की नाचे लिखी हुई छन्दिन
 दो गायिकाओं की संनता आदिदे

जह तुह रुक्मिण किणवि पेअपाटण वेलेपियउ, तउ
 जाणउ जिण पास तुम्ह हउं अंमीकिरिअउ । इय मह

* इच्छा एवं अर्थ इति एव मन्त्रो वेदने वा लिख्ये ।

इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहावणु, रक्खं तह निप-
 कित्तिणेय जुअइ अवहीरणु ॥२८॥ एह महारिय जत्त-
 देव इहु न्हवणमहसउ, जं अणलियगुणगहण तुम्ह
 मुण्णिजणअणिसिद्धउ । इस महं पसिहसुपासनाह
 भंभणपपुरट्ठिअ, इय मुणिवरु सिरिअभयदेव विण-
 षइ आणिदिअ ॥३०॥

इसके पीछे "जयमहायम" को बोलना चाहिये---

जय महायस जय महायस जय महाभाग ज-
 चित्तियसुहकलय, जय समन्थपरमत्थ जाणय जय ज-
 गुरुगरिम गुरु । जय बुद्धित्त-सत्ताण ताणय भंभणपट्ठि-
 पास जिण, भयिषह भीमभयत्यु भयअयं तांताणंत
 गुण तुज्झ तिसंझ नमोत्थु ॥१॥

इसके पीछे नमोत्थुण को बोलना चाहिये---

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगरा-
 तित्थपराणं मयंमंभुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरि-
 मीहाणं पुरिमवरपुंढरीआणं, पुरिमवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
 ओगुत्तमाणं लोमनाहणं, लोमहिआणं, लोमपईआणं
 ओगपद्मोअगराणं ॥ ४ ॥ अमयदयाणं, अकरुदयाणं
 ममदयाणं मरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदया-
 धम्मदेहिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरच-

भगवन्ताणं नमुकारेणं न पारेमिताय कापे ठाप्पेणो
 णेणं क्षाणेणं अप्पाणं थोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक नवकार का काउत्सग करना चाहिये, व
 मनुष्य काउत्सग को पार कर- “ नमोऽर्हसिद्वाचार्योपायान्तरं
 साधुभ्यः ” इस वाक्य को कह कर नीचे लिखी स्तुति को बोले-

श्रीशान्तिनाथजी, साता कारक देव । मनमोहन
 स्वामी, अनुपम मूरति सेव ॥ मुझ रोम हुलसिया, क
 नूँ प्रणमूँ नाथ । शुद्ध समकित मँगूँ, जोड़ प्रभु ॥
 हाथ ॥ १ ॥

उक्त स्तुति को सुनके पीछे अन्य लोग काउत्सग को पारे
 इस के पीछे “लोगरस” को बोलना चाहिये—

लोगरस उच्चोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । जरि
 हते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजि
 य वेदे, संभयमभिणंदणं च सुमइं च । पउमत्तहं तु
 पामं, जिणं च वंदप्पहं वेदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुत्तदं
 सीअत्त सिअंत यासुपुअं च । विमलमगांतं च जिणं
 धम्मं मंतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं, वं
 मुणिगुट्थयं नमिजिणं च । वंदामि रिद्धनेमि, पासं तह
 यदमाणं च ॥ ४ ॥ एयं मए अमिधुआ, विहपरपमत्ता
 पट्ठाण-जर-माणा । चउवीसंपि जिणयरा, तित्थयरा मे
 परीपंतु ॥ ५ ॥ किंजिय वंदियमहिआ, जे एलोगत्स

सिद्धा । आरम्भोद्दिष्टार्थं, ममादिपरमुत्तमं
 दिनु ॥ ६ ॥ चंद्रेषु निम्नलपरा, आदयेषु महिषं वषा-
 त्सपरा । सागरपरमेष्वा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसेतु
 ॥ ७ ॥

एग के, एते "मन्त्रोद्दिष्टार्थं" अर्थात् "मन्त्रोद्दिष्टार्थं" के लिये काउत्तमार्थं
 इत्येवम् "मन्त्रोद्दिष्टार्थं" के लिये काउत्तमार्थं—

वेदययसिध्याय पूजययसिध्याय स्वरययसिध्याय
 मन्त्रययसिध्याय योद्दिष्टार्थययसिध्याय निरवसगाय-
 सिध्याय मन्त्राय मेहाय विद्महे वायवाय अणुपेहाय
 वट्टमाणीय इमि काउत्तमार्थ ॥ १ ॥

एग के, एते "मन्त्रोद्दिष्टार्थं" के लिये काउत्तमार्थं—

अथ उक्तमिदं मन्त्रोद्दिष्टार्थं एवमिदं मन्त्रोद्दिष्टार्थं
 जेमाहर्णं वट्टमाणीय ययनिसगोमं भमलिपि विसमुद्धा-
 य सुहमेहि अंगसंपालेहि, सुहमेहि नेत्रसंपालेहि,
 सुहमेहि दिदिसंपालेहि, एवमाहर्णं आगारेहि अमगो
 अविराहिमो ह्यम मे काउत्तमार्थ । जय अरिहंमाणं
 भगवन्माणं नमुकारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेतां माणेणं
 माणेणं अणुपेहाय योसिरामि ॥ १ ॥

एग के, एते एक मन्त्रोद्दिष्टार्थं काउत्तमार्थं वट्टमाणीय के लिये
 सन्तुष्ट एक मन्त्रोद्दिष्टार्थं काउत्तमार्थं के लिये काउत्तमार्थं के लिये

घंदणवसिष्ठाए पूअणवसिजाए सफारवसिष्ठाए
सम्माणवसिष्ठाए पांडिहाभवसिष्ठाए निरुपसुग्गय-
सिजाए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए
बहुमाणोए ठामि काउत्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे " कवत्थ " को बोलना चाहिए—

अमत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
अंभाइएणं उड्डुएणं पापनिसग्गेणं भमल्लिण पित्तमुच्छा-
णं सुहमेहि अंगसंचालेहि सुहमेहि रेलसंचालेहि,
सुहमेहि दिट्ठिसंचालेहि, एवमाइएहि आगारेहि अमग्गो
अपिराहिओ सुख मे काउत्सगो । जाय अरिहंताणं
भगवन्नायं नमुप्पारेणं न पारेमि ताव काये ठायेणं मोणेणं
ज्ञाणेणं अप्पाणं पोसिरामि ॥ १ ॥

एक नरकारका काउत्सग को इसे पार कर एक स्तुत्य को
पीछे लिखी हुई तीसरी स्तुति को बोलना चाहिए—

घर आगम जिनवर भाये अर्थ विचार , श्रीगण-
घर गुरु ते गूँध्या गुण हितकार । हे श्रीसठ सकल को
उत्कृष्टो आपार , निज नित भवि तेवो श्रुतसागर
सुराकार ॥ ३ ॥

इस के पीछे " निद्धातं पुद्दातं " को बोलना चाहिए—

सिद्धाणं पुद्दाणं, पारमयाणं परंपरगयाणं । लोअ-
मासुषगयाणं, ममो सथा सत्थसिद्धाणं ॥१॥ जो देवा-

णवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिं
 सिरसा धंदे महावीरं ॥ २ ॥ इकोवि नमुकारो, जिणवा-
 वसहस्स वट्ठमाणस्स, संसारसागराद्यो, तारेइ नरं व
 नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जित-सेल-सिद्धरे, दिक्खा नाणे नि-
 सीद्धिआ जस्स । तं घम्मचक्खहिं, अरिट्ठिनेमि नमंस्सामि
 ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा वड-
 ष्यासं । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंनु ॥ ५ ॥

इस के पीछे "वेभावयगराणं" को बोलना चाहिये—

वेभावयगराणं संतिगराणं सम्महिट्ठिसमाहिगराणं
 करेमि काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे "अमत्थ ऊससिण्णं" को बोलना चाहिये,

अमत्थ ऊससिण्णं नीससिण्णं खासिण्णं छीण्णं
 जंभाइण्णं उट्ठुण्णं धापनिसग्गेणं भमल्लिण्णं पित्तनु-
 ष्छाण्णं । सुट्ठमेहिं अंगमेचालेहिं सुट्ठमेहिं खेलमेचा-
 लेहिं सुट्ठमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगारेहिं
 अममागे अविराद्धिओ ह्रस्व मे काउस्सगो । जाय अ-
 रिट्ठेताणं अगवेत्ताणं नमुकारेणं न पारेमि, ताव कायं
 टायेणं मोणेणं इगणेणं अप्पाणं पोसिरामि ॥ २ ॥

एक नरका का कारणमान करे पीछे एक आदमी काउस्सग
 को पाकर "नमोऽर्हं महापायोरायाणमस्माभुवः" इग वाक्य

को कह कर नीचे लिखी हुई चौकी स्तुति बड़े जोर से मनुष्य
स्तुति को सुन कर पीछे काउस्तग को पारें—

ॐ जिन द्वासनदेवी सकल मनोरथ पूर, कर म-
ल माला मय सङ्कट को चूर । सुख पूरण स्वामी
खरतरगच्छ सुखखान , इन सब को यन्दे क्षेमसागर
शुभध्यान ॥ ४ ॥

इस के पीछे बैठ कर “नमोस्तुतं” बोलना चाहिये—

नमोस्तुतं अरिहंताणं भगवन्नाणं ॥ १ ॥ आहगराणं
सित्थपराणं सपंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-
सौहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसपरमंभहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईयाणं,
लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अमवदयाणं, चक्खुदयाणं,
मग्गदयाणं सरणदयाणं पोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं
धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचा-
उरंतच्चयदीणं ॥ ६ ॥ अप्पहिह्यवरनाणदेसणधरा-
णं पियट्टउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावपाणं तिप्पाणं
सारपाणं बुद्धाणं पोहयाणं सुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्यघूणं सव्यदरिमीणं सिद्धमयलमरुअमणं नमस्सव-
मज्जापाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामपेयं ठायं संप-
त्ताणं नमो जिणाणं जिअमयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अइ-

एतं कसराणां वंदनमनुज्ययाणं विगतं शुभज्ययाणं
एतं मित्तदायकाणं धारमविहस्य मायमधम्मस्य जं
एतं जं विगतिजं नम्म मिच्छामि दुषाटं ॥ १ ॥

इस के दोहे " नम्म इती वो " वंदन काटिये—

माय उल्लसससोयं पायमिच्छसवत्थेयं विमोही-
एतं विमोहीवत्थेयं पायाणं कम्मयाणं निग्घाषणद्वारा
मि काउस्मग्गं ॥१॥

इस के दोहे " इममिच्छस " का भोजन काटिये—

अज्जस्य उममिच्छसं नीममिच्छसं ग्यामिच्छसं जी-
जंभादणं उहट्टणं पायनिमग्गोयं भमलित्ति वि-
मुच्छाण । सुहमेहिं अंगमंचालेहिं सुहमेहिं सेलसं-
लेहिं सुहमेहिं दिट्ठिमंचालेहिं । ग्वमाइणहिं आगा-
हं अभग्गो अविराहिजं हृत्थ मे काउस्मग्गो । जाय
रिहंमाणं भग्गंभाणं नमुत्तरेणं न पारेमि, ताय कायं
पेगं मोणेणं भाणेणं जणायं योमिरामि ॥१॥

इस के दोहे " इह नोकाय का काउस्मग्ग कायना काटिये ।

हे " नोको काउस्मग्ग " का का काउस्मग्ग को पाय का प्रसद
मि मे " मोदयत " को भोजन काटिये—

नोगस्म उज्जाजगरे, धम्मनिन्धगरे जिणे । जरिहं-
मित्तदस्सं, पट्ठोयं वि वेय्यं ॥ १ ॥ उसभमजिणं

च वंदे, संभवमभिर्दणं च सुमहं च । . . .
 जिणं च चंदप्यहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुष्पमं,
 मीअलसिच्चंस वासुपुञ्जं च । विमलमणं च जिं
 धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं, के
 मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिद्धनेमिं, पासं त
 वट्टमाणं च ॥ ४ ॥ एवं सए अमिधुआ, विह्वरफम
 पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तिस्थरा मे
 पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्ति य वंदिय महिया, जे ए लोका
 उत्तमा सिद्धा । आरुग्गपोहिलामं, समाहिक्कमुत्तमं
 दित्तु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आइवेसु अहियं प
 मपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ अ

इस के पीछे संडासा का प्रमार्जन कर बैठ कर तीजे आवर-
 ५ की मुखपंथी का पडिलेहन करना चाहिये, इस के पश्चात् नीचे
 लिखे हुए पाठ से 'मुगुर वन्दना' करना चाहिये—

इच्छामि सत्तासमणो! वंदितं जावणिआए निसी
 हिआए अणुजाणाह मे मिउगाहं । निमीहि । अहोकार
 कयसंकासं सत्तासमणो मे किलामो अप्पकिलतायं
 पट्टसुभेण मे, दिवसो वदकंमो, जत्ता मे जवणिअं च मे,
 स्वामेमि सत्तासमणो देवसियं वदकंमं आबस्सियाए
 पट्टिप्पमामि सत्तासमणाणं देवसिआए आसायणाए ति
 सीसअपराए अ किं पि मिच्छाए मणहुकडाए वयहुकडाए

स्यदुष्टदा? कोटा? माणा? माया? शोभा? सख-
 त्रिपा? सखमिच्छोवपा? सखधम्मादकमपा? ए
 मासायणा? ओ मे अह्मरो कओ तस्स लमासमणो!
 सद्वत्तामि निदामि गिरिहामि अप्पाणोमिरामि ॥ १ ॥

वह पाट दो बार बोलना । हम में हमरा बार 'आवमिपाए'
 रह नहीं बोलना चाहिये ।

हम के पीछे कनक में ही लड़े रह कर नीचे निचे हुए पाट
 को बोलना चाहिये—

हृष्टावदरेण मंदिसह भगवन्! देवमित्रं आलोडं?
 हृष्टं । आलोमि ॥ १ ॥

हम के पीछे " ओ मे देवमित्रो " को बोलना चाहिये -

ओ मे देवमित्रो अह्मरो कओ कइओ बाइओ
 भाणमिओ उस्तुत्ता उम्मगो अकप्पो अकरणिओ दु-
 ज्जाओ दुत्थिपिनिओ अणागरो अणिद्विपण्यो अ-
 सावगपाउगो भाणे तह देसणे चरिस्ताचरिणे सुए मा-
 माइए । निघह गुत्तीणं चउण्हं कत्तागायां पंचणहमणु-
 व्वयाणं निण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं मिहसायपायां चार-
 सविहस्स मायगधम्मस्स ओ म्हेदियं ओ विगट्टिये तस्स
 मिच्छामि दुक्कटं ॥ १ ॥

हमके पीछे नीचे निचे हुए = आगुया आगहर " इत्यादि
 पाट दो बोलना चाहिये—

अनुगत चार प्रहर दिन में मैंने जो

सात लाख पृथिवीकाय, मान लाख अप्काय, सा
लाख तेडकाय, सान लाख वायुकाय, दश लाख प्रत्ये
क घनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण घनस्पतिकाय,
दोय लाख वेडन्द्रिय, दोय लाख तेडन्द्रिय, दोय लाख
चौरिन्द्रिय, चार लाख देवना, चार लाख नारकी, चार लाख
तिर्यक्पञ्चेन्द्रिय चौदह लाख मनुष्य, एवं चार गति
के जीरमा लाख जीवायानि में मेरे जीव ने जे कौ
जीव हण्यो होय हणाय्यो होय हणनां प्रत्ये भलो जा
ण्यो होय ते मय्ये हँ मने वचने काया में करी मम
मिच्छामि दुषटं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिख पाठ का बोलना चाहिये

प्राणानिषान मृषावाद् अदनादान मैथुन परि
ग्रह क्रोध मान माया लोभ राग छेप कलह अभय
ग्लान पशुन्य गति अरति परपरिवाद मायामृषाया
मिथ्याम्यगल्य, ये अटारे पापम्यानक मेव्या होय, ते
गल्य होय मेवनां प्रत्ये भला जाण्यो होय ते मय्ये
मन वचन काया में करी मम मिच्छामि दुषटं ॥ १

इस के पीछे नीचे लिख पाठ का बोलना चाहिये

ज्ञान दर्शन चारित्र्य पारी पोथी उदणो कयली न
उबाली दिव गुरु धर्म की आज्ञातना करी होय, प

कर्मदानो वः प्यायेयता वरी ताय गडक्यते हेताकथा
 निरुद्धा भवावता वरी ताय. ध्याय ता वरं पाप पर-
 निन्दति वंशुं दीप, कमायुं ताय. वरमा अनुमोदुं दीप
 सो मरी मदे मयने मयमये पर व दिन अनिषात अन्त
 पत्त काये पतिष्ठमता मे ध्यानाई मन्म मिच्छामि
 दूष्टं ॥ १ ॥

तथा पत्त व ताय त वरं. व म वरं व नी
 मरिदे ताय व ताय वरं. वरं वरं वरं वरं

मयममयि देवमिय दूषितिय दूषितामिय दूषितिय
 इच्छाकयेत मंतिमा भगवन् ! इच्छं । मन्म मिच्छामि
 दूष्टं ॥ १ ॥

तथा पत्त व ताय त वरं. व म वरं व नी
 मरिदे ताय व ताय वरं. वरं वरं वरं वरं

भगवन् ! मय भगवन् ? इच्छं ।

तथा पत्त व ताय त वरं. व म वरं व नी
 मरिदे ताय व ताय वरं. वरं वरं वरं वरं

करमि भंते ! मयममयि मयममयि मयममयि
 जाय निरुद्ध पञ्चुशान्तामि दूषितं निरुद्धं मयममयि
 पञ्चुशान्तामि न करमि न पञ्चुशान्तामि नमम भंते ! पञ्चुश-
 मामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं धोतिरामि ॥ १ ॥

अनुणा चार प्रहर दिन में मैंने जो विराट्
 सात लाख पृथिवीकाय, मान लाख अष्काय,
 लाख तेरुकाय, मान लाख वायुकाय, दश लाख
 कं वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय,
 दोष लाख नेइन्द्रिय, दोष लाख नेइन्द्रिय, दोष लाख
 र्धारिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख
 तिर्यञ्चनेन्द्रिय चौदह लाख मनुष्य, एवं चार गति
 के चौरसी लाख जीवायोनि में मेरे जीव ने जे कों
 जीव हण्यो होय हणाय्यो होय हणानां प्रत्ये भली जा
 ण्यो होय ते सच्चे हैं मने वचने काया ये करी तस्मि
 मिच्छामि दुक्कटं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे पाठ का बोलना चाहिये—

प्राणानिपात मृपावाद अदत्तादान मैथुन परिः
 ग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्या-
 नुशान पैशुन्य रति अरति परपरिवाद माया मृपावाद
 मिथ्यात्यशक्त्य, ये अठारे पापस्थानक सेव्या होय, सेव-
 राव्या होय सेवतां प्रत्ये भली जाण्यो होय ते सच्चे हैं
 मन वचन काया ये करी तस्मि मिच्छामि दुक्कटं ॥ १ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे पाठ को बोलना चाहिये—

ज्ञान दर्शन चारित्र्य पाठी पोथी टवणी कबली नव-
 कारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पनरे

तद् संपन्नो कुलिगीस्तु । सम्मत्तस्तद्भारे, पट्टिकमे दे-
 वसिपं सव्यं ॥ ६ ॥ हृत्कायसमारंभे, पयणे अ पयाघणे
 अ जे दोस्ता । अत्तद्वा य परद्वा, उमपद्वा नेय तं निदे
 ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्यपाणं, गुणव्यपाणं न तिण्हमह-
 भारे । सिक्खपाणं न चउण्हं, पट्टिकमे देवसिपं सव्यं
 ॥ ८ ॥ पडमे अणुव्यपंमि, धूलगपाणाइयायविरईओ ।
 आपरिअमप्यसत्थे, इत्थ पमायप्यसंगेणं ॥ ९ ॥ यह
 गणविच्छेए, अइभारे भसपाणयुच्छेए । पडमययस्स-
 भारे, पट्टिकमे देवसिपं सव्यं ॥ १० ॥ वीए अणुव्यपं-
 , परियूलगअलियययणविरईओ । आपरिअमप्य-
 , इत्थ पमायप्यसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसारहस्स दारे,
 अ कूटलेहे अ । वीपययस्सइभारे, पट्टिकमे
 सव्यं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्यपंमि, धूलगपरद-
 विरईओ । आपरिअमप्यसत्थे, इत्थ पमायप्य-
 ॥ १३ ॥ तेनाहट्ठपओगे, तप्पट्ठिरुत्थे विच्छद्वा-
 । कूटतुलकूटमायो, पट्टिकमे देवसिपं सव्यं ॥
 चउत्थं अणुव्यपंमि, निपं परदारगमणविरईओ ।
 , इत्थ पमायप्यसंगेणं ॥ १४ ॥ अप-
 इत्तर, अजंगविवाह तिप्पअणुरागे । चउ-
 तद्भारे, पट्टिकमे देवसिपं सव्यं ॥ १५ ॥ इत्तो
 ए पंचमंमि आपरिअमप्यसत्थंमि । परिमाणय-

इम के पीछे “ इच्छामि पटिक्कमित्तं जो मे देयमिध्मां ” के
बोलना चाहिये—

इच्छामि पटिक्कमित्तं जो मे देयमिध्मां अइज्जातां
कओ काइओ याइओ माणसिओ उम्मुत्तां उम्म्मओ
अकप्पो अकरणिओ दुज्झाओ दुत्थिचिन्तिओ अण-
घारो अणिच्छियओ अमायगपाउग्गां नाणे तह् दंस-
णे चरिस्ता चरित्ते सुणं मामाइणं निण्हं गुत्तीणं चउ-
ण्हं कसापाणं पंचण्हमणुव्ययाणां निण्हं गुणव्ययाणं च-
उण्हं सिक्खवाययाणं चारसयिहस्स मायगधम्मस्स जं
खंडिअं जं विराट्ठियं तस्स मिच्छामि दुक्कहं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए ‘वदितुसूत्र’ पाठको बोलना चाहिये—

वदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मापरिणं अ सव्वसाहं अ
इच्छामि पटिक्कमित्तं, सावगधम्माइअरस्स ॥ १ ॥ जं
मे यपाइअरो, नाणे तह् दंसणे चरित्ते अ । सुहुमे
अ पापरो वा, तं निदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ बुद्धिं
परिगहंमि, सावझे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ
करणे, पटिक्कमे देवसियं सव्वं ॥ ३ ॥ जं चट्ठमिदिएणि
चउहिं कसाण्हिं अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तं
निदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निगमणे, ठाणे
चंकमणे अणामोणे । अभिओगे अ निओगे, पटि-
क्कमे देवसियं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंखविगिच्छा, पसं

तद् संपद्यो बुलिगीसु । मन्मत्तस्सह्यारे, पट्टिममे दे-
 वसिपं सत्यं ॥ ६ ॥ दृष्टापसमारंभे, पयणे च पयायणे
 अ जे दोमा । अत्तहा य परहा, उभयहा नेच तं निदे
 ॥ ७ ॥ पंचणहमणुच्चयाणं, गुणच्चयाणं च तिण्हमह-
 मारे । मिद्वयाणं च चउण्हं, पट्टिममे देवसिअं सत्यं
 ॥ ८ ॥ पट्टमे अणुच्चयंमि, धूलगपाखाइयायविरहंओ ।
 आपरिपमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ ९ ॥ यह
 वंषउविज्जेण, जइभारे वत्तपाणयुच्चेण । पट्टमवयस्स-
 इभारे, पट्टिममे देवसिपं सत्यं ॥ १० ॥ धीए अणुच्चयं-
 मि, परिधूलगअलियवयणविरहंओ । आपरिपमप्प-
 सत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ ११ ॥ सहसारहस्स वारे,
 मोसुवपमे अकटलेहे अ । धीयवयस्सइभारे, पट्टिममे
 देवसिपं सत्यं ॥ १२ ॥ तइए अणुच्चयंमि, धूलगपरद-
 व्वहरणविरहंओ । आपरिपमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्प-
 संगेण ॥ १३ ॥ तेनाहहप्पओगे, नप्पट्टिरुत्थे पिच्छग-
 मणे अ । कटतुलकटमाये, पट्टिममे देवसिपं सत्यं ॥
 १४ ॥ चउत्थे अणुच्चयंमि, निषं परवारगमणविरहंओ ।
 आपरिपमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ १५ ॥ अप-
 रिगहिआ इत्तर, अणंगविवाह निध्यअणुरागे । चउ-
 त्थवयस्सइभारे, पट्टिममे देवसिपं सत्यं ॥ १६ ॥ इत्तो
 अणुच्चयं वंषयंमि आपरिपमप्पसत्थंमि । परिमाणप-

चित्तं, इत्येवमपि वसंता ॥ १७ ॥ धनयज्ञसिद्धय-
 म्, सप्तमं च अ कुर्वित्वा परिमाणे । द्रुपद चतुर्विंश-
 म्, पत्नियुगे देवसिद्धये ॥ १८ ॥ गमणस्मृत परिमाणे,
 दिव्याम्बु उद्रे यज्ञे अ नि र्गच्छेत् । बुद्धिसद्व्यवहार-
 पदमंमि गुण-व्यापिनि ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ,
 पुण्ये, अ कले जा म कले ॥ २० ॥ धर्मोपपत्तिपरिमाणे, दी-
 र्घमि सप्तमं च निद ॥ २१ ॥ दत्तं पट्टियद्वे, अपोति
 दृष्टान्ति के च प्राप्ते ॥ २२ ॥ मद्रिभक्त्यवस्थाया, पंडि-
 क्रमे देवसिद्धये ॥ २३ ॥ उदरे । वगमादी, भाडीको
 दी सुवज्राय कम्म । दत्ते । सप्तमं चतुर्विंशत्यवस्थाया, पंडि-
 क्रमे देवसिद्धये ॥ २४ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥
 ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

एण निदे ॥ २८ ॥ संथाग्घारविही-पमाय मह पेय
 भोयणाभोण । पोमहविहिवियमाण , महण सिक्खत्वा-
 एण निदे ॥ २९ ॥ मन्विने निविग्गयणे , विहिणे-
 ययणम-मच्छरे पेय । कालाहकमदाणे , चउत्थे सि-
 कखाएण निदे ॥ ३० ॥ सुत्तिणसु अ इत्तिणसु अ ,
 जा मे अमंजणसु अणुक्कंथा । रामेण य दांसेण य ,
 मे निदे मे य गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहसु मंघिभागो ,
 न कप्पो नवणरणकरणमुत्तेसु । मंने फासुअदाणे , मे
 निदे मे य गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोण परलोण , अविअम-
 एणे अ अमंसवभांणे । पंयविहो अइपारो , मा म-
 उमे हउअ मणो मे ॥ ३३ ॥ वणण काइअस्म , पडि-
 कमे वाइअस्म वायाण । मणमा माणमिअस्म , सय्य-
 म्म ययाइअस्म ॥ ३४ ॥ बंदणययमिक्खलागा-रयेसु
 मत्ताकत्तायइहेसु । गुत्तिसु अ सनिईसु अ , जो अइ-
 आरोअ मे निदे ॥ ३५ ॥ मम्महिही जीणो , जइ यि हू पायं स-
 मापरइ विवि । अणो मि होइ वेथां , जेण न निदंघसे
 कुणइ ॥ ३६ ॥ मे वि हू मपडिअमणं , मणरिआयं स-
 उत्तरगुणं य । म्दिप्यं उयसामेइ , वाहिअय सुसि-
 विअणो विअो ॥ ३७ ॥ जहा दिमं कुट्टमयं , मंतमसवि-
 मारया । विअा हणंनि मंनेहि , सो मे हवइ निव्विमं
 ॥ ३८ ॥ एवं अट्टविहं कम्मं , रागदोससमव्विअं ।

आलोअंओ अ निर्दंओ, गिणं हणइ सुमारओ ॥ ४० ॥
 कणपाओवि मणुम्मो, आलोइअ निर्दिग सुम्मगामे
 होइ अइरंगलहूओ, ओअगिअमरुअ भाग्यहो ॥ ४१ ॥
 आयस्सण णण मायओ जइ वि यइओ होइ । इ
 पयागधंमकिरिअं, कइओ अभिगंता कालेण ॥ ४२ ॥
 आलोअणा यहुयिहा, नय संमरिआ पडिअमणक
 । मूलगुण उत्तरगुणे, नं निर्दे नं च गरिहामि ॥ ४३ ॥

इस के पदान् स्पष्ट हो कर " अदिग " गुरु का नी

लिता हुआ अवशिष्ट पाठ संलग्न आदिग - -

तस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्म । अञ्जुट्ठिआंमिह आरा
 णए, विरओमिह विराहणाए । निविहेण पडिअंओ, वेदा
 जिणे चउर्यासं ॥ ४३ ॥ जायंति चेइआइं, उट्ठे
 अहे अ निरियलोए अ । सज्जाइं ताइं वेदे, इह सं
 तत्थ संजाइं ॥ ४४ ॥ जायंते के वि साह, भाहेरव
 महाविदेहे अ । सव्वेसि तेसि पणओ, निविहे
 निर्दंअविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीए
 भय-सय-सहस्समहणीए । चउर्यासजिणविणिग्गय
 हाइं षोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम संगहमरि
 ता, सिद्धा साह सुअं च धम्मो अ । सम्मदिट्ठी दे
 दितु समाहिं च योहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं क
 किष्ठाणमकरणे पडिअमणं । असहणे अ तथा, वि

इच्छाकारेण भंदिमह भगवन् ! अञ्जुद्विभोमि,
अद्विभंनर देवसिअं स्वामेउं? इच्छं स्वामेमिदेवसियं॥१॥

उक्त पाठ को बान क गोइली धामन में बैठ कर कर्ते
हाथ से मुद्राओं को मुग पर रख कर तथा दाहिने हाथ को गुह
के सम्मुख रख कर “ अञ्जुद्विभो ” बोझा चाहिये—

जं किंचि अवसियं परपसियं भसे पाणे विणण
वेआयवे आलावे संलावे उचासणे समामणे अंनरभा-
साण उवरिभासाण जं किंचि मइह विणपरिहोणं
सुहुमं या पापरं या तुम्वे जाणह अहं न जाणामि
तस्स मिच्छामि दुक्कहं ॥ १ ॥

इस के पीछे दो बार ‘सुगुरुवाणा’ देनी चाहिये—

इच्छामि स्वमासमणो! भंदिउं जावणिज्जाण निसी-
हिआण अणुजाह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं काय-
संकासं स्वमणिज्जां भे किल्लामो अप्पकिलंताणं बहुसु-
भेण भे दिवसो वइक्कमो। जत्ता भे जवणिज्जे च भे स्वा-
मेमि स्वमासमणो। देवसिअं वइक्कमं। आवरिसआण पडि-
क्कमामि स्वमासमणाणं देवसिआण आसायणाण तित्ति-
सन्नपराण जं किंचि मिच्छाण मणदुक्कडाण वपदुक्कडाण
कायदुक्कडाण कोहाण भाणाण भायाण लोभाण सब्ब-
कालिण सब्बमिच्छोवयाराण सब्बघम्माइक्कमणाण आ-
सायणाण जो मे अइआरो कब्बो तस्स स्वमासमणो।

पट्टिमामि निन्दामि गरिणामि अप्पणं वोगि-
रामि ॥ १ ॥

एत के पदे " एतदिदमप्यस्य " को वचन पढ़िदे—

आपरिपुष्यज्जाण, मीमे माग्मिण कुल्लगणे अ ।
जे मे वेद वग्गाणा, मय्ये निदिहेण गामेमि ॥ १ ॥
एवमममममेवम भगवओ अज्जलि कस्सि मीमे ।
मय्ये वग्गाणा, लमामि मय्यस्य अहरेवि ॥ २ ॥
एवमम जीपरामिमम भावओ पम्मनिहिमनिअवि-
णो । मय्ये वग्गाणा, लमामि मय्यस्य अहरेवि ॥ ३ ॥

एत के पदे " वोगि मने " को वचन पढ़िदे—

करेमि भेमे! मामाहरे मावज्जे जोगे पहरयामि,
जाव निपमं पज्जुवामामि, वृषितं निदिहेण मणेरं वा-
पाण वग्गाणं, म करेमि न करयेमि तस्म भेमे! पट्टि-
मामि निन्दामि गरिणामि अप्पणं वोगिरामि ॥ १ ॥

एत के पदे " इच्छामि टामि " वचन पढ़िदे—

इच्छामि टामि वज्जम्ममं जो मे देवमिथो उह-
आरो वज्जो वज्जओ वाहओ माग्मिओ उम्मुत्तो उ-
म्ममो अज्जणो अज्जणिओ वुड्ढाओ वृद्धिचिन्तिओ
जग्गाणो अणिनिद्धमन्यो अमायगपाउमो नाणे तह
इमणे गरिणापरिमे सुणं मामाहण । निणं सुत्तीणं
पइणं वग्गाणं वग्गाणमणुवग्गाणं निणं सुग्गाणं

पामं, जिणं च चंदणं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुण्यदत्तं,
 शीघ्रं विभ्रं च वासुपुत्रं च । विमलमणंतं च जिणं,
 धम्मं वेदिं च वेदामि ॥ ३ ॥ कुंतुं धर्मं च मद्दि, वंदे
 मुणिसुज्यं नमिजिणं च । वेदामि रिद्धेमि, पामं मह
 पदमार्गं च ॥ ४ ॥ एवं मणं अभिधुमा, दिहपरमला
 पहीण-जर-मरणा । चडवीसंपि जिणपरा, नित्यपरा मे
 परीयंतु ॥ ५ ॥ विनिपयंदियमदिषा, जं न लोमस्स
 उलमा मिद्धा । आग्गयंदिस्सामं, ममादिषामुत्तमं
 दिनु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आदेषु अहिं पपा-
 सपरा । मागपगंभीरा, मिद्धा मिदि धम दिसेंतु
 ॥ ७ ॥

सव्यलोणं अरिहंतचंदणं वंदेमि वाउत्तमं ॥ १ ॥

वेदण्यतिष्ठाणं पुअण्यतिआणं सत्तारयतिष्ठाणं
 सम्माण्यतिआणं वेदिमभवतिआणं निरयसगाव-
 तिष्ठाणं मट्टाणं मेहाणं विट्ठेणं पारयाणं अणुपेहाणं
 पट्टमार्णाणं टामि वाउत्तमं ॥ २ ॥

अरान्ध उअमिणं नीसमिणं खासिणं स्त्रीणं
 अभाइणं उट्टुणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमु-
 प्पाणं सुहमेहिं अगमंचालेहिं, सुहमेहिं वेजसेचालेहिं,
 सुहमेहिं दिट्ठिसेचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अमगो
 अविरादिष्ठां हृत्त मे वाउत्तमं । जाय अरिहंताय

चउण्हं मिस्सयावयाणी पारमहिद्दस्स मावगग्गम्मस्स उं
पंडितं जं विगहिं मम्म मिच्छामि दुक्कटं ॥ १ ॥

इस पाठ को बोध का “ पारमिदुद्धिनिमित्तं बोधि काउ-
स्सगं ” कहें इसके पीछे “ मम्म उ०/१ ” बोलना चाहिये—

मम्म उच्चगिरुत्तरेणं पापच्छित्तकरणेणं यिमोशी-
करणेणं विमद्वाकरणेणं पायाणं कम्मणं निग्गायगद्धा-
ठामि काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे “ अन्नत्थ ” बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊममिण्णं नाममिण्णं खामिण्णं ह्माणं
जंभाइण्णं उद्धुण्णं पापनिमगोणं भमन्दिण् पित्तमु-
च्छाण् । सुहमेहि अंगमंचालेहि सुहमेहि खेलसंचा-
लेहि सुहमेहि दिटिसंचालेहि । एवमाइण्हि आगारेहि
अभगं अविराट्ठिओ हृत्त मे काउस्सगो । जाव अ-
रिहत्ताणं भगवत्ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव काउ-
ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं बोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे दो “ लोगम्म ” का बोधो भाठ नरक
का काउस्सग करना चाहिये । इस के पीछे दर्शनशुद्धि के निमित्त
प्रकटरीति में “ लोगम्म ” बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थगरे जिणे । अरि-
हंते कित्तइस्सं, चउवासेपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिमे
च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमण्हं सु-

पासे, जिगं च चंद्रमहं वंदे ॥ ६ ॥ सुविहिं च पुष्पदंतं,
 मोक्षाय मित्रेण यासुपुत्रं च । विमलमंगलं च जिगं,
 धम्मं सेवि च वंदामि ॥ ७ ॥ कृंतुं चरं च महिं, वंदे
 मुणितुल्यं नमिजिगं च । वंदामि रिद्धनेमिं, पासं सह
 यद्धमाणं च ॥ ८ ॥ एवं मण अभिषुआ, दिहपरमला
 पहीण-जर-मरणा । चडवीसंपि जित्तपरा, तित्तपरा मे
 पसीयंतु ॥ ९ ॥ कित्तिपवंदियमहिणा, जे ए लोणस्स
 उत्तमा सिद्धा । आसगणेहिल्लभं, ममाहिपरमुत्तमं
 दिहु ॥ १० ॥ वंदेसु निम्मलपरा, आइसेसु अहिपं पया-
 मपरा । सागरपरमंभीगा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु
 ॥ ११ ॥

मय्यलोए अरिहंसचंद्रमणं करेमि वडस्सगं ॥ १ ॥

वंदणवत्तिआए पूजणवत्तिआए सत्कारवत्तिआए
 सम्माणवत्तिआए पोहिल्लभवत्तिआए निच्चमगव-
 त्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए
 वट्टमाणंए ठामि वडस्सगं ॥ २ ॥

असन्ध उम्भनिणं नीमसिण्णं स्वासिण्णं हीएणं
 जंभाइणं उट्टुणं पायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमु-
 प्पहाए सुहमेहिं धम्मसंचालेहिं, सुहमेहिं रोजसंचालेहिं,
 सुहमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइणहिं आगारेहिं अभग्गे
 अविरादिभो हए मे वडस्सग्गे । जाव अरिहंताय

[illegible][illegible]

तुलनापदीवन्द, पापदोषं च तं दर्शयं च
 भगवत्पादविन्द, पद्माङ्गणे ममेतावि ॥ १ ॥ नमो
 विष्णवे विन्द, गङ्गाय नमो गङ्गाय विन्द, गङ्गाय
 परमेश्वर, पद्माङ्गणे ममेतावि ॥ २ ॥ नमो गङ्गाय
 रत्नमोगङ्गाय नमो गङ्गाय, पद्माङ्गणे ममेतावि ॥ ३ ॥
 नमो गङ्गाय नमो गङ्गाय, पद्माङ्गणे ममेतावि ॥ ४ ॥
 नमो गङ्गाय नमो गङ्गाय, पद्माङ्गणे ममेतावि ॥ ५ ॥
 नमो गङ्गाय नमो गङ्गाय, पद्माङ्गणे ममेतावि ॥ ६ ॥
 नमो गङ्गाय नमो गङ्गाय, पद्माङ्गणे ममेतावि ॥ ७ ॥
 नमो गङ्गाय नमो गङ्गाय, पद्माङ्गणे ममेतावि ॥ ८ ॥
 नमो गङ्गाय नमो गङ्गाय, पद्माङ्गणे ममेतावि ॥ ९ ॥
 नमो गङ्गाय नमो गङ्गाय, पद्माङ्गणे ममेतावि ॥ १० ॥

इस के पीछे " बंगवनिवास " योजना साक्षिपे-

यदणवतिआणं पुअगवतिआणं सम्मारवतिआणं
सम्माणयत्तिआणं पोहिन्नाभवत्तिआणं निरुयसग्ग
त्तिआणं सद्दाणं मेहाणं चिईणं धारणाणं अणुण्णैह
वड्डुमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इम के पीछे ॥ अथ ॥ सोमना चाहिये—

आत्म्य ऊत्समिणं नीसमिणं स्वासिण्यं धीणं
 जंभाइणं उडुणं पापनिसग्गेणं भमसिणं पित्तमुच्छा-
 णं सुहमेहिं अंगमंघालेहिं सुहमेहिं सेलसंघालेहिं,
 सुहमेहिं दिट्ठिमंघालेहिं, एवमाइणं आगारं हि अमगो
 अविराहिओ ह्म मे काउत्समगो । जाव अरिहंताणं
 भगवन्ताणं नमुकारेणं न पारेमि ताव कायं ठायेणं मोणेणं
 भाणेणं अप्पाणं सोसिरामि ॥ १ ॥

इम के पीछे एक " सोमम्म " का अर्थ बार सबकार का
 काउत्समग करना चाहिये । काउत्समग पाकरके "सिद्धये बुद्धाय"
 को सोमना चाहिये—

मिद्धाणं बुद्धाणं, पारमपाणं परंपरगयाणं । लोम-
 गमुंयगयाणं, नमो सया मय्यमिद्धाणं ॥१॥ ओ देवा-
 नादि देवा, जं देवा वंजन्ती नमस्संनि । तं देवदेवमहिं
 मिरमा वंदे महार्यारं ॥ २ ॥ इच्छोवि नमुकारो, जिणवर-
 यमहम्म वद्धमागत्त, संसारसागराभ्यो, तारेइ नरं य
 नारिं या ॥ ३ ॥ उच्चिन्न-सेल-सिहरे, दिक्खा नाणे नि-
 र्महिमा जरम । तं यम्मयद्धइहिं, अरिद्धनेमिं नमस्सामि
 ॥ ४ ॥ अत्तारि अट्ठ दस दां, म वंदिया जिणवरा अउ-
 प्प्योत्तं । परमदुर्निद्धिअट्ठा, सिट्ठा सिद्धिं मम दिस्सु ॥५॥

सुयदेवयाए करेमि काउस्तग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिण्णां नीससिण्णां स्वासिण्णं द्दीएणं
जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमु-
च्छाए सुहुमेहि ॥ १ ॥
सुहुमेहि दिट्ठिसं-

अविराहिंओ ह्रस्व मं काउस्तग्गा । जाय माए ॥ १ ॥
भगयंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं
क्कायेणं अण्णाणं घोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक नवकार का काउस्तग्ग करना चाहिये,
यदि गुरुजी न हों तो एक श्रावक यदा काउस्तग्ग को पार कर "न-
मोऽहंतिस्सदाचारोपाध्यायसर्वसाधुम्य" इस वाक्य को कह कर
नीचे लिखी हुई स्तुति को बोले—

सुयर्णशालिनी देवात्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा ।
श्रुतदेवीं सदा मद्य-मशोषश्रुतसम्पदम् ॥१॥

इस स्तुति को मुनने के बाद सब लोग काउस्तग्ग पारें, इस
के पीछे "सुयदेवयाए करेमि काउस्तग्गं" इस वाक्य को बोले
कर पूर्व लिखे हुए "अन्नत्थ" को बोलना चाहिये, तदनन्तर
पूर्व के समान एक नवकार का काउस्तग्ग पार कर नीचे लिखी हुई
स्तुति को बोलना चाहिये—

पामां क्षेयगताः सन्ति, साधवः श्रावकादयः ।

जिनाशां साधयन्तस्ताः, रक्षन्तु क्षेत्रदेवताः ॥ १ ॥

इस के पीछे खड़े हो गह कर एक नवकाट को बहना चाहिये , तथा संडासा का प्रमार्जन करते हुए बैठ कर छंद भावश्यक की मुद्रायी का पढिलेदन करना चाहिये , मुद्रायी को खोलकर बगाड़ी रख कर दो बार वादना नीचे प्रमार्जे देना चाहिये—

इच्छामि खमासमणो! वंदितं जायमिज्जादं निसी-
हिज्जाणं अणुजागह मे मिउगाहं। निर्माहि। अहांकारं
कायसेकासे खमणिज्जां मे किलामां अप्पविलिमाणं
पट्टसुभेण मे, दिवसो पट्टपत्तां, जत्ता मे जयणिज्जं न मे,
खामेमि खमासमणो देवमियं वड्डमं आयसिसुयाण
पट्टिप्पमामि खमासमणाणं देवसिप्पाण आमायणां नि-
सीसत्तपराण जं किंनि मिच्छाण मणदुक्कहाण वधदुक्कहाण
कायदुक्कहाण कोहाण मागाण मापाण लोभाण मज्ज-
कालिपाण, मज्जमिच्छां वधाराण मज्जवग्गाइकमणाण
आमायणाण जो मे अइआरो कप्पो मरुत्त खमासमणो!
पट्टिप्पमामि निदामि गिरिहामि अण्णाणे वानिरामि ॥ १ ॥

(यदि वसुधाय गन्धि न किया हो तो धातु पर उसे ले
लेना चाहिये) इस के पश्चात् “ इच्छामो भवतुमहि ” इस को
बोल कर नीचे बैठ बना चाहिये धातु पर यदि गुरुजी प्रियदात
हों तो नीचे लिखी हुई “ गतोऽगु वर्तमानाव ” की एक गायत्री को
बोले— नहीं हो तो धातु नीचे प्रमार्जे बोले—

नमोऽर्हसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ।

तत्रयाचासमोक्षाय, परोक्षाय कुनीधिनाम् ॥ १ ॥

येषां विकचारविन्दराज्या ज्यायःक्रमकमलावर्ति
दयत्या । सहशैरति सङ्गतं प्रशस्यं, कथिनं सन्तु शि
षाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापादितजन्तुनिर्गृहि
करोति यो जैनमुखाम्युदोद्गतः । स शुक्रमासोद्गृह्य
ष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरं गिराम् ॥ ३ ॥

तथा आधिकार्यो को “ संसारदाया ” को तीन पादा में
बोलना चाहिये—

संसारदायानलदाहनीरं, सम्मोहवूलीहरणे समी
रम् । मायारसादारणसारसोरं, नमामि धीरं गिरिमा
रपीरम् ॥ १ ॥ आयावनामसुरदानवमानवेन, घूम्यायिलो
लकमलायलिमालितानि । संपूरिताभिमतलोकसमीरि
तानि, कर्म नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ ना
थागाधं सुषदपदधीनीरपूरामिरामं, जीवाहिसारि
रञ्जलहरीसद्गमागाहदेहम् । धूलावेलं गुरुगममगीमं
कुलं दूरपारं, मारं धीरागमजलनिधिं सादरं साधु सं
॥ ३ ॥

इस के पीछे “ नमोऽस्तुभ्यं ” बोलना चाहिये एक इन्द्र
जीने सिखे हुए को बोले—

नमोत्पु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं
 तित्थपराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-
 सीहाणं पुरिसवरपुंदरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
 लोपुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं,
 लोगपझोअगराणं ॥ ४ ॥ अअयदयाणं, यकखुदयाणं,
 मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं
 धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरया-
 णं तथयत्थदीणं ॥ ६ ॥ अप्पदिह्यवरनाणंदसणपरा-
 णं वियदुत्तमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं निझाणं
 तारयाणं बुद्धाणं पोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
 सच्चद्रूणं सच्चदरिसीणं सियमयलमऊअमणेतमयत्थय-
 मय्यायाहमपुणराविति सिद्धिगइनामपेयं ठाणं संप-
 ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अइ-
 या सिद्धा, जे अ अयस्सेतिअणागए बाले। रंयइ अ यइ-
 माणा , मय्ये तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छावारेण संदिमह भगवन् ! वृद्ध एवमन
 भवे ! ।

इस के पीछे आसन पर बैठ कर ' नमोऽरिहंताचार्योपा-
 दयदर्पणाधुभ्यः ' इस को बोझ कर बससे कम ११ गायत्राले
 स्तवन को बड़ना चाहिये किन्तु यदि ग्यणह गायत्र बाले स्तवन से

होगा कोई अलग देना चाहे तो उस स्थान से लेना है ।
 " वन्दनम् " बतलना नाहिदे -

अथरक्तमणिलिङ्गं चामण्यममण्डितं किं
 मोक्षं । सप्तमि मणौ जितानि, सप्तममण्डितं वंदे मा
 ॥ १ ॥

अथ स्थान जितानि वन्दे मणौ चामण्यममण्डितम् -

श्री चिन्तामणिपार्श्वजिनम्नमः ।

भविष्य श्रीजिन विंश गुहासं, आत्ममरम् आतां
 रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन मार्गरी जागी, व
 करो शंका कांई । आगमपागां न अनुमारे, रागां
 मोति सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविम्ब हस्त
 न जाणे, ते कहिये किम जाणे । भूला तेह अज्ञाने
 भरिया, नहिं निद्रां तस्य विद्वाने रे ॥ भ० श्री० ॥ २ ॥
 अम्बइ आवक श्रेणिक राजा, रायण प्रमुख अनेक ।
 विविध परें जिन भगनि करंता, पाप्या धर्म विवेक रे
 ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगनें जोतां, होय
 निश्चय उपकार । परमास्थ गुण प्रकटे वरण, जो जो
 आर्द्रकुमार रे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकार
 जलघर, ॥ बहु जलधि मज्झार । ते देखी बहुला न
 त्स्यादिक, पाप्या विरति प्रकाररे ॥ भ० श्री० ॥ ५ ॥ पांचमे

अंगे जिन प्रतिमा नो, प्रकट पणे अधिकार । सरपाभ-
 सुरे जिन घर पूज्या, राघवसेणी मजहार रे ॥ भ० ॥ श्री०
 ॥ ६ ॥ दशमे अंगे अहिंसा दाखी, जिन पूजा जिन-
 राज । एहवा आगम अरथ मरोही, करिये केम थ-
 काज रे ॥ भ० श्री० ॥ ७ ॥ समकित धारा सती द्रौपदी,
 जिन पूजा मन रंगे । जो जो एहनां अरथ विचारो,
 उठे ज्ञाता अंगे रे ॥ भ० श्री० ॥ ८ ॥ विजय सुरे जिन
 जिन घर पूज्या, कीधी निज धिर राखी । द्रव्य भाय
 विहूँ भेदें कीनी, जीयाभिगम छे साखी रे ॥ भ० श्री०
 ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोई जङ्गा मन कर
 जों । जिन प्रतिमा देखी निज नयनों, प्रेम घनां निज
 घरजो रे ॥ भ० श्री० ॥ १० ॥ चिन्तामणि प्रभु पास पमा-
 यें; सरपा ही जो सवाई । श्री जिन लाभ सुगुरु उप-
 देशो, श्री जिन चन्द्र सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥

इस के पीछे एक एक राजसूय से आचार्य तथा आचार्य और
 सर्व साधुओं की वन्दन का विर चौथा गद्यामरण दकर नीचे लि-
 खे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । देवसिपपायस्त्रि-
 ष्विमुदिनिमित्तं काउत्सगं कर्हं । इच्छं, देवसिपपा-
 यस्त्रिमुदिनिमित्तं करेमि काउत्सगं ॥ १ ॥

छेन कोई छाम देसा जेने मो नर नरन को केने दे ले
 ॥ वननन ॥ वंचना नदिने—

ॐ धारकलापमंगनिदुध वागवतलमप्रिंद विना
 मोदे । मलरि मरी जिगागी, मन्शमगुडभे की मर
 ॥ १ ॥

अथ मन्शम विना मर दे जिने वेंलना नदिने—

श्री निन्तामणिपार्श्वजिनम्नयनम् ।

भयिकर श्रीजिन विंद गुहांग, आनमगम आधारी
 रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन मारगी जागी,
 करो शंका काई । आगमपागां ने अनुमारे, राग
 प्रीति स्याई रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविम्व हक
 न जाणे, ते कहिये किम जाणे । मृना तेह अशा
 भरिया, नहिं तिहां नस्य विद्वाने रे ॥ भ० श्री० ॥ २ ॥
 अम्पह आवक ऐणिक राजा, रावण प्रमुख अनेक
 विविध परे जिन भगनि करंता, पाप्मा धर्म विवेक
 ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगने जोनां, ह
 निक्षय उपगार । परमारथ गुण प्रकटे पूर्ण, जो
 आर्द्रकुमार रे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा आक
 जलघर, छे बहु जलधि मज्झार । ते देखी बहुला
 स्थादिक, पाप्मा विरति प्रकारे ॥ भ० श्री० ॥ ५ ॥ पां

अंगे जिनप्रतिमा नो, प्रकट पणे अधिकार । सरपाम-
 सुरे जिनवर पूज्या, रायपसेणी मज्झार रे ॥ भ० ॥ श्री०
 ॥ ६ ॥ दशमे अंगे अहिंसा दाखी, जिन पूजा जिन-
 राज । एहवा आगम अरथ मरोड़ी, करिये केम अ-
 काज रे ॥ भ० श्री० ॥ ७ ॥ समकिन धारी सनी द्रौपदी,
 जिन पूजा मन रंगे । जो जो एहनो अरथ विचारी,
 छडे ज्ञाना अंगे रे ॥ भ० श्री० ॥ ८ ॥ विजय सुरें जिम
 जिनवर पूज्या, कीधी बिल धिर राखी । दृढ्य भाव
 यिहूँ भेदें कीर्ती, जोधाभिगम छे मार्गी रे ॥ भ० श्री०
 ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम सालें, कोई शङ्का मन कर
 जो । जिनप्रतिमा देखी निम नयनों, प्रेम घणो बिल
 धरजो रे ॥ भ० श्री० ॥ १० ॥ विन्तामणि प्रभु पास पस्त-
 पें; सरपा हो जो सपाई । श्री जिनलाभ सुगुरु उप-
 रेदो, श्री जिनचन्द्र सबाई रे ॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥

इस के पाछे एक एक अमृतमण से आचार्य उपाध्याय और
 सर्व साधुओं को वन्दन कर फिर चौथा स्वामीमण देकर नीचे लि-
 खित हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसद् भगवन् ! देवसिपपापच्छि-
 तविमुद्विनिमित्तं काउत्सगं करुं ? इच्छे, देवसिपपा-
 पच्छित्त विमुद्विनिमित्तं करेमि काउत्सगं ॥ १ ॥

ए के पीछे " अक्षय " चेन्ना चाहिये—

अक्षय ऊर्ममिणं नीममिणं तामिमिणं पी
णं जंभाइणं उद्दुणं वागनिमिणं भमलिणं नि
समुत्ताणं । सुहमेहि अंगमंशालेहि सुहमेहि सेवमे
शालेहि सुहमेहि दिद्विमंशालेहि । एवमाइणं माणा
रेहि अमगो अविगहिआं ह्य मे काउस्मगो । जाव
अरिहंताणं भगवशाणं नमुत्तारेण न पारेमि, ताव काव
ठाणेण मोयेण माणेण अप्पाणं बोमिरामि ॥१॥

इस के पीछे चा " लोगस्त " का या मोमह नरकार का
काउस्मग करना चाहिये, काउस्मग पार का के प्रगट लोगस्त
बोलना चाहिये—

लोगस्त उच्चोअगरे, धम्मतित्थपरे जिणे । अरिहं
ते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उत्तममजिज्जं
च वंदे, संभयमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं
जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुण्णदंते,
मीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं,
धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वं
मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिद्धनेमिं, पासं ता
वद्धमायं च ॥ ४ ॥ एवंए अमिथुआ, विहूपरयमल
पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थपरा मे

पर्याप्तं ॥ ५ ॥ किमप्येवंदिप महिषा, जे ए लोकास्स
उत्तमा सिद्धा । आम्हणयोहिलाभं, समाहियासुत्तमं
दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आह्वेसु अहिषं पपा-
मपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिमम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छाकारंण मंदिमह भगवन् ! खुहोयहय उडा-
वगन्थ करेमि काउस्सगं ॥ १ ॥

इम के पीछे " भगवन् " बोलना चाहिये--

असन्ध असमिण्णं नोत्तमिण्णं स्वास्मिण्णं ह्याण्णं
जंमाइण्णं उड्डुण्णं वायनिसग्गेयं भमलित पित्तमु-
च्छाण । सुहमेहि अंगसंचालेहि सुहमेहि खेलसंचा-
लेहि सुहमेहि दिट्ठिसंचालेहि । पथमाइण्हि ध्यागारेहि
अभगो अविराट्ठिओ हृत्त मे काउस्सगो । जाय अ-
रिहेत्ताणं भगवन्नाणं नमुकारेणं न पारेमि, नाव वणं
टाण्णेणं मोण्णं हाण्णं अप्पागं बोमिरामि ॥ १ ॥

इम के पीछे पाठ " लोकास्स " का अर्थ मोलह नर-
का का काउस्सग करना चाहिये । इम के बाद लोकास्स बोमन्तो
होना चाहिये--

लोकास्स उज्जाअगरे, धम्मनित्थपरे जिणे । अरि-
हेत्ते वित्तहस्से, अउवीसेपि वेयली ॥ १ ॥ उमभमजिअं
अच वेदे, सेमयमभिणंदणं न सुमहं न । पउमण्हं सु-
पासं, जिणं न वेदण्हं वेदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदेसे,

सीधल सिद्धंस यासुपुत्रं च । विमलमगांतं च वि
 घर्मं संति च घंशमि ॥ ३ ॥ कुंरुं अरं न महि
 मुणिसुन्दरं नमिजिणं च । यंदामि रिदनेमि, पासे
 वेदमागं च ॥ ४ ॥ एवं मण अभियुमा, विहपर
 पदीण-जर-मरणा । नउर्यासंपि जिगायरा, तित्थय
 पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिवर्यदियमहिषा, जे ए लं
 उत्तमा सिद्धा । आरुगणोहिलामं, समाहिषा
 दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आइयेसु महियं
 सपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम
 ॥ ७ ॥

इस के पीछे एक खनासमय को दे कर बोलना चाहिये

इच्छाकरेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवन्दन

श्री यंभणापार्श्वनाथजी का चैत्यवन्दन

श्रीसेशतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तम्भने स्यगिरौ,

श्रीरूपाभयदेवसुरिविबुधाधिशैः समारोपितः ।

संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः स्फूर्जत्कणापह

पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनो वाञ्छित

आधिप्याधिहरो देवो, जीरावल्ली शिरोमणिः ।

पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥

इस के पश्चात् पूर्व लिखे हुए “नमोत्तयुगे” इत्यादि

लना चाहिये, तदनन्तर पूर्व लिखे हुए “ जायंति चेद्भयं ”
 यदि पाठ को बोलना चाहिये, तदनन्तर पूर्व लिखे हुए “ जा-
 केवि साहू ” इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये, तत्पश्चात् “ न-
 र्दत्तिसिद्धाचार्योपाध्यायस्वर्यसंभुम्भ्यः ” इस वाक्यको बोल कर पीछे
 लिखे हुए “ डरतर्गहरस्तदन ” को बोलना चाहिये, इस के पीछे
 लिखे हुए “ जय बीरराज ” इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये,
 इसके पश्चात् समासमय को देकर तथा मन्त्रको मन्त्र कर नीचे
 लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

सिरिधंभण्यद्विपवाससामिणो सेसतित्यसामीणं ।
 न्यसमुद्रहं कारणं, सुरासुराणं च सन्धेसि ॥ १ ॥
 स अहं सरणान्धं काउस्सगं करेमि सत्तोए ।
 सीणं गुणसुद्विपस्स संघस्स समुद्रहं निमित्तं ॥ २ ॥
 श्रीधंभणापार्श्वनाथजी आराधया निमित्तं करेमि
 काउस्सगं ॥ १ ॥

बंदणवत्तिष्माणं पूजणवत्तिष्माणं सकारवत्तिष्माणं
 ध्माणवत्तिष्माणं पोदिलाभवत्तिष्माणं निग्गसग्गव-
 त्तिष्माणं मद्वाणं मेद्वाणं धिईणं धारणाणं अणुप्पेहाणं
 हुमाणीणं ठामि काउस्सगं ॥ १ ॥

असत्थं जस्ससिण्णं नीससिण्णं स्वासिण्णं छीएणं
 भाइएणं उहट्टएणं वापनिमग्गेणं भमलिणं पित्तमु-
 द्वाणं सुहमेदि पंगमंचालेदि, सुहमेदि रेलसंचालेदि,

सुहृमेहिदिद्विसंचालेहि, एवमाहएहि आगारेहि अभमं
अबिराहिओ हृज्ज मे काउस्सग्गो । जाय अरिहंता
भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेयि ताव कायं ठाणेणं मोपे
क्कायेणं अप्पाणं षोसिरामि ॥ १ ॥

इम के पीछे चर = लोमम्म " का या मोलद नदरुण ।
काउस्सग्ग करना चाहिये. काउस्सग्ग पाए करके प्रगट होकर
मोसना चाहिये - -

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिन्धारे जिणे । अरि
मे कित्तइस्सं, चउयामं पि केवलं ॥ १ ॥ उसभमंजि
य धंदे, संभवमभिणंदणं य सुमडं च । पउमप्पहं सुप
जिणं य चंदप्पहं धंदे ॥ २ ॥ सुयिहि च पुक्कं
मीअलमिधंम यासुपुधं च । विमलमणंनं च जि
धम्मं मेत्ति च धंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं,
मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । धंदामि रिट्ठनेमि, पामं
बद्धमार्गं च ॥ ४ ॥ एवं मण अमिधुआ, बिहपरय
परीणजंरमरणा । चउयामं पि जिणायरा, तित्थया
वसायंतु ॥ ५ ॥ कित्तिगंधदियमहिवा, जे ए लो
उत्तमा मिट्ठा । आरगयोहियाभं, समादियरसु
दिनु ॥ ६ ॥ धंदेसु निम्मलगरा, आइधेसु अहिपं
सया । मागरवगंभागा, मिट्ठा मिट्ठि मम दि
॥ ७ ॥

• इन के पीछे नौथे निम्ने दृढ़ पाठ को बोलना चाहिये—

श्रीचोरासागच्छशृङ्गारहार जङ्गमयुगप्रधान भहा-
रक दादाजी श्रीजिनदत्तमूरिजी चारित्रचूडामणि जी
आराधवानिमित्तं करेमि काउस्मगं ॥ १ ॥

• इन के पीछे “ अन्नम् ” बोलना चाहिये

अन्नम् उन्मसिणं नीसमिणं त्वामिणं छी-
णं जम्भाइणं उड्डुणं वायविमग्गेणं भमसिणं वि-
ममुच्छाणं । सुहमेहि अंगमंचालेहि सुहमेहि गेलसं-
चालेहि सुहमेहि दिट्ठिमंचालेहि । पथमाइणहि आगा-
रेहि अमग्गे अविगहिओ रुद्ध मे काउस्मग्गे । जाय
अरिहेताणं भगवन्ताणं नमुपाग्गेणं न पाग्गेमि, ताव कायं
आग्गेणं मोरुणं आग्गेणं अप्पाणं वामिरामि ॥१॥

• इन के पीछे एक “ लोमम् ” का अन्तरा पाठ नयकार का
काउस्मग करना चाहिये । काउस्मग पाठकरके पीछे शब्द
“ लोमम् ” को बोलना चाहिये -

लोमस्म उल्लोमग्गे, भम्मनिन्धग्गे जिणे । अरि-
हेतं किनहसं, चट्ठ्यामं पि वेवली ॥१॥ उमभमजिअं
न वेदं, संभवमभिणंदणं च सुमहं च । पउमप्पहं सुपासं,
जिणं च चंदप्पहं वेदं ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंसें,
माअलमिअंम वासुपुअं च । विमलमणंनं च जिणं,
पग्गे मंनिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंठु अं च महिं, वेदं

मुणिसुख्यं नमिजिणं च । वंशमि रिद्धनेमि, पामं नद
 वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मण अभियुग्मा, विद्धपरमला
 पहीणजरमरणा । उद्धोसं पि जिगावरा, निव्यपरा मे
 पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिव वंदिय महिया, जे ए लोगस्स
 उत्तमा सिद्धा । आरुग्गयोहिलामं, समाहियरमुत्तमं
 दितु ॥ ६ ॥ गंदेसु निम्मलयरा, आचेसु अहियं पया-
 सपरा । सागरवरगंभोरा, मिद्धा मिद्धि मम दिमंतु
 ॥ ७ ॥

श्रीचौरासांगच्छशृङ्गारहार जङ्गमयुगप्रधान भद्र-
 रक्तदादाजी श्रीजिनकुशलमृरिजा चारिश्रच्छामगिजी
 आराधया निमित्तं करेमि काउस्मगं ॥ १ ॥

इस का काउस्मग की विधि उक्त मुजब जाननी ।

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! वैत्पवन्दन कस्सी ?

अउक्कसायपडिमल्लूरणु, इल्लयमणयागामुसुम-
 णु । सरमवियंगुवसुं गयगामिउ, जयउ पास भुवण-
 तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तरुंकंतिकडप्पसिणिद्धउ
 सोहह फणमणिकिरणालिद्धउ । नं नवजलहर तडि-

उ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥

भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च मिद्धिस्थिताः ।

जिनशासनोघ्ननिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।

श्रीसिद्धान्तसुपायका मुनिवरा रत्नप्रधाराधकाः,

पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्यन्तु वो मङ्गलम् ॥१॥

इस के पीछे पूर्व निरो हुए “नमोत्युरं” इत्यादि पाठ से
से कर “जय वीरराज” इत्यादि पाठ तक सम्स्त पाठ बोलना चा-
हिये । इस के पीछे यदि दीपक का अथवा त्रिवन्दी का प्रकाश
पड़ा हो तो “इरिवाहिया” करना चाहिये—

इरिवाहिये का पाठ, तत्स उत्तरी का पाठ, अन्नस्थ का पाठ बोल
कर एक “सोमस्त” का अथवा बार नवकार का काउस्तम्भ
करना चाहिये, काउस्तम्भ पार कर के “सोमस्त” प्रसृत रीति से
बोलना चाहिये, फिर सामायिक को पारना चाहिये, वह प्रसृत में
सामायिक पारने की प्रितिष्टयों पर सेना चाहिये । तथा दाशवी
का नीचे लिखा हुआ स्तवन को बोलना चाहिये—

॥ श्रीजिनकुशलसूरिजी महाराज का स्तवन ॥

दर्शन पाया पाया दर्शन पाया रे, कुशलसूरीश्वर
राय तुम्हारे ॥ ६० ॥ टेक ॥

मन्त्री जिह्वागर पिना तुम्हारे जेतमिरी है माना
रे । सहस्र राया गोत्र में ह्यापा ह्याजेइ जाया रे ॥ ६०
॥ १ ॥ दान्त दान्तादि गुण ने असंहृत औस्य सुषंश
दिपाया रे । अनेक उषारे मुझ को उषारो गोत्रीय
आया रे ॥ ६० ॥ २ ॥ स्थान स्थान में परया तुम्हारा
सहस्र मन भाया रे । निरलि निरली गुह चरय तुम्हारे

हृदय न माया रे ॥ ८० ॥ ३ ॥ अग्न शम्भु गुरुगज तु
 म्भारं भविजन को सुख दाया रे । तेमे अग्नो में शम्भु
 नमा के आनन्द पाया रे ॥ ८० ॥ ४ ॥ अग्न को मेरा
 कर्म खपेया गुरुवर दयाया रे । दयाया रू संगज गाथा पा-
 ओ बांझिम माया रे ॥ ८० ॥ ५ ॥ कर जोड़ी ते अर्जुन
 में करता मद्गु मरुत सुख दाया रे । जिन शम्भु उ-
 जवाला श्यामी जय जयहार बसाया रे ॥ ८० ॥ ६ ॥
 साक्षिधरारी विप्रनियारी पूर्ण गुरु को पाया रे । सुख
 सागर ने झील झील के क्षेमार्णय गुण गाया रे ॥ ८० ॥ श्री
 ॥ इति देवभिर्यदिकमलपिधि संपूर्ण ॥

दशार्थ पाठ ।

पञ्चस्वाण-वर्णन ।

दिन के प्रत्याख्यान ।

जो अनुभव चौदह नियमों को संभलना हो उसे नीचे लिखे
 अनुसार प्रत्याख्यानों को करना चाहिए, तब यदि वह पौरुषी भादि
 का प्रत्याख्यान करना चाह तो उसे "नवकारमहिषे" के स्थान में
 "पौरुषिय" यदि शब्दों को बोलना चाहिये ।

नवकारसी का पञ्चस्वाण ।

उगगा मूरे नमुकारसहिअं मुद्रिसहिअं पञ्चस्वाइ ।

॥ १ ॥ आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अपणत्थणं

सहस्रागारेण पञ्चषण्णकात्तेण दिसामोद्देण साहुण-
 येण सव्यसमाहिवत्तिपागारेण विमर्द्दो पञ्चकखा-
 ष्णत्थणाभोगेण सहस्रागारेण लेखलेत्थेण गिहत्थसं-
 सिद्धेण उक्खित्तवियेगेण पट्टचमत्तिएण, महत्तरागा-
 रेण सव्यसमाहिवत्तिपागारेण वोत्तिरामि ॥ २ ॥

इसी प्रकार साठ पोंरतो के प्रयात्थान को जानना चाहिये ।

पुरिमड्ड अवड्ड का पञ्चकखाण ।

सुरे उग्गए पुरिमड्डं अवड्डं वा पञ्चकखाइ षड्वि-
 हंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणा-
 भोगेण सहस्रागारेण पञ्चद्वयकालेण दिसामोद्देण साहु-
 षण्णयेण महत्तरागारेण सव्यसमाहिवत्तिपागारेण वि-
 मर्द्दो पञ्चकखाइ अण्णत्थणाभोगेण सहस्रागारेण लेख-
 लेत्थेण गिहत्थसंसिद्धेण उक्खित्तवियेगेण पट्टचमत्तिए-
 ण महत्तरागारेण सव्यसमाहिवत्तिपागारेण वोत्तिरामि
 ॥ ३ ॥

एकासण त्रिआसणा का पञ्चकखाण ।

पोरिसि साठपोरिसि वा पञ्चकखाइ उग्गए सुं-
 षड्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण-
 त्थणाभोगेण सहस्रागारेण पञ्चद्वयकालेण दिसामो-
 द्देण साहुषण्णयेण सव्यसमाहिवत्तिपागारेण एकास-

विश्वासं वा पचस्वाद् द्रुविहं निविहं पि आहारं असणं
 साहमे अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागा-
 रिआगारेणं आट्टणपसारेणं गुरुअन्मुट्ठाणेणं पारि-
 ठायणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमादिवत्तिपागा-
 रेणं विगईओ पचस्वाद् अण्णत्थणाभोगेणं सहसागा-
 रेणं लेकालेवेणं गिहत्थमंसिद्वेणं उक्खित्तविनेगेणं पटु-
 पमक्खिण्णं, महत्तरागारेणं सव्वसमादिवत्तिपागारेणं
 बोसरामि ॥ ४ ॥

एकलठाण का पचस्वाण ।

पोरिसि साट्ठेणरिमि वा पचस्वाद् उग्गए छूरे
 पडव्विहं पि आहारं असणं पाणं स्वाहमे साहमे
 अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पट्टण्णकालेणं
 दिसामोहेणं माट्टुपण्णेणं सव्वसमादिवत्तिपागारेणं
 एकसणं एगट्ठाणं पचस्वाद् द्रुविहं निविहं पडव्विहं पि
 आहारं असणं स्वाहमे साहमे अण्णत्थणाभोगेणं सह-
 सागारेणं सागारिआगारेणं गुरुअन्मुट्ठाणेणं पारिठाय-
 णियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमादिवत्तिपागारेणं
 विगईओ पचस्वाद् अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं ले-
 कालेवेणं गिहत्थमंसिद्वेणं उक्खित्तविनेगेणं पटुपमक्खि-
 ण्णं, महत्तरागारेणं सव्वसमादिवत्तिपागारेणं बोसरामि
 ॥ ५ ॥

आंजिल का पञ्चस्वाण ॥

पोरसि सादपोरसि वा पञ्चस्वाड उगण सुरे
 धउज्विहंपि आहारं असणं पाणं स्वाडमं साडमं अण
 स्थणाभोगेणं सहसागारेणं पडण्णकालेणं दिममोहेणं
 साहुवयणेणं सच्चसमादिवत्तिआगारेणं आर्यदिने प
 कखाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेयालेयेणं नि
 त्थसंसिद्धेणं उदिवत्तियेगेणं पारिद्वावणियागारेणं
 महत्तरागारेणं सच्चसमादिवत्तिआगारेणं एकासणं प
 कखाइ तिचिहंपि आहारं असणं स्वाडमं साडमं अण
 स्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउट्ठण
 सारेणं शुरुअम्भुट्टाणेणं पारिद्वावणियागारेणं महत्
 रागारेणं सच्चसमादिवत्तिआगारेणं वोसरड ॥६॥

नीवी का पञ्चस्वाण ॥

पोरसि सादपोरसि वा पञ्चस्वाड उगण सुरे
 धउज्विहंपि आहारं असणं पाणं स्वाडमं साडमं अण
 णाभोगेणं सहसागारेणं पडण्णकालेणं दिसामोहेणं
 हुवयणेणं सच्चसमादिवत्तिआगारेणं निद्विगदये
 कखामि अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं
 हत्थसंसिद्धेणं

एवाभ्यं पञ्चखाइ तिविहंपि आहारं-असणं खाइमं
साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगा-
रेणं आउट्ठगयसारेणं गुरुअन्भुट्ठायोगं पच्छत्तकालेणं म-
हत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं घोसिरामि ।

चउट्ठिहाहार उपवास का पच्चक्खाण ।

सुरे उगण अन्भत्तट्ठं पच्चक्खामि चउट्ठिहंपि आ-
हारं असणं पाणं, खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं
सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं
घोसिरामि ॥ ८ ॥

तिविहाहार उपवास का पच्चक्खाण ।

सुरे उगण अन्भत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं
असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसा-
गारेणं पाणहारपोरिणि माटपोरिणि पुरिमट्ठं अयट्ठं
या पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं
पच्छत्तकालेणं दिमामोहेणं साहुयपणेणं सव्यसमाहि-
वत्तिपागारेणं घोमिरामि ॥ ९ ॥

दत्ति पच्चक्खाण

पोरिसि साटपोरिसि पुरिमट्ठं अयट्ठं या पच्चक्खामि
उगण सुरे चउट्ठिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं
साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छत्तकालेणं

दिसामोहेणं साहुचयणेणं सञ्चसमाहिवत्तियागारेणं
 एगासणं एगट्टाणं दत्तिधं पच्चक्खामि तिविहं चउच्चि-
 हंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थ-
 णाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं गुरुअञ्जुदा-
 णेणं महत्तरागारेणं विगईओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणा-
 भोगेणं सहसागारेणं लेयालेत्तेणं गिहत्थसंसिद्धेणं उ-
 त्थित्तविद्धेमेणं पट्टमक्खिएणं महत्तरागारेणं सञ्च-
 समाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ॥२०॥

राश्री के पच्चक्खाण ।

चउच्चिहाहार का पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ चउच्चिहंपि आहारं असणं
 पाणं खाइमं साइमं अणत्थणाभोगेणं सहसागारेणं
 महत्तरागारेणं सञ्चसमाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ।१।

दुविहाहार का पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खामि दुविहंपि आहारं असणं
 खाइमं अणत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं
 सञ्चसमाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ॥ २ ॥

पाणहार का पच्चक्खाण ।

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खामि अन्नत्थणाभोगे

र्णं सहस्रागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमादिवृत्तिपागा-
रेण बोधयामि ॥ ३ ॥

॥ ग्यारहवाँ पाठ ॥

। स्तवनसंग्रहः ।

। अथ श्री सद्गुणष्टक ।

भजामि पूजये च नमामि नित्यं,

ब्रह्मामि भक्त्या प्रणतान्तरात्मा ।

पद्माभिधानं किल सद्गुणोपं,

तस्य स्वरूपे शुभभाषभाव्यम् ॥ १ ॥

पिता कुलीनश्च मनःसुखालयः,

सुशीलधर्मा जननी हि जेती ।

आद्वैदपर्ययः सुखलालसञ्जो,

प्राप्तः प्रसिद्धः सरसेति नाम्ना ॥ २ ॥

प्राप्तप्रचारी जिनधर्मरागी,

सम्पत्त्यपारी विरतिप्रभायी ।

संयज्य संसारमसारमृद्धी,

रत्नाकराख्याय गुरोश्च पार्श्वे ॥ ३ ॥

पारिप्रमादाय सदा विहारी,

विनाऽतिचारं यतिधर्मधारी ।

भीमान् जिताक्षो गुणभूमपोतं,

संसारपाराय परं दधार ॥ ४ ॥

सुबुद्धिसङ्गी कुमतिप्रणाशी,
 खलप्रयोधी शुभमार्गदर्शी ।
 सार्थानि सूत्राणि पपाठ धीरः,
 गजेन्द्रतुल्यो वचनेषु वीरः ॥ ५ ॥
 रराज नित्यं करुणैकपात्रं,
 जीवोपकारी सुखसागराढ्यः ।
 सत्पार्थवक्तुः सुजनाभिनन्द्यः,
 साधुप्रभावोज्झितमोहमायः ॥ ६ ॥
 भ्रन्तारिपून् पात्यपरिमहादीन्,
 त्यागी निरागी भविशर्मकारी ।
 जगत्प्रसिद्धो बहुमानधाम,
 एभिर्गुणैः सन्धमाजगाम ॥ ७ ॥
 ध्यानाक्यमिन्धो हरिनामुपेत,
 आनन्ददार्थी शुभमायमस्मिन् ।
 कुर्यन्ति लोका नयनत्यमिद्धि,
 ते बह्वर्था ये द्रुतमामुवन्ति ॥ ८ ॥

गिरिर्णिगृहम्—

मुदन्ती केश्याम् मनिशुभगुणापारमरणि,
 गगाभोज ! स्थामिन् ! युगपद्रूपदधे भयजते
 कथं नोपास्या मे तव शुभगुणा महलकराः,

गुरोः पूर्णान्वेषे धेरणयुगले क्षेमनमनम् ॥६॥

श्री कुशलसूर्यष्टकम् ।

शेखरिणी—सुखं सर्वां सम्पद्वसति पदयोर्धस्य वदने,

विनिद्रा घाग्रीशो हृदयकमले संविदधिषम् ।

विरागः सर्वान्नेष्यपि च भगवद्भक्तिरनिशं,

समृद्धपर्यं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य वरणी ॥१॥

निशि स्वापार्थिनं सानुदिनमधीनीं समयिनां,

परं घाणीलदम्पो-निलयमपि तद्दाननिपुणौ ।

सदा यौ वसेंते जयत इव पाथोजयुगलं,

समृद्धपर्यं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य वरणी ॥२॥

क्षिपन्ती तौ मेक्षां सरसिगृध्रयोर्धौ मृदुलपोः,

जपापुष्पाभासौ किसलयजिताशेषमहसौ ।

लसल्लेखालक्ष्मप्रकटितपरा श्रीसदनपोः,

समृद्धपर्यं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य वरणी ॥३॥

सुरेभ्यः स्थःस्थेभ्यः कतिपयदिनैर्यः फलमयं,

कदाचिदस्ते द्राक् श्रियमपि दरिद्राय परमाम् ।

सुरष्टुं त्यक्त्या यौ सुधजनसुसेष्यौ सुविगती,

समृद्धपर्यं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य वरणी ॥४॥

सुररीत्यागन्ते परमगुरुधर्मोपदिशतः,

१ " परकमजशाः क्षेमशरदम् " इति पाठान्तरम् ।

सदा कामं पीनामृतरसरांशैरपि गिरः ।
 श्रुता यस्य श्रेयः त्रिषमपि दिशन्ति स्थिराणि
 समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य वरणी ॥२३॥
 निधी सर्वश्रीणामनधिकरणां सर्वविदां,
 मूर्ध्निग्यौ शाणायुषधितनखा गूढबुद्धिौ ।
 समानी मोक्षद्वयपदशाखाविलसिनी,
 समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य वरणी ॥२४॥
 ययोरर्चां स्नेहे घनसुखधरा धामरमणी,
 वारिरारोगत्वं विनयनयविद्यानिपुणताम् ।
 गुणार्नादापांशानपि तनयलक्ष्म्यौ तनुभृतां,
 समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य वरणी ॥२५॥
 भयंकारागारामयसमरपारिन्ध्रफणभृन्-
 महापाराधारद्विरदवनदैश्वानरभवम् ।
 न हाकिन्याद्यग्रहगरलजे यत्स्मरणतः,
 समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य वरणी ॥२६॥
 । शार्दूलविक्रीडितम् ।

इत्थं श्रीजिनपद्मसुरिरचितं दिव्याष्टकं सङ्गृह्यते
 पुण्यं मन्त्रमयं मनोज्ञफलदं पापौघविध्वंस-
 भक्त्या यः पठति प्रमानसमये सर्वत्र तस्य
 वरपा भूपतयो भवन्ति सततं लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी

श्रीगौतमदेवस्तवनम् ।

श्रीइन्द्रभूति वसुभूतिपुत्रं, पृथ्वीभवं गौतमगोत्र-
 मम् । स्तुवन्ति देवाः सुरमानवेन्द्राः, स गौतमो वच्छ-
 वाञ्छितं मे ॥ १ ॥ श्रीवर्द्धमानात् त्रिपदीमपाप्य,
 हर्तमाघ्रेण कृणानि येन । अङ्गानि पूर्वाणि चतुर्द-
 शानि, स गौतमो वच्छतु वाञ्छितं मे ॥ २ ॥ श्रीवीर-
 ण्येन पुरा प्रगीतं, मध्ये महाऽऽनन्दसुखाय यस्य । द्या-
 न्स्पमी सुरिधराः समग्राः, स गौतमो वच्छतु वाञ्छितं
 मे ॥ ३ ॥ यस्याभिधानं मुनयोऽपि सर्वे, गृह्णन्ति भिक्षाभ्रम-
 यस्य काले । मिष्टाक्षपानाम्परपूर्णकामाः, स गौतमो व-
 च्छतु वाञ्छितं मे ॥ ४ ॥ अष्टापदार्द्रा गगने स्वशरणा,
 त्वी जिज्ञानां पदबन्धनाय । निजम्य तीर्थोतिशयं सुरे-
 स्यः, स गौतमो वच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ५ ॥ त्रिपञ्चसे-
 द्वाशततापसानां, तपःकृशानामपुनर्भवाय । अक्षी-
 णालब्ध्या परमाहदाता, स गौतमो वच्छतु वाञ्छितं मे
 ॥ ६ ॥ सदक्षिणं भोजनमेव देयं, साधमिकं सदुसप-
 र्ययेति । केवल्ययत्रं प्रददी मुनीनां, स गौतमो वच्छतु
 वाञ्छितं मे ॥ ७ ॥ शिर्षगते भर्त्तरि वीरनाथे, पुण्य-
 धानस्यमिदं मत्वा । पदाभिपेक्षो विदधे सुरेन्द्रः, स
 गौतमो वच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ८ ॥ यत्सोपमयोजं शुभञ्जा-

नपीजं, परमात्मवीजं परमेश्वरिषाजम्। यन्नाममन्त्रं विदो
सुरेन्द्रेः, न गीतमो गच्छन्तु वानिजं मे ॥९॥ श्रीगो-
तमस्वाष्टकमादरेण, प्रयोगकाले मुनिगुह्यं ये। पठन्ति
ते हरिपदं सदैवाऽऽनन्दं लभन्ते सुखरां कमेज ॥१०॥

श्रीगुरुगुणस्तवन ।

श्रीजिनदत्त के चरणों में आया चरणों में आया गुरु श्री-
स नमामा ॥८॥ पाउग मंत्री पिता कटाया बाहूदेवी
उपरे आया ॥ श्री ॥१॥ हृष्यद् पंज में आप सुहाया स-
कल जीव हरयाया ॥ श्री० ॥२॥ गच्छ योगसी में गृ-
हार हारा युगमवान पद छाया ॥ श्री० ॥३॥ देश देश
में परया पाया सकल संघ सुखदाया ॥ श्री० ॥४॥ चरण
चरणों ग्रही आज उमाया तारो मुक्त को अनेक तराय
॥ श्री० ॥५॥ हर्ष घरी दिल काय सुखाया नमि नमि
अर्ज में लाया ॥ श्री० ॥६॥ ध्यावो ध्यावो संघ दि-
हर्षाया पावो वाञ्छित माया ॥ श्री० ॥७॥ उद्रामसर
दर्शन पाया आनन्द हर्ष वधाया ॥ श्री० ॥८॥ वीरवी
वीसे र्ष पायाला चैत्र चौथ सुदि आया ॥ श्री० ॥९॥
कृपाभिलाषी सहगुण दया सुखसागर मन भाया ॥
श्री० ॥१०॥ पूर्ण गुरु के चरण पसाया क्षेमसागर गुण
गाया ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥

१ जन्म महोत्सवस्तवनम् ।

आनन्द द्वापा अङ्ग न माया हर्ष वधापा रे (टेक)
र प्रभु का जन्म हुआ जब इन्द्र से आदेश पाया रे ।
रेणगमेयी देव ने जाकर घननन घंटा बजाया रे
आ० ॥ १ ॥ सप्त देवों ने जान लिया सही मेरु शि-
र पर आया रे । पञ्च रूप धरि वीर प्रभु को इन्द्र
नय से लाया रे ॥ आ० ॥ २ ॥ जन से आर्पित
लक्ष को देखे सन्देश दिल में आया रे । नीर प्रवाह
जाधेंगे लघु है इन का काया रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अ-
धेज्ञान से जान लिया प्रभु अनन्त बली महा राया
यामाहुठे मेढ दवाया धर हर कर कंपाया रे ॥ आ०
४ ॥ अथधि लगा कर देख लिया बल प्रभुजी को नह-
या रे । अपराध क्षमावे काय मुकावे नमि नमि लागे
या रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ गाया गाया मङ्गल गाया प्रभु
रखी हरपाया रे । विधिमें भक्ति कर के इन्द्र जननी
से लाया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ त्रैलोक्यनाथ हरि सुख-
री पूरण प्रेम बढ़ाया रे । सकल संघ मिलि जय जय
लो क्षेमानन्द को पाया रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

१ श्रीपार्श्वप्रभुस्तवन ।

श्रीद्वयवास प्यारो है प्रेनन मारा निरखत हर्ष

अगार हे लीद्रव० (देक) भीरीम अगिगग गोभना हे
 प्रभु चे० गीरीम बाली गुगगान हे ॥ लीद्रव० ॥ १ ॥
 नांग पांग ईमगयेरों हे प्रभु चे० लीद्रवगार मगार
 हे ॥ लीद्रव० ॥ २ ॥ देवविमान जिमां पन्नां हे प्रभु चे०
 मन्दिर अगि सुगगार हे ॥ लीद्रव० ॥ ३ ॥ अगल
 गुणे करी दीरगा हे प्रभु चे० मरम काला भीगम हे
 ॥ लीद्रव० ॥ ४ ॥ महिमा मुनि के आविगां हे प्रभु चे०
 संघ सकल बहु ठाठ हे ॥ लीद्रव० ॥ ५ ॥ भय नादक
 करता धका हे प्रभु चे० आगां भीदरवार हे ॥ लीद्रव०
 ॥ ६ ॥ दीन की यिनरी पारतो हे प्रभु चे० भयमागर
 धी तार हे ॥ लीद्रव० ॥ ७ ॥ संघ में मंगल कीजिये हे
 प्रभु चे० विधि यन्दन करे नाथ हे ॥ लीद्रव० ॥ ८ ॥
 धीर भीरीम बालीम माय हे प्रभु चे० मार्गदार सुदि
 सुवार हे ॥ लीद्रव० ॥ ९ ॥ पद्मदीपसे भेदिपा हो हे
 प्रभु चे० आनन्द अंगन माया हे ॥ लीद्रव० ॥ १० ॥
 क्षेमसागर प्रभु प्रेमसुं हे प्रभु चे० मांगे अविचलराज
 हे ॥ लीद्रव० ॥ ११ ॥

श्री नेमिनाथस्वामि-स्तवन ।

नेमी जिगेंद स्वामिन् चरणों में अथ तो लेलो ॥ देक ॥
 कृपानिषे कर मैलो अर्जों दया कर लेलो ।

संसार पार मेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ १ ॥

रात्ना बही बना दो सुखी सदा बना दो ।

आयो पिरुद सुन लो चरणों में अथ तो लेलो ॥ २ ॥

गिरनार तीर्थ आधा मन है सदा सुहाया ।

अनन्द हर्ष भरेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ३ ॥

मुख चन्द्र को मैं देखा निर्मल शान्त चेरा ।

नासाय ध्यान तिथरेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ४ ॥

ऐसी हृदय में रेखा कमौ की होगी रेखा ।

भव पार होगा घेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ५ ॥

मुक्ति से कर के मेलो राजुल का मेली पैला ।

पशु पर दया करेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ६ ॥

अथ तो मुझे भी तारो घेयल के अंश दारो ।

कुछ ध्यान इधर भी देलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ७ ॥

अन्तः सन्धय सुधारो यह विनती स्वीकारो ।

दुःखी सदा बनेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ८ ॥

अन्तिम प्रार्थना करता आशानना से दरता ।

दयालु दीन घेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ९ ॥

संयत् दृष्टीमें चौतर आध सुबला है सुखोत्तर ।

एकप की आया घेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ १० ॥

शुक्लार्प पूर्णमासर तच्छिद्य हेमसागर ।

चरणो चरण में लेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ११ ॥

श्रीअजितजिन-स्तवन ।

(आघा आम पधारो पूज्य ए देशी)

अजित जिनेश्वर चरण नी सेवा एया ॥ हूँ हलियो
रे, कहिये अणवाख्या रस अनुभव रस नो टाणो मि-
लियो। प्रभुजी मेर करी महाराज काज अमारा साथे,
अहो म्हारा प्रभुजी अहो म्हारा जिन जी, गिरबा हो
गरीब निषाज भवजल पार उतारो ॥१॥

मुकायो पण हूँ नचि मूकूँ धूकूँ नचि टाणो रे । भक्ति
भाव उठ्यो जे अन्तर ते केसर हई सरमगो ॥ प्र० ॥२॥
लोचन शान्त सुधारस सुभगा मुख मदकालूँ प्रसन्न
रे । योगमुद्रा नो लटको चटको अतिशय नो अतिषट्
॥ प्र० ॥३॥ बालकालिमा धार अनन्ती सामन्ती नचि
जाग्यो रे । यौवन काले ने रस चाखण तूँ सामर्य
प्रभु मांग्यो ॥ प्र० ॥४॥ पिण्ड पदस्थ रूप सय लीनो
चरण कमल तुल्य ग्रहीयो रे । भमर परे रसस्वाद क-
खानो घरसो कोँ करो महियो ॥ प्र० ॥५॥ तूँ अनुभव
रस देया समरथ हूँ पण अर्घी तेनो रे । चित्त बित्त
ने पात्र सम्पन्ने अजर रह्यो हवे कहनो ॥ प्र० ॥६॥
प्रभुजी ने मेहर ते रस चाख्यो अन्तरंग सुख पाग्यो रे ।
मानविजय वाधक इमि जंघे हुयो मुझ मन काम्यो ॥ प्र० ॥७॥

श्रीपार्श्वजिन स्तवन ।

शिषपुर घासी परमविलासी तारो पारसनाथ, जय
मोहे तारो (टेक)

सर्व नागणी जलते प्रभु दिया नवकार सुनाय ।
परिणन्द पडमावड़े बनाए ऐसे श्रीजिनराय ॥ १ ॥
हो शिष० ॥ नीलवर्ण तनु शोभतो रे परमानन्दप्रका-
श । दोतराग विकाशी ऐसे नहीं देखा प्रभु पास ॥ २ ॥
हो शिष० ॥ भव नाटक मैं पहुला करतो आयो प्रभु-
दरपार । परमकृपा के सागर निरखे सुखकर श्रीहित-
कार ॥ ३ ॥ हो शिष० ॥ भवसागर में भमर कर्म से
हृष रही मेरी जाज । दीन दयालु दया करी तारो तारक
तुम जिनराज ॥ ४ ॥ हो शिष० ॥ कर्मों ने मुझे ऐसा
कैसाया धर्म कर्म दिया रोक । श्रीदरपार में ध्यान खड़ा
हूँ दूर कतो सप ही शोक ॥ ५ ॥ हो शिष० ॥ संवत् गु-
लीसे त्रयोत्तर कृष्ण फाल्गुन दशमी सार । फलोदी
नगर में दर्शन पाया विम्व है अति मनोहार ॥ ६ ॥ हो
शिष० ॥ पारसनाथ सुपारस तुम ही लोहा है यह
क्षेम । परम शरण्य मही आज उमायो पूर्णानन्द सु-
धेम ॥ ७ ॥ हो शिष० ॥

अथ सप्तशान्तिस्तवः ।

शान्ति शान्तिनिशान्ति, शान्ति शान्तिनिशान्ति ।

स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥
 ध्योमिति निश्चितयचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ।
 शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनान् ॥ २ ॥
 सकलातिशेषकमहासंपत्तिसमन्विताय शक्त्याय ।
 ध्रुवोक्ताय पूजिताय च, नमो नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥
 सर्वाभारसुसमूह, स्यामिकसंपूजिताय निजिनाय । सुव
 नजनपालनोद्यत-तमाय सननं नमस्तनूम् ॥ ४ ॥
 सर्वदुरितौघनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्ट
 ग्रहभूतविशाचशक्तिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यत्प्रेमि
 नामर्मत्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुश
 जनहितमिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भव
 नमस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते । जप
 जिते जगत्यां, जयनीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्व
 स्थापि च संघस्य, भद्रकल्याणमंगलं प्रददे । साधून्
 च सदाशिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यान्
 कृतसिद्धे, निर्घृतिनिर्वाणजननि ! सत्यानाम् । जन्म
 प्रदाननिरते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्त
 नां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुच्यते देवि ! । सम्यग्
 ष्ठीनां धृति-रतिमनिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशास
 ननिरतानां, शांतिननानां च जगति जननानाम् । श्री
 संपत्कीर्तिपशा-चर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥

सलिलानलविषदिपथर- दुष्टग्रहराजरोगरखभयतः ।
 तक्षसरिपुगणमारी , चारेनिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥
 अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदे-
 ति । सुष्टि कुरु कुरु सुष्टि कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु स्व-
 स्त ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशांति-सुष्टिसुष्टि-
 स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् । ओमिनि नमो नमो
 हौं ह्रीं हूं ह्रः यः क्षः तीं ह्रद् ह्रद् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं
 यमामाक्षरपुरस्तरं संनुता जया देवी । कुम्भे शांतिं
 नमनां नमो नमः शांतये सस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्वपुत्रि-
 दर्शित-मंत्रपदविदर्भिनः स्तवः शांतेः । सलिलादिभ-
 यविनाशी, शांत्पादिपरम भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यथै-
 नं पठति सदा, शृणोति भावयति या पथायोग्यम् ।
 दि शांतिपदं यायात्, सुरिः श्र्यमानदेवश्च ॥ १७ ॥
 उपसर्गाः क्षयं यान्ति छिद्यन्ते विघ्नयद्दयः । मनः प्रस-
 न्नामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ मर्ममंगलमां-
 गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रदाने सर्वदमोर्णां , जने
 जयति शासनम् ॥ १९ ॥

॥ अथ श्रीगौडीपाद्वर्जिन गृहस्तवन लि० ॥

॥ दोहा ॥

पाणी प्राप्तावादिनी, जागे लगविदपात ।

पासतणा गुण नायतां, गुज गुज पसज्यो पात ॥ १ ॥

नारंगे अहणिलपुरे, अहिमदायादे पास ।

गौडीनो भणी जागनो, महुरी पूरे आस ॥२॥

सुम वेला सुभदिन घडा, महुरम एक मंडाग ।

प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

॥ टाल ॥

गुणहि विशाला मंगलक माला, यामानो तु
साचोजी । घण कण कंचण मणि माणक दे, गौडी

घणी जाचोजी ॥ गु० ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटण मां

प्रतिमा, सुरक तणे घर रुंनोजी । अश्वनी भूमि जम

नी पीडा, अश्वनी वालि बिगूनी जी ॥ गु० ॥ ५ ॥ जा

तो जदा जेहनै कहिये, सुहणां तुरकनै आवैजी । प

जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुम मनावै जी ॥ गु० ॥ ६ ॥

महज्जोने परगट करजे, मेघा गोडीने देजे जी । अहि

म लेजे ओठां म लेजे । टफा पांचसै लेजे जी ॥ गु०

॥ ७ ॥ नहीं आपिस तो मारीस मुरडोस, मोरपे

बंधास्पाजी । पुत्र कलत्र घन हय हाथी तुम, ला

घणी घर जास्वैजी ॥ गु० ॥ ८ ॥ मारग पहिलो तुम

मिलस्ये, साहयवाह जे गोठीजी । निलघट टोढो चोर

चोढ्या, वस्तु थई तसु पोठी जी ॥ गु० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

मनसुं पीहनो तुरकडो, मांनै वचन प्रमाण ।

दीर्घने सुहणा तणो, संभलावै सहि नाण ॥१०॥

पीपी मोले सुरबने, बडा देव है कोय ।

अप सनाय परगटकरो, नहीतिर मारै सोय ॥११॥

पाउली रात पसोहीये, पहली पंथे पाज ।

सुहणा माहें सेठने, संभलावै अक्षराज ॥१२॥

॥ दाल ॥

एम कहो जक्ष आयो राते, सारथयाहुने सुहणें
जी । पास तणी प्रतिमा तुंसेजे, लेतो मिरमत नूये जी

॥ एम० ॥ १३ ॥ पांचसै टक्का सेंहने आपे, अधिको न

आपिस पास्सी । जतन बती पहुँचाडे धानिक, प्रतिमा

पुण संभारिजी ॥ एम० ॥ १४ ॥ सुझने होसी गहु कल-

दायक, भाई गोठीने सुणजे जी । पूजीस प्रगमाश तेह-

नापाया, ग्रहठनीने धुणजे जी ॥ एम० ॥ १५ ॥ सुहणा

देईने सुरचाल्यो, अपने धानिक पहुँचोजी । पाटण माहें

मारथयाहु, हीडे सुरबने जोगोजी ॥ एम० ॥ १६ ॥ तुर्क

जाना दीठा मोठी, पोखा तिलक लिखाटे जी । संकेत

पहुँचो भाषो जाणि, पोखावै पहुँचाटे जी ॥ एम० ॥ १७ ॥

मुक्त धरि प्रतिमा तुझनें आयुं, पास जियेसर पेरीजी ।

पांचसै टक्का जो मुक्त आवै, मोल न मागुं फेरीजी ॥

एम० ॥ १८ ॥ नाणो देई प्रतिमा रेई, धानिक पहुँचो

रंगेजी । केतरचंदन गुगमद पोली, बिपरुं पूजा रंगेजी

॥ एम० ॥ १६ ॥ गादी रुही रुनी कीणी, ते माहि
प्रतिमा राखै जी। अनुक्रम आग्या परिकर माहे, श्रीसं
घने सुरसाखै जी ॥ एम० ॥ २० ॥ ओच्छव दिन दिन
अधिका धाये, सत्तरभेद सनाथो जी। टामर ना दा
सण करवा, आवै लोक प्रभानो जी ॥ एम० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

इकदिन देखै अचधिसु, परिकरपुरनो भद्र ।
जतन करुं प्रतिमा तणो, तीरथ अछे जभंग ॥२२॥
सुहणो आपै सेठने, थल अटवी उज्जाड ।
महिमा धास्यै अति घणी, प्रतिमा तिहां पुहचाड ॥२३॥
कुशल खेम तिहां अछे, तुम्हनें मुझनें जाणि ।
संका छोडी काम करि, करतो मकरि संकाणि ॥२४॥

॥ दोहा ॥

पास मनोरथ पूरा करै, बाहण एक वृषभ जामै
। परिकरथी परिघाणों करै, एक थल चडि बीजो
उतरे ॥ २५ ॥ यारै कोस आग्या जेतलै, प्रतिमा नवि
चालै तेतलै । गोठी मनह बिभासण भई, पास मुख
मंदावूं सही ॥ २६ ॥ आ आटवी किम करुं प्रयाण,
कुदको कोई नदीसे पाहाण । देवल पास जिनेसर तणो,
मंदावुं किम घरथे विणो ॥२७॥ जल विन श्रीसंग
रहस्यै किहां, सिलावडो किम आवै इहां । चित्तपुर

पयो निद्रा लहे , पक्षराज धावीने कहे ॥२८॥ गंगाली
 ऊपर नांगो जिहां, गरध घमो जाणि जे तिहां । स्व-
 लिक सोपरी सहीनांग, पाहाण मणो उहट्टरये खाण
 ॥२९॥ श्रीकल सजल तिहां किल जूओ, अमृत जल
 तीसरसी कूओ । साराकूषा तलो इह सही-
 नांग , भूमि पटो छे नीलो छाण ॥ ३० ॥ सि-
 लाबटो सीरोहि वसै, कोद पराभवियो किस
 मेसै । तहां धकी तूं इहां घाय जे, सत्ययथन मा-
 रो मानजे ॥ ३१ ॥ गोडीनां मन धिर धापियो ।
 सिलाबटने सुदणो दिपां । रोगगमाउने पूरं घास । पास
 णो मंडे आवास ॥३२॥ सुपन मांदे मान्यो तें धेण,
 मयरण देखाव्यो नैण । गोडी मनद मनोरथ हुआ ,
 सिलाबटने गया तेव्या ॥ ३३ ॥ सिलाबटो आवे
 इरमों , जामे खीरसांदधृत चुरमों । घटें घाट करै
 गोरणी , लगन भलै पाया रोषणी ॥ ३४ ॥ येम ९
 तिथी पूज्यी , माटक कीतुक करमी रली । गंग मण्ड-
 । रलियामगों रमै , ओनां मानवनो मन वसै ॥३५॥
 शीपांगो पूरों प्रसाद, स्वर्गसमो मंडे आवास । दिवस
 जेपाहि ईण्टां घट्यो, तमसिग्य देवद ऊपर चरगों ॥३६॥
 तुम लगन जुम घेला वास, पय्यामण पैठा धीपास ।
 रहिमा गोटी मेर ममान, नकलमिल बगटे रहै थान

॥ ३७ ॥ घात पुराणी में सांभली , तवन मांदि मूँ
सांकली । गोठी तणा मोतरीया अछै , पात्रा करीने स
पछै ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघनविडारण यक्ष जगि , तेहनो अकल सरूप ।
मीन करै श्री संघने , देखाइ निज रूप ॥३९॥
गिरुओ गौडी पास जिन , आवै अरधमंडार ।
सानिध करै श्रीसंघने , आसा पूरणहार ॥४०॥
नील पलाणै नील हृष , नीलो धइ असवार ।
मार्ग चूका मानवी , पाट दिखावणहार ॥४१॥

॥ हाल ॥

घरण अद्वार तणो लहै भोग , विघन निवार द
रोग । पवित्र धई समैर जे जाप , टालै सगला प
संताप ॥४२॥ निरघनने घरि घननो सूत , आवै
पुत्रीयाने पुत्र । कायरने सुरापण धरै , पार उतारै
छडी धरै ॥ ४३ ॥ दोभागोने दे सोभाग , पग बिहण
आवै पग । ठाम नहीं तेहने दे ठाम , मन घेछित पूरे अमि
राम ॥ ४४ ॥ निराधार ने दे आधार , भयसापर उ
पार । आरतोयानि आरत भंग । घरे ध्यान ते ल
सुरंग ॥४५॥ समरथा सहाय दीये यक्ष राज ,
अछै दियाज । बुद्धि दीण ने बुद्धि प्रकाश ,

धन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुखनो दातार, भय
जग रंजण अवतार । धन तूटे बेडी तया, श्री
ध्वनाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीपाद्वर्ध नाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल ।
हृषिकेश दूर टले, दुर्देर सिंह सिवाल ॥ ४८ ॥
धर तणा भय चक्रे, विष अमृत उदकार ।
विष धरनो विष ऊनरे, संग्रामे जयजयकार ॥ ४९ ॥
रोग सोग दालिद्र दुख, दोहय दूर पुलाय ।
परमेश्वर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ टाल ॥ (कहस्यानी बाल)

उजिनु २ उज उपसम पति, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपाद्वर्ध
अक्षर जपेन । भूतने भेन कोटिग धनरसुरा, उपस-
धार इवरीस गुणते ॥ ५० ॥ ५१ ॥ दुर्देरारोग सोगा जरा
गने, ताप पंकांगरा दुत्तपने । गर्भधन वरी सर्प
वेच्छु विष, बालिका बाढमेवा कखेते ॥ ५० ॥ ५२ ॥
साइगी हाइगी रोटिणी रंकणी, कोटक मोटका दोष
ते । दाद उदर तणी बोल नोला तणी, स्वाम सीपाल वि-
राल दंते ॥ ५० ॥ ५३ ॥ धरणेद्र पद्यायनी समरशोभा-
नी, पाट आघाट अटवी अटने । लसभी लीला मिले
जुजस चेलाउने, सपल आसा फनि मन हसंते ॥ ५०

॥५४॥ अष्ट महाभय हरे कानपोटा टलै, उतै
 सोसंग भणै । वदत घर मीतसुं प्रीति विमल प्र
 पास जिण नाम अभिराम मनै ॥ उजितु ॥
 इति श्रीगोडी पार्वनाथजी वृद्ध स्तवन सम स

गौतमस्वामी का छंद ।

घर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम ज
 शदिस । जो कीजे गौतम नो ध्यान, तो घर
 नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिधर बड़े
 वाञ्छित लीला संपर्ज । गौतम नामे नावे रोग,
 नामे सुख संजोग ॥ २ ॥ जै बैरी बिरुआ बकड
 नामे नावे दूकडा । भूत-प्रेत नथी मंडे प्राण, ते
 ना कहू बखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे नीरमल
 गौतम नामे धाये छाये । गौतम जिन शासन
 गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल
 घृत गोल, मन वाञ्छित का पइत सोल । घरस
 निरमल चिस, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥
 उदयो अविचल भाण, गौतम नाम अपो जग
 मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सकल
 ॥ ६ ॥ घर मंगल घोड़ानी जोड़, बारु बिलहे ।
 कोड़ । महिपल माने मोटा राय, जो तुठे ।

॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरे काननोरा रत्न, उतारे क
 सीमग भक्तने । यदुत वर प्रीतार्तु प्रीति विमल प्रभु,
 पाम जिण नाम अभिगम मनै ॥ उज्जिनु ॥ ५५ ॥
 इति श्रीगोदा पाठ्यनाथजी गृह स्मरण मम स्मर ।

गोतमस्वामी का छंद ।

घोर जिनेश्वर केगं जिप्य, गौतम नाम जरो मि
 शदिस । जो कौजे गौतम नां ध्यान, नां घर बिट
 नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिघर बट, म
 वाञ्छित लीला मंज ॥ गौतम नामे नाचे रंग, गौत
 नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वरी बिज्जा बंकडा, त
 नामे नाचे टुकडा । भूत-धैर नवी मंडे प्राण, ते गौत
 ना कहं बख्खाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे नीरमल क
 गौतम नामे बाधे श्याय । गौतम जिन शासन शणगा
 गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सु
 घृत गोल, मन वाञ्छित का पडन पोल । घरमं घर
 निरमल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौत
 उदपो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण
 मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सकल विहा
 ॥ ६ ॥ घर मंगल घोंड़ानी जोड़, बारु बिलहे वाञ्छि
 कोड़ । महिपल माने मोटा राध, जो तुठे गौतम

प ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक दले, उत्तम नरेनी
 तन मोले । गौतम नामे नीरमल ज्ञान, गौतम नामे
 ये धान ॥ ८ ॥ पुन्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना
 म छे यह । कोह लावण्य समय कर जोड़, गौतम तुठे
 रति कोड़ ॥ ९ ॥ इति ॥

देसावगासी का पद्यस्वाण ।

धारक के तीन सामाधिक मेनी हो तो तथा जिहमी उवद्धा
 पेषउनी हो तो उन की विधि—

उपामे में जा कर तथा घर के एतन्त स्थान में काम हो
 गो धन काजा निहान्त कर कटामण एक वानू गग कर त्मान्त-
 मय देवे—

इच्छामि स्वमासमणो वेदिउं जात्रणिज्जाण निम्मी-
 हिष्माण मत्तपण चन्दामि ।

कह कर इगिवादिषा कर—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहिषं प-
 टिकमामि ? इच्छं । इच्छामि पटिकमिउं, इरियापहि-
 षाण विराहणाण वमणागमणे पाणकमणे कीयट्टमणे
 हरिषकमणे ओमा वल्लिग वणमण महीमकल रंभा-
 ण संक्रमणे, ले मे जीवा विराहिया, एगिदिषा, नेई-
 दिषा, नेईदिषा, पउरिदिषा, वेदिदिषा, एरिदिषा,

बलिया, लेमिया, मंवाड्या, मंवाट्या, परियाकि
किलामिया, उद्विया, डागाओ डाणं मंकाभिया, ई
वियाओ यवगेविया नम मिच्छामि दृष्टं ।

नम उन्नगकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विमं
करणेणं विमद्वाकरणेणं, पाचाणं कम्मणं निग्याय
हाण ठामि काउम्ममं ।

अधन्थ उम्ममिणं नममिणं ग्वासिणं
णं जंभाडणं उद्वणं वायनिमगणेणं ममलिणं
नमुच्छाण । सुद्धमेहि अंगमंचालेहि सुद्धमेहि से
वालेहि सुद्धमेहि दिट्ठिमंचालेहि । त्वमाडणं मा
मेहि अभगो अविगहिओ सुद्ध मे काउम्मगो । अ
अरिहंताणं भगवताण नमुच्छारेणं न पारेमि, ताव क
ठाणेणं मोणेणं भूतेणं अप्पाणं बोम्मिरामि ॥१॥

वाट नवका १ ॥ एक लोगम्म का काउम्मग करे, काउ
मा पार कर २५ " लोगम्म " उद्धव आदिये—

लोगम्म उज्जाअगरे, धम्मनिथवरे जिणे । अ
हंते किलहम्मं, अउयामं पि केवली ॥१॥ उस्तभमजि
अ वंदे, मंभवमभिगंदणं च सुमहं च । पउमप्यहं सुपा
जिणं च चंदप्यहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुण्हं
सोअलमिअंम वामुपुज्जं च । विमलमगंतं च जि
धम्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंधुं अरं च महिं,

मुणिसुख्यं नमिजिणं च । ध्वामि रिहनेमि, पासं सह
 वदुमार्गं च ॥ ४ ॥ एवं मां अभियुष्मा, विहपरयमला
 पहीणजरमरणा । चउदीसं पि जिणवरा, तित्थपरा मे
 पमोयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिप वंदिण महिणा, जे ए लोणस्स
 उत्तमा सिद्धा । आरुणरोहिस्तामं, ममादिवरमुत्तमं
 दिंतु ॥ ६ ॥ धरेसु निम्मलपरा, आइयेसु अरियं पया-
 मपरा । मागरवरगंधारा, सिद्धा मिद्धि मम दिसंतु
 ॥ ७ ॥

कि ए.क. भवाममं देव-इच्छाकोट सतिमह भगवन् देवा-
 वगामिभ नेश मुंदपती पटिमेई , मुंदपती पटिलेवे . कि त्वमा
 भवगा देव-देवावगामी पटिमेई , दूसरा त्वमाभगव देव
 देवावगामी टाई , तीन नवकाय गुणे , गुणवत्-इच्छाकोट
 मंदेवह भगवन् ! देवावगामी उच्चवगो जी. उस का पाठ नीचे
 प्रकां—

अहं नं भवे ! मुमुक्षां समीये देसावगामिं पच-
 वरामि द्रव्यं लिख्यं कालं भाव्यं, द्रव्यं
 नं देसावगामिं, लिख्यं नं उधवा अणधवा, काल-
 यं नं मुमुक्षां प्रमाणे जाय नियमं पचवराभि ,
 भाव्यं नं जाय गद्वेण न गद्विआभि , एतेनं न उलि-
 हामि अण्णं वेत्थमि रायवेणवा, एते परिहामो
 न पटिपयत्ता अभिमाह अप्रत्यक्षाभांगेण एहसागा-

लोकरसें उज्ज्वलगरं, धम्मतिथ्यपरे जिणे । अरि-
 हंते कित्तइस्सं , चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उत्तमम-
 जिणं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमहं च । पउम-
 प्हं सुपासं , जिणं च वंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च
 पुण्णदंनं , सीअरु मिअंस वासुपुअं च । विमलमणं
 च जिणं , धम्मं संनि च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंभु अरं च
 महिं, वंदे मुणिसुअपं नमिजिणं च । वंदामि सिद्धनेमिं
 पासं तइ चट्टमाणं च ॥ ४ ॥ पयं मत्त अनिपुआ ,
 विट्ठपपमला पहीणत्तरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा,
 नित्यपरामे पसायंतु ॥ ५ ॥ किलिप वंदिप महिणा,
 जेण लोकरस्स उत्तमा सिद्धा । आरगगयोरिलाभं, समा-
 दिपरमुत्तमं दितु ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मलपरा, आयेसु
 अदिपं पयासवरा । सागरधरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम
 दिसंतु ॥ ७ ॥

तिर जउउ ममी वा पाठ बोलन

जउउ सामिय जउउ सामिय, रिसइ मेजुंजि
 उअंनि पहु नेमिजिण जउउ पोर मयउरि-मेट्ठण ॥ १ ॥
 भमअच्छण मुणिसुअप, मुट्ठरिपाम इह इरिप-गं-
 एण । अवरविदेहिं जे निअपरा, विट्ठंदित्ति विदित्ति
 जे केवि । तीपाण्णागप-अंगइ ॥ वंदूं जिण सय्येवि ॥ २ ॥

सैन नरकण गुण के पापों पाने । एकामर्शो श्रीवर्मो वा-
 र्मिनी ॥ वरदात्मो पूजा निरिण्य नरकाम्नी पंथमी माड
 र्मिनी शिरो पूजा पंथिहार पामिरे गाथा ऊपर प्रमाणे ।

॥ श्री वासक्षेप पूजा ॥

नमोऽर्हतिस्त्रिद्विपाद्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

नार्थपति परितः नमं, धर्मधुरंधर श्रीगोर्जा ॥ देशना
 भूमन वरसना, निज वीरज यह वीरगोर्जा ॥ उल्लासो ॥ वर
 ध्याप निर्मल ज्ञान भासन, सर्वभाव प्रकाशना । निज
 गुण भद्रा आत्मभाष्य, वरग धिरमा वाग्यना ॥ निज
 नाम धर्म प्रभाव अनिजय, प्रानिहारज ज्ञांभना ॥ जग
 जेतु कलगायन भाग्यन, भविक जनने ज्ञांभना ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानाम्प्रसादवद्वाय जगत्
 जगाम्मुनिवारणा श्रीमज्जिनेन्द्राय परितोत्पद वाम-
 नोर्ष वज्रामहे स्वाहा ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ शक्य करम मल क्षयकरी, वरज
 गुण वरुणोर्जा ॥ अप्याधाय प्रभुता मयी, भाग्य
 मेपनि भूगोर्जा ॥ १ ॥ (उल्लासो) जेह भव आत्म
 गहज वरगति, जति, द्युति, वणे करी । स्वद्वय श्रेष्ठ
 ग्यजाल भावे, गुण अमन्ता आदरी । सुखभाव गुण
 पर्याय परिणति, मिष्ट साधन परभणी । मुनिगह

जरामृत्युनिवारणाय श्रीमन्निनेन्द्राय चारित्र्यपदं वास-
शेः यजामहे स्वाहा ॥८॥

इच्छा रोधन तप नमो, पाप अभ्यन्तर भेदेर्जा ॥
आत्म मत्ता एकता, पर परिणति उच्छेदे र्जा ॥ १ ॥
(उल्लास) उच्छेदे कर्म अनादि मंनसि, जेह सिद्धपणु
ये । गोग संगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे ।
अंतर मुहुरत तम्य मांसे, मर्य संवरना करी । निज
आत्म मत्ता प्रगट भावे, करो तप गुण आदरी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं गरमाग्मनेऽनन्तानन्मज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमन्निनेन्द्राय नमःपदं वास-
शेः यजामहे स्वाहा ॥६॥ इति

अथ नव पदों के नव चैत्यपंदन, नव स्तयन
नथा नव धुड ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यपंदन ॥

अथ १ श्री अरिहंत आनु, अविक्रमक विकार्या ॥
लोकात्मोक अरुपि रुपि, तम वातु प्रकाश्या ॥१॥ त-
मुद्गात शुभ केवई, क्षणकृत मारार्या, शुक्र स-
रम शुनि पादसे, अंगो पर अविमार्या ॥ २ ॥ अंतरंग
रिपुगण हर्ताण, हृद्य अप्या अरिहंत ॥ ततु पद वे
कजमे रमन, हीरपारम निम संन ॥३॥ इति ॥ 'अकि-
नि नामनिर्भे'ने नमोऽर्जुन नमः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमच्चिनेन्द्राय पुं दर्शनपदं वामने
पञ्चामहे स्वाहा ॥३॥

नमोऽर्हत् ॥ भव्य नमो गुण ज्ञाननं, स्वपर प्रकाश
भावेर्जा । पर जय धर्म अनन्ता, भेदाभेद स्वभावेर्जा
॥ १ ॥ (उल्लासो) जे मुख्य परिणामि सकल ज्ञान
बोधक भाव विलक्षण । स्यादाद-संगीनत्व रंगी
प्रथम भेदा भेदना । अधिकल्पने अधिकल्पयस्तु, सत्य
संगम भेदना ।

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमच्चिनेन्द्राय ज्ञानपदं वामने
पञ्चामहे स्वाहा ॥३॥

नमोऽर्हत् ॥ चारित्र्य गुण बन्धी यलो नमो, तत्
रमण जसु मूर्च्छोर्जा ॥ पर रमणीय एणुं टले, मत्त
तिष्ठ अनुकूलोर्जा ॥१॥ (उल्लासो) प्रतिफल आभवा
भवाग संगम, तत्त्व धिरता वृत्त मयी ॥ शुद्धि पाप
मंति मुनि दश पद, पंच संवर उपवर्ग ॥ सामागिता
दिक भेद धर्म, गथाग्याने पूर्णता ॥ अकुराव अ
तृप जमल उग्राल, काम कटमल मूर्छिता ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म

जराभृशुनिवारणाय श्रीमन्निनेन्द्राय चारित्र्यपदं धाम-
क्षेत्रं पञ्चामहे रचाहा ॥८॥

इच्छा रोधन तप नमो, पाप अघोर भेदेजी ॥
आत्म सत्ता एकता, पर परिणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥
(उलाहो) उच्छेदे कर्म अनादि मंनति, जेह सिद्धपणु
करे । पांग सेगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे ।
अंगरं सुहरन तत्त्व सांगे, सर्व संहरना करी । निज
आत्म सत्ता प्रगट भावे, करो मप गुण आदरी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्मज्ञानम्यस्याय जन्म-
जराभृशुनिवारणाय श्रीमन्निनेन्द्राय नमःपदं धामक्षेत्रं
पञ्चामहे रचाहा ॥८॥ इति

अथ नव पदों के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन
तथा नव धुंड ॥

॥ अथ अरिहंतपदं धाम्यवंदन ॥

॥ १ ॥ नमो २ श्री अरिहंत भानु, अविक्रम्य विक्रमी ॥
लोकांशोक अरुणि रवि, सम वस्तु प्रकाशी ॥१॥ स-
मुद्रागल शुभ वेधन, क्षणभंग मलरामी, शुद्ध व-
रम शुनि पादसं, भणो वा अविनाशी ॥ २ ॥ अंतरंग
रिपुगण दर्शी, हृद्य अण्णा अरिहंत ॥ तसु पद वे-
चलमं रमन, होरघरम निज मंग ॥३॥ इति ॥ 'अकि-
णि नामनिष्ठे'मे नमोऽर्जन तक ॥

मृष्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्र्यपदं वाम-
पञ्चामोहं स्याद्वा ॥८॥

इच्छा रोधन तप नमो, पाप अग्र्यं नर भेदे जी ॥
तम मना एकता, पर परिणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥
(लाजो) उच्छेदे कर्म अनादि संनति, जेह सिद्धपाणु
ते । योग संगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे ।
अग्र सुहरत तन्व भावे, सर्व संवरना करी । निज
आत्म मना प्रगट भावे, करो नप गुण आदरी ॥
ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽमन्तानन्तज्ञानस्यम्पाय जन्म-
जरामृष्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय नवपदं वामभोगं
पञ्चामोहं स्याद्वा ॥९॥ इति
अथ नव पदों के नव चैत्यचंदन. नव स्तवन
तथा नव थुड ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यचंदन ॥

जग २ श्री अरिहंत मानु, भविकमल विकारो
लोकां लोक अरुवि रुवि, सम वातु प्रकाशो ॥१॥
मुदूपात शुभ केवल, क्षयशून्य मलराशो. शुद्ध
रम शुनि पादोंसे, भगो पर अविनाशो ॥ २ ॥ अम
रिपुगण दगीण, हृय अप्पा अरिहंत ॥ ततु पद
काजमें रमन, हीरपद्म जित संग ॥३॥ इति ॥ ३ ॥
नि नामनिर्गुणे नमोऽर्जुन तक ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय नमः
जगत्सुनिवारणाय श्रीमन्निनेन्द्राय नमः ॥ ३ ॥
नमोऽर्चन ॥ ३ ॥

नमोऽर्चन ॥ ३ ॥ अथ नमो गुण ज्ञानने, रश्मि प्रकाश
भावेर्गो । पर जग भस्म अनन्ता, भेदभेद स्वभावे
॥ १ ॥ (उद्गारो) जं मुख्य परिणति सरल ज्ञान
बोधक भाव विलक्षण । अज्ञात-मोक्षमय रश्मि
प्रथम भेदा भेदना । अविज्ञानने अविज्ञानवत्, ना
मोक्षम भेदना ।

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय नमः
जगत्सुनिवारणाय श्रीमन्निनेन्द्राय नमः ॥ ३ ॥
नमोऽर्चन ॥ ३ ॥

नमोऽर्चन ॥ ३ ॥ अथ नमो गुण ज्ञानने, रश्मि प्रकाश
भावेर्गो । पर जग भस्म अनन्ता, भेदभेद स्वभावे
॥ १ ॥ (उद्गारो) जं मुख्य परिणति सरल ज्ञान
बोधक भाव विलक्षण । अज्ञात-मोक्षमय रश्मि
प्रथम भेदा भेदना । अविज्ञानने अविज्ञानवत्, ना
मोक्षम भेदना ।

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय नमः
जगत्सुनिवारणाय श्रीमन्निनेन्द्राय नमः ॥ ३ ॥

॥ अथ अरिहंसाद स्तवन ॥

(१) जो सदाशिव ही हो वादा कुजलमर्दिन, न कल
 था मेराय गुण वर्तित, वैन, नमो, भजे मे
 अरिहंसा ॥ मन मानने ॥ अत्र समग्रमें गणन ॥
 मरे आदासी हीं ईश्वर ॥ म० ॥ १ ॥ वादा जगें मन क
 भोग । मनु ० ही नुन दः मनुगाम ॥ म० ॥ गुण
 काय मे मन नय मंक, निज हीं मारु कर को ॥
 म० ॥ २ ॥ मेरा मात्रके मन दयादा, मेरीने क
 नय दया ॥ म० ॥ भादि समग्र रम्य दनरमु जी
 सुदम लका निग गोग अर्थाव ॥ म० ॥ ३ ॥ ल
 योगी समग्र एक, हीना मंग गुणो कर हो ॥ म० ॥
 समग्रामेले जोग निग, कृप्या जे लका जोगी मं
 ॥ म० ॥ ४ ॥ वेदममेनादाग्या वाग, कुशल वदे
 श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेमं गुणमें गुण समे द्य, जा
 सा जगह निममेव ॥ म० ॥ ५ ॥ इति अरिहंसा
 स्तवन ॥

॥ अथ अरिहंसाद स्तुति ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्रत्येक लोकालोक समग्रो जी
 केवलज्ञानकी ज्योति प्रकाशक अनन्य गुणो करि प
 जी ॥ सोही भव धानक आराधी गोत्र मोर्धर न
 जी, मरे गुणां करि एहवा

मुरो

हे ॥ इति अतिरिक्त पद स्तुति ॥

॥ अथ सिद्धपद चैक्यवन्दन ॥

धीमतेरी पूर्वं ध्यान, तनुहि नग भागी ॥ पुण्य प-
दपदसेन में, उत्तर गगन लागी ॥ १ ॥ समग्र एक में
गोचरान, यथो नियुक्त निरासी ॥ चेतनभूवे आत्मरूप,
हुँदिना रही सागी ॥ २ ॥ वेवल दंजामनाणधी न ,
रूपानीन स्वभाव ॥ सिद्ध भवे तनु हीरधर्म, वंदे धरि
गुण भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैक्यवन्दन ॥

॥ सिद्धपद स्तुति ॥

धरि महिला ऊपर मेह करोसे धाजली, न बाल)
अष्ट धरम नग मास हीना कांड़ी पूर्वमें ॥ म्हा-
लाल ही० ॥ उत्कृष्टों कर धाम नयोंगी धाममें ॥
म्हा० म० ॥ अज्ञोंगी के अंत मजे भविष्यता ॥
म्हा० त० ॥ शैलेसी रहे कर्म दल गुण श्रेणिता ॥
म्हा० द० ॥ १ ॥ हस्याक्षर वंश काल रहे ते योगमें ॥
म्हा० र० ॥ तिरम मृत्तिनो अन्त करीनें अन्तमें ॥ म्हा-
क० ॥ समन करे नगरइमें अक्षिप होपनें ॥ म्हा०
अ० ॥ पुण्यपयोग असेन स्वभाव अपेधनें ॥ म्हा०
स्व० ॥ २ ॥ इष्टगुण नय परमाण योजन लक्षे रही ॥
म्हा० यो० ॥ पुनः विज्ञादा भास निरालंबन रही ॥
म्हा० नि० ॥ मध्ये योजन अष्टपनाश्रुति अन्तमें ॥

धारी जीवक, आचारिजपद सार । तिन कुं पंदे हीर
भस, अहोवर मौ धार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपद व-
न्यवेदन ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवन ॥

(नणदल धांदली गो, ग गाल)

सर्वी लखगर्भा जेणे, हण्यो प्रोथ सुभट सम देणो
हो, गणपति गुण पेसी ॥ टेर ॥ मान महागिरि वयर,
अनिगांभन मरुष वयर हो ॥ ग० ॥ १ ॥ दंभरूप विस-
वेली, घर अउसव कीर्त टेली हो ॥ ग० ॥ सुच्छा वेलथो
भरियो, लोट सागर मुत्तं तगियो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन
माग मद हीनो, जिण दम शम जंथें कीनो हो ॥ ग० ॥
मोह महामह नाहयो, पुण धराम मुगरें पाहयो हो ॥
ग० ॥ ३ ॥ दोस गणंद वम कीनो, धरि उपजाम अंकुस
लीनो हो ॥ ग० ॥ अंगरंग रिपु भेत्ता, सुरवर विण जिण
निपेत्ता हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रम कृति गुणपी लीनो, लुप्र
जरचे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद गह-
षो, धरी जीव कुजलना मेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति
आचार्यपद स्तवन ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तुति ॥

पंचांगारकुं पालि उजवाले दांप रहित गुणधारी
जी । गुण हर्नारे आगमधारी । दादज धंग विधारी

म्हा० घ० ॥ मक्षी पक्ष थी हीन भर्णा सिद्धान्तमें ।
 म्हा० भ० ॥ ३ ॥ तनुपञ्चभारा नाम शिलासं जोषें ।
 म्हा० शि० ॥ युग लोचन में भाग अलोक कुं सारें ।
 ॥ म्हा० घ० ॥ लघु अंगुल पत्तीस प्रमाण व्यापार ।
 ॥ म्हा० प्र० ॥ धृद्धि धनुशतपंच गुणासै हीनता ॥ म्हा०
 ॥ गु० ४ ॥ मिलिया एकमें अनंत आवाधा ना लही ॥ म्हा०
 घ० ॥ अष्ट प्राण भरि रम्य सिरीही जो सही ॥ म्हा०
 मि० ॥ बीजो पद श्री सिद्ध धरो मनगेह में ॥ म्हा०
 पर० ॥ कुजल भये जग जीय मिथोगा तेहमें ॥ म्हा०
 मि० ॥ ५ ॥ इति मिद्धपद स्तुति ॥

॥ मिद्धपद स्तुति ॥

अष्ट करमहुं भजन करीनें गमन किंगो शिष्यार
 जी । अष्टायागे सादियनादि निदानेंद निदरामीजी
 परमात्म पद परग बिलाजी अष्ट घन दाग विना
 जी । अनंत अनुष्टमग शिष्यपद व्यापों केवलजा
 'भारमीजी ॥ १ ॥ इति मिद्धापद स्तुति ॥

॥ तृतीय आचार्य पद चैम्बरद्वन ॥

जिन पद कृत सुन्दरन अनिल । मिश्रता सु
 भारी । प्रथम मयल घन मोहर्क । जिनमें समुहारी
 ॥ १ ॥ उद्यादिक जिनगत गीत । नवनन किमारी
 भव कृपे गार्ध पईत । जगजन निम्नारी ॥ २ ॥ पंच

पारा जीर्ण, आचारिजपद सार । तिन कुं पदे ही
धर्म, अद्भुत सौ बार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपद
स्मरण ॥

॥ अथ आचार्य पद स्मरण ॥

(नणदल बांदली गो, ग नाल)

सर्वा लक्ष्मणा जेणे, हृदया मोध सुभट सम रेणे
हो, गणपति गुण नेणे ॥ हेर ॥ मान महागिरि पदने
अतिगोभन मरुत वपरे हो ॥ ग० ॥ १ ॥ दंभरूप विम
वेली, पर अद्भुत कीर्ति देली हो ॥ ग० ॥ मुच्छा वलध
भरियो, लोट सागर मुत्तं तगियो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन
माग मद हीनो, जिण दम शम जंघे कीनो हो ॥ ग० ॥
मोह महामह नाडयो, पुण पैराग मुगरे पाडो हो ॥
ग० ॥ ३ ॥ दोस मयंद यस कीनो, भरि उदघास अंकुश
लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु भेया, सुरवर विण जिण
निषेया हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रस कृति गुणगी लीनो, मृद
अरंभ आगम वीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद पद
बा, परी जीव कुशलता येवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति
आचार्यपद स्मरण ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तुति ॥

पंचाचारकुं पाण्डे उदघाते दोष रहित गुणधारी
जी । गुण दर्शारे आगमधारी । वायुज धर्म विचारि

जी । प्रबल सबल धन मोह् हरणकृं अनिल समो गुण
वाणी जी । क्षमा सहित जे मंजम पालै आचारज गुण
ध्यानी जी ॥ इति आचार्यपद स्तुति ॥

॥ चतुर्थ उपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

धन धन श्री उवज्ज्माय राघ, शठता धन भंजन ।
जिनबर दिसत दूबाल मंग, कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥
गुणधन भंजन मण गवंद, सुय शृणि कियोंजण ।
कुणालंघ लोय लोयणें, जल्यय सुयमंजण ॥ २ ॥ मण
प्रागमें जिन लखो ए , आगममें पद तुर्य । तिनमें
अहनिश हारधर्म वंदे पाठक र्य ॥ ३ ॥ इति उपा-
ध्यायपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवन ॥

(मांघलिया अलग्ग रहोनें, ए ब्याल)

हृयने ३ दृगं हृयने, जेतन भायै सठने ॥ १ ॥
हृयने ॥ २ ॥ मृमा पाम वयुं आवे ॥ ३ ॥ तुभने कुण व
लायें, ४ ॥ ॥ ५ ॥ आरुणी ॥ ६ ॥ सो संगे निज वंशेंटीनों, रघन
गरभ भुजागो । नाणावरणी खय उपशमसे, भावें
मंशणी ॥ ७ ॥ १ ॥ इत्ये ने परजातें कीना, जानि
नाम व्यपदेश । एवंगो गो तुग गजादिक, किण व
उपदेश ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ इत्यादिक वह सुश्रुं शंका, ते
संगे लागी । नालयणकी गमना मेसा, में भयो गो

रागी ॥६०॥३॥ उप कहिये हृषिकेश भविषानो, अधि-
यां हाभन आय । आधोनां मन पीड़ानामें, माधो-
येनविलाप ॥६०॥४॥ आधिनये समरीगे घर आगम,
मृधसेते डयउकाय । मन् सेबाते हजि शठताकुं, चेतन
कुशलना पाय ॥ ६० ॥५॥ इति उपाध्याय स्तवन ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तुति ॥

अंग इत्यौर चउदे पूरय गुण पनर्षामना भारीजी,
मृध अरधपर पाठक कहिये जोग ममाधि विचारी जी ।
तरगुण सुग आगम पग जग निदेने मारी जो, सुनि-
गुण घारी पुध विचारी पाठक गृजो अधिकाारी जी ॥
१ ॥ इति उपाध्याय स्तुति ॥

॥ अथ पंचम साधुपद नैम्यवंदन ॥

हंसए नाण गरिअ करी, पर शिवरद गार्मी, धर्म
सुल्ल सुधि चरमें, आदिम ग्रथ कामी ॥१॥ गुणप-
मत अथमतनै, भये अंभरजामी । मानस इंदिय दम-
नभून, समदम अभिरामी ॥२॥ पावनि घन गुणगणा
भरयो ए, पंचम पद मुनिराज । नव्यदूरेकज नमन टै,
हीरधर्म के काज ॥ ३ ॥ इति साधुपद नैम्यवंदन ॥४॥

॥ साधुपद स्तवन ॥

(माएन माएन मनि करो, गुनाल)

निजसाया लगजन कहे, धौरे चउगनि वरन मे

रोसहो ॥ मुनींदजी ॥ राग हीन भय तुं कर ॥ सावित्री ॥
 जिय रमणी में हेत हो ॥ मुनींदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद
 मजी रहे ॥ सा० ॥ छटे पृथ्व कोइहो ॥ मु० ॥ शन
 संगम आगम कर ॥ सा० ॥ लघु काले गुण आदि
 हो ॥ मु० ॥ २ ॥ स्नानदि निद्रा उदै ॥ सा० ॥ पामें कर्म
 निरंद हो ॥ मु० ॥ प्रयत्ना निद्रा में रही ॥ सा० ॥
 धारम गुणना पाम हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थिति रम धार
 प्रमुख पर ॥ सा० ॥ जो गुण संख्यानीत हो ॥ मु० ॥
 नां विग निग जगमें लही ॥ सा० ॥ त्रिकथन गुणना
 गगन हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ गण श्रय में जिय पये ॥ सा० ॥
 साधन पर पर जायहो ॥ मु० ॥ साधु सुख ननु पर
 में ॥ सा० ॥ कुशल भवतु जगनीयहो ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति
 वैचम साधुपद स्तवन ॥

। अथ साधुपद स्तुति ॥

गुमति गुणति कर संज्ञम पाले संव वपानीत
 शक्ति जी, परकाया सांकुल साधारण नयविध प्रत्यक्ष
 गतिजी । वैच मगधन गृहा पाले परम शुद्ध उर
 कांतिजी । साधक शक्ति कर कर्म लपारी दम पर गुण
 उपजावे जी ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ छटे दर्शनपद भगवद्गन ॥

हृदय प्रगल्भ नित्य । अष्ट नमस्त्रि संसार ॥

जी । प्रवाराकपाने सम तुल्य भाख्यो गणधर अति
मुरा जी, ए दर्शनपद निम निम बंदो भवसागर से
सीरा जी ॥ १ ॥ इति दर्शनपद स्तुति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद कैत्यवेदन ॥

क्षिप्रादिक रस राम वहि, मिन आइम नाग ।
भाय मियापमो जिन जनिम , सुग योस प्रमाण ॥ १ ॥
भव गुण पमणि ओहि दंग, मग लोचन नाग । लोच
लोच स्वरूप जाण, इक केवळ भांग ॥ २ ॥ माणापानी
नामर्था ए, जेवन नाग प्रकाश । समस पदमे हीरपम,
निम आइम अवकाश ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद कैत्यवेदन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवन ॥

(ग्यारे जनि उद्धरणे, ए पाल)

जिनया भाविम आगम सगिया, गम्य गभासि
गमिया जी ॥ ग्यारे जगजन नाग ॥ मे उसम या ना
बहाणि, भविजन अहनिज ग्यारे जी ॥ ग्या ॥ १ ॥
अभासत कुनव गुरुभा, वेणावेन अघंभा जी ॥ ग्या ॥
देव कुदेव अहिन दिन-गरी, जागे जेग निगारी जी ।
ग्या ॥ २ ॥ भुनि मनि दंग हि ईडी नाग, मेण को
निपात जी ॥ ग्या ॥ ओरी मग केवळ हे काद, जीव
ग्यारे गुरुभा जी ॥ ग्या ॥ ३ ॥ अथ विज्ञान गम्ये ज
जाने, लोकादिक अनुमाने जी ॥ ग्या ॥ त्रिमुदर ॥

कृत्वा जोग सुधा मना , लब्धा मंख स्वभाव (सु०)
 ॥ २॥ पर्याप्ता लघु जोग में, वृद्धिलह जगमान (सु०)
 मध्ये वसु समये लहै , अंते द्योते जाण (सु०) ॥३॥
 सहकारी मानसमुखा , कारण रम्य बलेण (सु०) ॥४॥
 घन प्रकारना , सस प्रभून का तेन (सु०) ॥५॥
 धन रूपी भलो, चेतन संयम घाम (सु०) कर घन मित
 पद धर्म में , कुशल भवतु अभिगम (सु०) ॥६॥
 ॥ इति चारित्र्य पद स्तवन ॥

अथ चारित्र्यपद स्तुति ॥

करम अपचय दूर ग्वपाये आरम ध्यान लगावैजी,
 पारे भाषना सुधा भाये सागर पार उतारै जी । पर्याप्त
 राज कुं दूर तजी ने चकी संयम धारैजी । पर्याप्त
 चारित्र्य पद नित घन्दो आनम गुण हितकारै जी ।
 इति चारित्र्य पद स्तुति ॥

नवमो तपपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीशिवभादिकर्त्तार्यनाथ, तद्भव शिव आण । विवि
 अन्तेरपि याव, मध्य द्वादश परिमाण ॥१॥ वसु का
 मित आमां सही , आदिक लब्धि निदान । भेदे समान
 युत गिणे, दग्धन कर्म विमान । २॥ नवमो श्री तपा
 भलोण , इच्छा रोष मरूप । वन्दन मे नित हीरघम
 दूर, भवतु भवकृप ॥ ३॥ इति तप चैत्यवन्दन ॥

अथ तपपद स्तवन ॥

पारम भेद भण्णा जिनराजै, याह्य लणा जग/काजै
 (जिब पदोणि)। तिन भव मिद्धि नणा घर जाता ।
 जेनवर पिण तपना कर्मा रे ॥१॥ (जि०) सममा सहिते
 जेनमे भारी, भर्सा कर्मचमू पिणहारी रे (जि०) जीब
 लिके, जे कर्म कथोरा । दहे मय पावक का जोरा रे
 (जि०) ॥२॥ तप लख्य ना कुमम हे फाटि, देय नर
 ते कलते मिद्धि रे (जि०) पाप सकल हे ममनी राशी,
 पमान से जाय नार्जा रे (जि०) ॥३॥ जम्स पसाये
 दिये धाम । मर्या सगरी जग हिम कल्ल रे (जि०)
 यनि दुषर पुण माण्णमा हीना, काम लाने धाम कि-
 रे (जि०) ॥४॥ इच्छा रोधन रूपा कहिये, तपपद ही
 लन कहिये रे (जि०) पाठक हीरधर्म कृपा रे । नव
 द कुशला कु भाने रे ॥ जि० ॥ इति तपपदस्तवन ॥

अथ तपपद स्तुति ॥

इच्छागोचर तप ते भाग्यो आगम मेहनो राग्यो
 जी, प्रण्य भावने द्वाद्वा दार्ढ्यो जोग समार्थो राग्यो
 जी । घेतन निजगुण परिणत वेर्णो मेहीज तपगुण
 दार्ढ्यो जी, मयधि सकलनो कारण देर्णो ईश्वर ॥ मुख
 भार्यो जी ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ नवपद गृह्य स्तवन ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमा, नवपद अभिरामा

लोप ॥ अहो नव० ॥ कमलासागर गुणनिधि, ज

अंतरजामी रे लोप ॥ अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनज

पूजित सदां, लोकालोक प्रकासी रे लोप ॥ अहो

लो० ॥ तथा श्रीअरिहंतजी, नमं चित्त उद्भासी रे

लोप ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी

धया सिद्ध सार्वी रे लोप ॥ अहो थ० ॥ सिद्ध नमो

भवि भाषी, जे आगम अरूपी रे लोप ॥ अहो जे०

॥ ३ ॥ गुण छर्त्तासे सोभना, सुंदर सुखकारी रे लोप

॥ अहो सु० ॥ आचारज नीज पदै, बंदू अविकारी

लोप ॥ अहो वे० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशामी, त

दूषिध आधारि रे लोप ॥ अहो न० ॥ चौथे पद प

टक नमो, संयोग समार्थ रे लोप ॥ अहो सं० ॥ ५

पंचाचार पालन परा, पंचाश्रय स्थायी रे लोप ॥ अहो

वे० ॥ गुणगामी मुनि पांथमें, प्रणमं बह्मभारी रे लोप

॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनं ओललै, शुभ अद

अवि रे लोप ॥ अ० अ० ॥ छठे गुणदरमगा नमो, आन

शुभ भावि रे लोप ॥ अ० आ० ॥ ७ ॥ ज्ञान नमो गुण

मानमें, जे पंच प्रकाश रे लोप ॥ अ० जे० ॥ सप्त

प्रकाशक दिनमगा, अज्ञान निवारि रे लोप ॥ अ० अ०

॥ ८ ॥ आठमें चारित्र्यपद नमो, परमेश्वर निधारी रे
 लोच ॥ अ० प० ॥ स्वांन्यादिक दम धर्मनो, जेह ते अ-
 धिकाते रे लोच ॥ अ० जे० ॥ ९ ॥ नवमे घलि तप-
 पद नमो, पापान्धनर भेदे रे लोच ॥ अ० वा० ॥ पापान्ध-
 काल अनन्तना, जे कर्म उच्छेदे रे लोच ॥ अ० जे०
 ॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानयो, एगवै शुभ भावे रे
 लोच ॥ अ० एग० ॥ नव श्रीपालनगी पौ, मन वंछित
 पार्थ रे लोच ॥ अ० म० ॥ ११ ॥ आम् वैद्यक मासमां,
 नव ध्यापिल करिये रे लोच ॥ अ० न० ॥ नव ध्याली
 विधि युत करी, शिष्यकमला घरिये रे लोच ॥ अ० शि०
 ॥ १२ ॥ मित्रवक्त्रनी यह पौ, घर सहिमा कीजे रे लोच
 ॥ अ० घ० ॥ श्रीजिनलाभ कहे महा, अनुपम जम
 लीजे रे लोच ॥ अ० अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवन ॥
 अथ नवपद स्तवन ० ॥ ॐ ॥ राम मास् ॥

मोरधनायक जिनवर जी, अनिमय जाम अनय ।
 मित्र अनंत महागुणी जी, परमानंद मरुप । भविक
 मन धारज्यो रे । धारज्यो नवपद ध्यान ॥ अ० ॥ १ ॥
 ॥ ए देर ॥ श्री आनंदज गणधर रे, गुण उत्तीम
 निधाम । पाठक पदधर मुनियर जी, भुन दापक सु-
 विद्वाम ॥ अ० ॥ २ ॥ सुमनि गुपनि पर गोभणजी,
 साधु समनार्थन । सम्यग्दर्शन मुंदर जी, ज्ञान प्रकाश

अनेम ॥ भ० ॥ ३ ॥ संवर सावना चरण छे रे, त
 उताम विधि होय । ए नयपदना ध्यानधो रे, निरुपाधि
 सुख होय ॥ भ० ॥ ४ ॥ अमृत सम जिनर्मनो रे
 मूल ए नयपद जाण । अविचल अनुभव कारणे जी
 नितप्रति नमन कल्याण ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति पद ॥

॥ रागप्रभानि ॥ नयपद ध्यान धरारे ॥ भविका नभ
 मम वचन काया कर एकांते, विकथा दूर हरे ॥ भ०
 म० ॥ १ ॥ मंत्र जड़ी अरु मंत्र घने रा । इन मंत्र
 विमरो रे । अरिहन्गादिक नयपद जपने, पुण्य भेदा
 धरारे ॥ भ० ॥ २ ॥ शब्द मिष्ट नय निष मंगल माना
 मंगलि मन्त्र धरारे । धामपन्द गाकी वलिहारी, शि
 पर बीज स्वरो रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥ जीया नमुर सुजाण, नयपद के गुण गाणे
 ॥ जी० ॥ नयपद महिमा जगमें मोदी, गणधर धार
 शय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ कर्म निपायिन दूर करण को,
 सुन्दर सुद उपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इनको पुष्ट प्र
 कशन कर्मा, भक्तगमा सुख पाये ॥ जी० ॥ ३ ॥
 जिन नय भाग्या होयगे, नयपद मंगल पाये ॥ जी०
 ॥ ४ ॥ परम दामा गिर स्वर्गो पर के, ममर ममा दुद
 लाये ॥ जी० ॥ ५ ॥ निह ॥

जाम्बे पोक्तं कर्तुं भज्याः ॥ ३ ॥

सानिधं कुर्वन्तु देवाः ॥ ४ ॥

॥ नववद् चिन्त्यवन्दनानि ॥

उत्पलमलाग महेमगाणं , सत्पाहिहेगम
 मंठिगाणं । महेमगाणं दिगमउक्कगाणं, नमो नमो हो
 मगा जिगाणं ॥ १ ॥ सिद्धागमार्गं सुरमालगाणे
 नमो नमोऽंगमउक्कगाणं । मुरीगा दुरीकगदुगागाणे
 नमो नमो मूरममणगाणं ॥ २ ॥ सुमग्यविम्वारणक
 गाणं , नमो नमो वायगकुंजरगाणं । स्याहण संमादि
 संजगाणं, नमो नमो सुद्धदगादुमाणं ॥ ३ ॥ जिणुम
 काः लवणगाम, नमो नमो निम्मलदंसगाम । गम
 मंमंजममंजगाम , नमो नमो मागदियागाम ॥ ४ ॥
 गामदिवाविदीग मजिगाम, नमो नमो मंजमगा
 गाम । कम्मदमोम्मजगदुजरगाम, नमो नमो नि
 मगांमगाम ॥ ५ ॥ इह नववदमिद्धं लद्धिनिवागमि
 वगदिसुगगां ह्रीं निरेहमगां । दिगगा ॥
 गां , मोगिरीदावगां । वित्तग विजग नरं , नि
 दवहं नमासि ॥ ६ ॥ इति प्रथमम् ॥

॥ पुनः विनोदवारम्भ ॥

श्रीअहिन्त्य उदा नानि , अवि मुन्दा
 संधं मिद्ध अवन्य ज्ञान्य , भावपादुग भव ॥ १ ॥

आचारज उद्यममाय साधू , समता रस धाम । जिन
 भाविनि निदान्न दृष्ट , अनुभव अभिगम ॥ २ ॥
 सोप कीज सुग मेरदाण , माण चरम मय दृष्ट । आचार
 समानन्दपद , ए मय एव अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह पर-
 मेश्वर आनन्दवन्द , जग माहि प्रसिद्धी । निनामणि
 मय जाम जोग , एह पुगनि लद्धी ॥ ४ ॥ निहृअण
 मार अवार एह मदिया मनधारां, एगिहर पर जेजाल-
 जाल निम एह रंभागं ॥ ५ ॥ मिद्वयक पद विपरीत ,
 महजानन्द स्वरूप । असृजमय कल्याणनिधि , घाटे
 संगन भूष ॥ ६ ॥ द्वितीये स्वेपूर्णम ॥

॥ श्रीनवपदजी की स्तुति ॥

निरूपम सुगदायक, जगनायक, लायक शिषगनि
 गार्वा जी । कल्याणमागर निजगुण भागर , शुभ स-
 मता रसधार्मी जी । श्रीमिद्वयक शिरोमणि जिनवर,
 आचार जे मन रंगीजी । ते मानव श्रीपाम लणीपेरं, पामे
 सुग सुगमगीजी ॥ १ ॥ अखिरंम मिद्व आचारिज वा-
 टक , साधु महागुणवंमार्जी । दुस्मिमा माण चरमा
 नय उत्तम, नवपद जग जयवंमा जी ॥ एहनुं ध्यान भ-
 रमां लहिपे, अविचल पद अविनार्जीजी । ते मघला
 जिननायक नमिपे , जिण ए नीमि प्रकाशीजी ॥ २ ॥
 आगू मानमनोहार निम बलि, ध्ययकमास जगीगं जी ।

उजवाली सातमयी करियें, नव आंखिल नव दिवसें जी ।
 तेर सहस्र बलि गुणीयें गुणगुं, नवपद करो सारो जी ।
 इण्परी निर्मल तव आदरियें, आगम साख उदारों जी ।
 ॥३॥ विमल कमल दल लोयण सुन्दर , श्रीचक्रेश्वरि-
 देयी जी । नवपद मेघग भविजन केरां, बिघन हरो सुरसे-
 वी जी । श्रीस्वरमरगच्छ नायक सद्गुरु, श्रीजिन भक्ति
 मुणीदाजी । तासु पसायें इन पर पभणे, श्रीजिन काम
 मुरीदाजी ॥ ४ ॥ इति संपूर्णम् ॥

अथ द्वादश आर्हत गुणाः ॥

- १ अशोकदृक्षानिहार्यसंयुताय श्रीअर्हते नमः ॥
- २ पुष्पवृष्टिपानिहार्यसंयुताय श्री अ० ॥
- ३ दिव्यवनिप्रानिहार्यसंयुताय श्री अ०
- ४ लालरपुमप्रानिहार्यसंयुताय श्री अ०
- ५ वृद्धनिप्रानिहार्यसंयुताय श्री अ०
- ६ उग्रप्रपप्रानिहार्यसंयुताय श्री अ०
- ७ सुवर्गमिद्रासनप्रानिहार्यसंयुताय श्री अ०
- ८ मार्मरत्नप्रानिहार्यसंयुताय श्री अ०
- ९ ज्ञानानिशयसंयुताय श्री अ०
- १० वृत्तानिशयसंयुताय श्री अ०
- ११ दयानानिशयसंयुताय श्री अ०

१२ आपायापममानिशपसंयुताय श्री अ०

॥ इमि द्वादश आर्द्रत गुणाः ॥

इत्यादि नमस्कार करके अक्षय्य उत्सवदिनमें कहके १२ लोग-
निश काउस्मग को, काउस्मग पार कर एक लोगस्त प्रगट कहे,
दी स्वम्भानक जा करके चैत्यचंदन को, चैत्यचंदन पार के बाबिल
की पहले पछन जल पीने तब चैत्यचंदन कर के पीने, पीके मध्याह्न
मिन पांचे शकम्भरसे देव बादे। देव बादमें की विधि भागे लिखी है
हो देव सेवा। गुणना नवे पदाक्षर दो हजार २००० वरणा—

१ ॐ ह्रीं नमो अरिहंताय, २ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाय,
३ ॐ ह्रीं नमो आचार्याय, ४ ॐ ह्रीं नमो उद्यमताय,
५ ॐ ह्रीं नमो लोण सद्यसाय, ६ ॐ ह्रीं नमो दसयस्य
७ ॐ ह्रीं नमो नागाय ८ ॐ ह्रीं नमो चारितस्य
९ ॐ ह्रीं नमो तवाम्य

इम प्रमाणे गुणना को :

अथ सिद्धअष्टगुणाः ॥

१ अनेनज्ञानसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥

२ अनेनदर्शनसंयुताय श्री सि०

३ अण्णापायगुणसंयुताय श्री सि०

४ अनेनसम्यक्सचचारित्र्यगुणसंयुताय श्री सि०

५ अक्षय्यविपतिगुणसंयुताय श्री सि०

६ आरुविनिर्जयगुणसंयुताय श्री सि०

७ अगुह्यलघुगुणसंयुताय श्री सि०

८ अनन्यार्थगुणसंयुताय श्री सि०

॥ इति सिद्ध अष्टगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्तर्ध उस्ममि० करके अठ लोमस्म का काउस्मग करे एक लोमस्म प्रगट कहे, कीर श्रोक करे को ॥ जितना खमाममणा त्रिम पदमें है उतना लोमस्म का काउस्मग को, प्रगट लोमस्म कहिके उपर परमने गुयना लिख सो की—

अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥

२ सूर्यवत्तेजस्विगुणसंयुताय श्री आ० ॥

३ युगप्रधानागमसंयुताय श्री आ०

४ मधुरवाक्पगुणसंयुताय श्री आ० ॥

५ गांभीर्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥

६ धैर्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥

७ उपदेशगुणसंयुताय श्री आ० ॥

८ अपरिश्राविगुणसंयुताय श्री आ० ॥

९ साम्यप्रकृतिगुणसंयुताय श्री आ० ॥

१० शीलगुणसंयुताय श्री आ० ॥

११ अविघट्टगुणसंयुताय श्री आ० ॥

१२ अतिकथकगुणसंयुताय श्री आ० ॥

- १३ अक्षयलक्षणसंयुताय श्री आ० ॥
 १४ प्रसादवनगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १५ क्षमागुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १६ मृदुगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १७ सर्वसंगमुक्तिगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १८ प्रामुगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १९ द्वादशविधनरगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २० द्वादशविधसंयमगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २१ सत्यव्रतगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २२ शौचगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २३ अक्षिप्तगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २४ प्रत्यर्पणगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २५ अनिर्यभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 २६ अक्षरणभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 २७ संसारवस्तुभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 २८ एकव्यवस्थाभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 २९ अग्न्यभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३० अशुचिभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३१ आश्रयभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३२ संवत्तभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३३ निर्जराभाषनाभावकाय श्री आ० ॥

- ११ वनमग्निकायभक्त्याग श्री मा०
 - १२ प्रमत्तागभक्त्याग श्री मा०
 - १३ एकेन्द्रिगर्जागभक्त्याग श्री मा०
 - १४ वेष्टेन्द्रिगर्जागभक्त्याग श्री मा०
 - १५ नेष्टेन्द्रिगर्जागभक्त्याग श्री मा०
 - १६ षडष्टेन्द्रिगर्जागभक्त्याग श्री मा०
 - १७ एनेन्द्रिगर्जागभक्त्याग श्री मा०
 - १८ लांघनिग्रहकाग श्री मा०
 - १९ क्षमागुणगुक्ताग श्री मा०
 - २० शुभभायनाभायकाग श्री मा०
 - २१ प्रनिलेखनादिक्रिगागुदकाग श्री मा०
 - २२ संजमगंगगुक्ताग श्री मा०
 - २३ मनोगुणगुक्ताग श्री मा०
 - २४ वचनशुक्तियुक्ताग श्री मा०
 - २५ कायशुक्तियुक्ताग श्री मा०
 - २६ शान्तादिद्वाविजनिपरीसहसहननन्वराग श्री मा०
 - २७ मरणांतउपमर्गमहननन्वराग श्री मा०
- ॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥
- १ परमार्थमंगनवनारूपश्रीसहर्शनाय नमः ॥
 - २ परमार्थजनृसेवनारूप सह० ॥
 - ३ उगापन्नदर्शनवर्जनरूप सह० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥

५ शुश्रूषारूप सह० ॥

६ धर्मरागरूप सह० ॥

७ वैशवृत्तरूप सह० ॥

८ अर्हतिनयरूप सह० ॥

९ सिद्धविनयरूप सह० ॥

१० वैश्यविनयरूप सह० ॥

११ भुतविनयरूप सह० ॥

१२ धर्मविनयरूप सह० ॥

१३ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥

१४ आचार्यविनयरूप सह० ॥

१५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥

१६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥

१७ दर्शनविनयरूप सह० ॥

१८ संसारे जिनाज्ञामारमिति निमग्नरूप सह० ॥

१९ संसारे जिनमनमारमिति निमग्नरूप सह० ॥

२० संसारे जिनमनस्थिममाभ्यादितारमिति नि० ॥

२१ शोकानुपकारहिताय सह० ॥

२२ कांक्षादुपकारहिताय सह० ॥

२३ विविक्तिमात्पदुपकारहिताय सह० ॥

२४ कुरत्प्रिपज्ञेमात्पदुपकारहिताय सह० ॥

- २० तन्मणिगदयगादिनाय सद० ॥
 २१ प्रमथनप्रभावकरूप सद० ॥
 २२ धर्मकथाप्रभावकरूप सद० ॥
 २३ यादिप्रभावकरूप सद० ॥
 २४ त्रैमलिकप्रभावकरूप सद० ॥
 २५ तपस्विप्रभावकरूप सद० ॥
 २६ प्रज्ञायादिकविगाधुन्प्रभावकरूप सद० ॥
 २७ शृङ्गाभंजनादिमिदप्रभावकरूप सद० ॥
 २८ कविप्रभावकरूप सद० ॥
 २९ जिनशामने कौशलना भूषण स० ॥
 ३० प्रभावनाभूषणरूप स० ॥
 ३१ तीर्थसेवाभूषणरूप स० ॥
 ३२ ह्यैर्यनाभूषणरूप स० ॥
 ३३ जिनशामने भक्तिभूषणरूप स० ॥
 ३४ उपशमगुणरूप स० ॥
 ४० संवेगगुणरूप स० ॥
 ४१ निर्वेदगुणरूप स० ॥
 ४२ अनुकंपागुणरूप स० ॥
 ४३ आत्मिकगुणरूप सद० ॥
 ४४ परतीर्थकादिर्वदनवर्जनरूप सद० ॥
 ४५ परतीर्थकादिनमस्कारवर्जनरूप सद० ॥

- ४६ परमार्थिकादिआल्लाषवर्जनस्य स० ॥
 ४७ परमार्थिकादिमंलापवर्जनस्य श्रीस० ॥
 ४८ परमार्थिकादिअशनादिदानवर्जन श्रीस० ॥
 ४९ परमार्थिकादि गंधपुष्पादिप्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
 ५० राजाभियोगाकारयुक्तश्रीसह० ॥
 ५१ गणाभियोगाकारयुक्तश्रीस० ॥
 ५२ पालभियोगाकारयुक्त श्री सह० ॥
 ५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५४ कानारवृत्त्याकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५५ गुम्फनिघट्टकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५६ सप्ततयगात्रिधर्मस्य मूलमिति चिन्तनस्य सह० ॥
 ५७ चारित्र्यधर्मस्य पुरस्य द्वारमिति चिन्तन श्री सह० ॥
 ५८ चारित्र्यधर्मस्य प्रतिप्रानमिति चिन्तनस्य सह० ॥
 ५९ चारित्र्यधर्मस्य प्रतिप्रानमिति चिन्तनस्य सह० ॥
 ६० चारित्र्यधर्मस्य भारकमिति चिन्तनस्य सह० ॥
 ६१ चारित्र्यधर्मस्य भाजनमिति चिन्तनस्य स० ॥
 ६२ चारित्र्यधर्मस्य सतिममिति चिन्तनस्य स० ॥
 ६३ अग्निर्जाय इति अट्टानस्थानयुक्त श्री सह० ॥
 ६४ सप्तर्षीर्जाय निग्यानि अट्टानस्थानयुक्त सह० ॥
 ६५ सप्तर्षीर्जायः कर्माणि कर्तोर्मानि अट्टानस्थानयुक्त स०
 ६६ सप्तर्षीर्जायः कृतकर्मोऽपि वेदधर्मानि अट्टानस्थानयुक्त स०

६७ जायस्यास्ति निर्व्यागमिति श्रद्धानम्यानपुनःश्रीमः

६८ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानम्यानपुनःश्रीमः

इति मन्त्र मन्त्र मन्त्रमन्त्र मन्त्र

अथ ज्ञानपदके २१ भेद लिख्यते ॥

१ स्पर्शनेन्द्रियजन्यप्रहमनिजानाग नमः ॥

२ रसनेन्द्रियजन्यप्रहमनिजानाग नमः ॥

३ घ्राणेन्द्रियजन्यप्रहमनि० ॥

४ श्रोत्रेन्द्रियजन्यप्रहमनि० ॥

५ स्पर्शनेन्द्रियअर्थावप्रहमनि० ॥

६ रसनेन्द्रियअर्थावप्रहमनि० ॥

७ घ्राणेन्द्रियअर्थावप्रहमनि० ॥

८ चक्षुरिन्द्रियअर्थावप्रहमनि० ॥

९ श्रोत्रेन्द्रियअर्थावप्रहमनि० ॥

१० मन इन्द्रिय अर्थावप्रहमनि० ॥

११ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा मनि० ॥

१२ रसनेन्द्रिय ईहा मनि० ॥

१३ घ्राणेन्द्रिय ईहा मनि० ॥

१४ चक्षुरिन्द्रिय ईहा मनि० ॥

१५ श्रोत्रेन्द्रिय ईहा मनि० ॥

१६ मन इन्द्रिय ईहा मनि० ॥

१७ स्पर्शनेन्द्रिय अपाय मति०

१८ रसनेन्द्रिय अपाय मति० ॥

४० अगमिकश्रुत० ॥

४१ अंगविष्टश्रुत० ॥

४२ अनंगप्रविष्टश्रुत० ॥

४३ अनुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥

४४ अतनुगामि अवधि० ॥

४५ वर्द्धमान अवधि० ॥

४६ क्षीयमान अवधि० ॥

४७ प्रमिषानि अवधि०

४८ अप्रमिषानि अवधि० ॥

४९ साक्षुमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥

५० विपुलमतिमनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकांताकप्रकाशकश्रीकेयलज्ञानाय

॥ इति ज्ञानपदके ५१ भेद .

इति साह इत्यनेन ५१ नमस्कार को ।

अथ चारित्रपदके ७० भेद ॥

१ ध्यानातिगमनविरमणरूपचारिणाय

२ मृदायादविरमणरूपचारि० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूपचारि० ॥

४ मैथुनविग्मणरूपचारि० ॥

५ वृत्तिग्रहविरमणरूपचारि० ॥

६ क्षमाधर्मरूपचारि० ॥

- ४० अगमिकथुन० ॥
 ४१ अंगविष्टथुन० ॥
 ४२ अनंगप्रविष्टथुन० ॥
 ४३ अनुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
 ४४ अननुगामि अवधि० ॥
 ४५ घट्टमान अवधि० ॥
 ४६ क्षीयमान अवधि० ॥
 ४७ प्रनिपानि अवधि०
 ४८ अप्रनिपानि अवधि० ॥
 ४९ साजुमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥
 ५० विपुलमतिमनःपर्यवज्ञा० ॥
 ५१ लोकालोकप्रकाशकश्रोत्रकेवलज्ञानाय नमः ॥
 ॥ इति ज्ञानपदके ५१ भेद ॥

इस तरह इकावन ५१ नमस्कार करें ।

अथ चारित्र्यपदके ७० भेद लिख्यते ॥

- १ प्राणान्तिष्ठानविरमणरूपचारित्र्याय नमः ॥
 २ मृषायादविरमणरूपचारि० ॥
 ३ अदत्तादानविरमणरूपचारि० ॥
 ४ मैथुनविरमणरूपचारि० ॥
 ५ परिग्रहविरमणरूपचारि० ॥
 ६ क्षमाधर्मरूपचारि० ॥

- २८ अतिरिक्तश्च मन्त्रादिपञ्चनवाग्रूपसंगम ना० ॥
 २९ प्रमार्जनरूपसंगमचारि० ॥ -
 ३० मनःसंगमचारि० ॥
 ३१ वाक्संगमचारि० ॥
 ३२ कायासंगमचारि० ॥
 ३३ आचार्यवैयाघृत्यरूपसंगमचारि० ॥
 ३४ उपाध्यायवैयाघृत्यरूपसंगमचारि० ॥
 ३५ तपस्विर्वैयाघृत्यरूपसंगमचारि० ॥
 ३६ लघुशिष्यादिवैयाघृत्यरूपसंगमचारि० ॥
 ३७ ग्लानसाधुवैयाघृत्यरूपसंगमचारि० ॥
 ३८ साधुवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 ३९ समगोपासकवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 ४० संघवैयाघृत्यरूपचारि० ॥ -
 ४१ कुलवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 ४२ गणवैयाघृत्यरूपचारि० ॥
 ४३ पशुपटगादिरहिनवमतिवसनव्रत्यगुप्तिचारि० ॥
 ४४ स्नानाद्यादिविक्रयावर्जनव्रत्यगुप्तिचारि० ॥
 ४५ स्त्रीआसनवर्जनव्रत्यगुप्तिचारि० ॥
 ४६ स्त्रीअंगोपांगनिराक्षणवर्जनचारि० ॥
 ४७ कुट्टपनरसहितस्नानावभावश्रवणवर्जनचारि० ॥
 ४८ पूर्वस्नानेभोगचिन्तनवर्जनव्रत्यगुप्तिचारि० ॥

- ४६ जमिसरसआहारवर्जनद्रव्यगुप्तिवारि० ॥
 ४७ अग्निघ्राहारकरणावर्जनद्रव्यगुप्तिवारि० ॥
 ४८ अंगविभूषावर्जनद्रव्यगुप्तिवारि० ॥
 ४९ अक्षस्यगणपोरूपवारि० ॥
 ५० उद्योदनीमपोरूपवारि० ॥
 ५१ धूमिमंक्षेपरूपवारि० ॥
 ५२ रसव्यागमपोरूपवारि० ॥
 ५३ कायफलेजनपोरूपवारि० ॥
 ५४ मंजुखणामपोरूपवारि० ॥
 ५५ प्रायश्चित्तमपोरूपवारि० ॥
 ५६ विनयमपोरूपवारि० ॥
 ५७ वैद्यावृत्त्यनपोरूपवारि० ॥
 ५८ मज्झिमायनपोरूपवारि० ॥
 ५९ एवमनपोरूपवारि० ॥
 ६० उपमर्गनपोरूपवारि० ॥
 ६१ अनेनज्ञानमंयुक्तवारि० ॥
 ६२ अनेनइज्जनमंयुक्तवारि० ॥
 ६३ अनेनचारित्र्यमंयुक्तवारि० ॥
 ६४ अंशनिघटकरणवारि० ॥
 ६५ माननिघटकरणवारि० ॥
 ६६ भाषानिघटकरणवारि० ॥

७० लोभनिग्रहकरणधारि० ॥

अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ पावत्कथिनतपसे नमः ॥

२ इत्यन्तपोभेदतपसे नमः ॥

३ पाण्डुऊगोदरीतपभेदतपसे नमः ॥

४ अभ्यन्तरऊगोदरीतपभेदतपसे नमः ॥

५ द्रव्यतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥

६ क्षेपतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥

७ कालतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥

८ भावतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥

९ कायक्लेषतपभेद त० ॥

१० रसत्यागतपभेद त० ॥

११ इन्द्रियकषाययोगविषयकसंलीनतातपसे नमः

१२ स्त्रीपशुपक्षिकादिषर्जितस्थानप्रवर्धितसंलीनता त

१३ आलोग्यग्रायच्छिस्त तप०

१४ प्रतिक्रमग्रायच्छिस्त तप०

१५ मिश्रग्रायच्छिस्त तप०

१६ विवेकग्रायच्छिस्त तप०

१७ उपमर्गग्रायच्छिस्त तप०

१८ तपग्रायच्छिस्त त०

१९ भेदग्रायच्छिस्त त०

- २० मूलप्रायश्चित्तम् ॥
 २१ अणवस्थितप्रायश्चित्तम् ॥
 २२ पारंश्वप्रायश्चित्तम् ॥
 २३ ज्ञानविनयरूपम् ॥
 २४ दर्शनविनयरूपम् ॥
 २५ वारिप्रविनयरूपम् ॥
 २६ शुर्वादिकमनविनयरूपम् ॥
 २७ वनविनयरूपम् ॥
 २८ कायविनयरूपम् ॥
 २९ उपचारकविनयरूपम् ॥
 ३० आचार्यवेद्यावयवम् ॥
 ३१ उपाध्यायवेद्यावयवम् ॥
 ३२ साधुवेद्यावयवम् ॥
 ३३ तपस्विवेद्यावयवम् ॥
 ३४ ऋषिगिर्व्यादिवेद्यावयवम् ॥
 ३५ ग्लानसाधुवेद्यावयवम् ॥
 ३६ भ्रमणोपामकवेद्यावयवम् ॥
 ३७ संघवेद्यावयवम् ॥
 ३८ कुलवेद्यावयवम् ॥
 ३९ गणवेद्यावयवम् ॥
 ४० वापणातपसे नमः ॥

४१ पृच्छनातपसे नमः ॥

४२ परावर्तनातपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षानतपसे नमः ॥

४४ धर्मकथातपसे नमः ॥

४५ ध्यातिध्याननिवृत्त त० ॥

४६ रीतिध्याननिवृत्त त० ॥

४७ धर्मध्यानचिन्तन त० ॥

४८ शुद्धध्यानचिन्तन त० ॥

४९ पाण्डित्यतपसे नमः ॥

५० अभ्यन्तरतपसे नमः ॥ इति पञ्चाशत्तपसे

इयं तादृ ४० नमस्कारः कर्तुं

अथ पञ्च कल्याणकी टीप

॥ कार्तिक-कृष्णपक्ष-कार्तिक वदी ॥

१ शम्भुनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

२ अरिष्टनेमिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

३ पद्मपद्मजिनाय जातजन्मने नमः

४ पद्मपद्मजिनाय गृहीतदाज्ञाय नमः

५ महावीरजिनाय मोक्षगताय नमः

कार्तिक-शुक्लपक्ष-कार्तिक सुदी ॥

६ सुविधिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

७ अरिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

मार्गदीर्घ-कृष्ण-पक्ष-मिगसर वदी ।

१० सुविधिनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

११ सुविधिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

१२ महाधरजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

१३ पद्मधरजिनाय मोक्षगन्ताय नमः

॥ मार्गदीर्घ-शुक्लपक्ष-मिगसर सुदी ॥

१० भरनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

११ भरनाथजिनाय मोक्षगन्ताय नमः

१२ धरनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

१३ महिनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

१४ मन्दिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

१५ महिनाथजिनाय उत्पलकेवलज्ञानाय नमः

१६ अरिष्टनेमिजिनाय उत्पलकेवलज्ञानाय नमः

१७ शास्त्रधराजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

१८ शास्त्रधराजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ पौष-कृष्णपक्ष-पौष वदी ॥

१० पार्श्वनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

११ पार्श्वनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

१२ जनपदधरजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

१३ जनपदधरजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

१४ शीतलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः.

॥ पौष-शुक्लपक्ष-पौष सुदी ॥

१ विमलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

२ शंभुनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

३ अजितनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

४ अभिनन्दनजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

५ धर्मनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ माघ-कृष्णपक्ष-माघ वदी ॥

१ पद्मप्रभजिनाय व्यवनश्रावणाय नमः

२ शीतलनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

३ शीतलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

४ अयमर्धजिनाय मोक्षगनाय नमः

५ श्रेयांसनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ माघ-शुक्लपक्ष-माघ सुदी ॥

१ अभिनन्दनजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

२ वासुपुत्रजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

३ विमलनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

४ धर्मनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

५ विमलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

६ अजितनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

१. मज्झिमापज्झिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
 २. अभिनन्दनजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
 ३. परमनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ फाल्गुन-वृष्णपक्ष-फागण वदि ॥

१. सुपार्श्वनाथजिनाय उत्पत्तकेवलजानाय नमः
 २. सुपार्श्वनाथजिनाय मोक्षप्राप्ताय नमः
 ३. चन्द्रप्रभजिनाय उत्पत्तकेवलजानाय नमः
 ४. सुविधिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
 ५. कपभक्षजिनाय उत्पत्तकेवलजानाय नमः
 ६. श्रेयांसनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 ७. मुनिसुघनजिनाय उत्पत्तकेवलजानाय नमः
 ८. श्रेयांसनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
 ९. वासुपूज्यजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
 १०. वासुपूज्यजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ फाल्गुन-शुक्लपक्ष-फागण सुदी ॥

१. अरनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
 २. महिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
 ३. शङ्खभयनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
 ४. महिनाथजिनाय मोक्षप्राप्ताय नमः
 ५. मुनिसुघनजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ चैत्र-कृष्णपक्ष-चैत्र वदी ॥

- ४ पार्श्वनाथजिनाय स्वयनप्राप्ताय नमः
- ५ पार्श्वनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
- ६ चन्द्रप्रभजिनाय स्वयनप्राप्ताय नमः
- ८ मायभेदजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
- ८ मायभेदशमिजिनाय गृहीमर्दाक्षाय नमः

॥ चैत्र-शुक्लपक्ष-चैत्र सुदी ॥

- ३ कुण्डुनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
- ५ अजिननाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ५ शोभननाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ५ अनन्तनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ९ सुमतिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ११ सुमतिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
- १३ महार्थारजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
- १५ पद्मप्रभजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ वैशाख-कृष्णपक्ष-वैशाख त्रिदि ॥

- १ कुण्डुनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- २ शीतलनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ५ कुण्डुनाथजिनाय गृहीमर्दाक्षाय नमः
- ६ शीतलनाथजिनाय स्वयनप्राप्ताय नमः

॥ ज्येष्ठ-शुक्लपक्ष-जेठ वदि ॥

५ धर्मनाथजिनाय मोक्षगताय नमः

६ वासुपुज्यजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

१५ सुपार्श्वनाथजिनाय जातजन्मने नमः

१६ सुपार्श्वनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ आपाद-शुक्लपक्ष-आषाढ़ वदी ॥

४ ऋषभदेवजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

७ विमलनाथजिनाय मोक्षगताय नमः

९ नमिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ आपाद-शुक्लपक्ष-आषाढ़ सुदी ॥

१ महावीरजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

८ अरिष्टनेमिजिनाय मोक्षगताय नमः

१४ वासुपुज्यजिनाय मोक्षगताय नमः

॥ श्रावण-शुक्लपक्ष-श्रावण वदि ॥

४ शंखनाथजिनाय मोक्षगताय नमः

७ अन्ननाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

८ नमिनाथजिनाय जातजन्मने नमः

९ कुन्तीनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

॥ श्रावण-शुक्लपक्ष-श्रावण सुदी ॥

५ सुमतिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

अथ दीपमालाको गुणनो लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनाथाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिसर्वज्ञाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिपारंगताय नमः

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकेवलज्ञानाय नमः

॥ इति दीपमालाको गुणनो ॥

॥ अथ २० विहरमानों के नाम ॥

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| १ श्री सीमंघर स्वामी | २ श्री युगमंघर स्वामी |
| ३ श्री पाहुस्वामी | ४ श्री सुपाहु स्वामी |
| ५ श्री सुंजात स्वामी | ६ श्री स्वयंप्रभ स्वामी |
| ७ श्री कपमानन स्वामी | ८ श्री अनंतवीर्य स्वामी |
| ९ श्री सुरप्रभ स्वामी | १० श्री विशालधर स्वामी |
| ११ श्री यज्ञधर स्वामी | १२ श्री चंद्रानन स्वामी |
| १३ श्री चंद्रपाहु स्वामी | १४ श्री भुजंग स्वामी |
| १५ श्री ईश्वर स्वामी | १६ श्री नेमप्रभ स्वामी |
| १७ श्री वाग्मेन स्वामी | १८ श्री महाभद्र स्वामी |
| १९ श्री देवप्रभ स्वामी | २० श्री अजिनवीर्य स्वामी |

चार साश्वते जिनवर के नाम ।

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १ श्री कपमानन स्वामी | २ श्री चंद्रानन स्वामी |
| ३ श्री वाग्मेन स्वामी | ४ श्री यज्ञमान स्वामी |

साम्यभाव रखूँ मैं उनपर, ऐसी परिणति हो जावे ॥२॥
 गुणीजनोंको देख हृदयमें, मेरे प्रेम उमड़ आवे ।
 यने जहाँतक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ॥
 होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे ।
 गुण-ग्रहणका भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ॥३॥
 कोई घुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे ।
 माखों घरों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आजावे ॥
 अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आने ।
 मो भी न्यायमार्गसे मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥४॥
 शोकर सुख में मग्न न कृते, दुरामें कभी न पगरावें ।
 गर्ज-नदी-स्पर्शान-भयानक, अटवीसे नहीं भय लावें ॥
 रहे अडोल-अकंप निरन्तर, यह मन हृत्तर नन जावे ।
 दृष्टियोग-अनिष्टयोग में, सहनई लना दिला लागे ॥५॥
 सुखी रहें सब जीव जगनके, कोई कभी न घगरावें ।
 वैर-पाप-अभिमान छाँड़ जग, निम्न नये मंगल मार्गें ॥
 घरघर यथा रहे धर्म की, दृष्टकर दृष्टकर हो जायें ।
 ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना, मनुज-जन्मकल सप पायें ॥
 ईति-ध्यान द्याये नहीं जगमें, सृष्टि समय पर दृष्टा करे ।
 पर्यनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजाका किया करे ॥
 गंगा सरा-दुर्मिथ न कैले, प्रजा जांति से जिया करे ।
 दरघ अहिंसा-धर्म जगन में, कैल सर्वदिग किया करे ॥१०॥

छट्टी अशुचि भावना;—

दिपे चाम चादर मड़ी, हाड पीजरा देह ।
भीतर या सम जगनमें, और नहीं बिन गेह ॥३॥

॥ मारडा ॥

सातमी आश्रव भावना;—

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा ।
कर्म चोर चहुँ ओर, सरबस लूटे सुधि नहीं ॥४॥

आठमी संहर भावना;—

सग गुरु देय जगाय, मोह नींद जब उपशमे ।
नय कुछ बनै उपाय, कर्म चोर आवन रुके ॥८॥

॥ दोहा ॥

नवमी निर्जरा भावना;—

ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधे अम छोर ।
या विधि बिन निकसे नहीं, पैठे पूरव ओर ॥
पंच महावन संचरण, समिति पंच प्रकार ।
प्रपल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार ॥९॥

दशमी लोक संठाण भावना;—

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान ।
तारें जाय अनादिनै, भरमन हे बिन ज्ञान ॥१०॥

इग्यारमी षोडिषीज-भावना;—

धन तन कंचन राजसुख, सषहिं सुलभ कर जान ।
दुलभ है संसारमें, एक ग्यारथ ज्ञान ॥११॥

॥ ग्यारमी धर्म भावना ॥

जाये सुखतक देय सुख, चिंतत चिन्ता रैन ।
बिन जाये बिन चिन्ते, धर्म सकल सुख दैन ॥१२॥

अथ आठ—धुई से देववांदने की विधि ॥

एता ग्वनामस्य देवा धैव्यगदन काना ।

सकलकुशलवाद्भी-पुष्करावर्तमेधो,

इरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानः ।

भवजलनिधिपोगः सर्वसम्पत्तिदेतुः,

स भवतु मम मे वः अंगसे पार्श्वदेवः ॥१॥

नमोऽस्तुते अरिहंताय भगवताय आङ्गराय नि-
मग्नराय सगंसंपुद्गाय पुरिसुत्तमाय पुरिससीताय
पुरिसवरपुष्टिधाय पुरिसवरगंधर्वाय लोमुत्तमाय
लोगनाथाय लोगहिषाय लोगपईषाय लोगपञ्चोन्न-
राय अभयदाय वरसुददाय मगाददाय सरसदाय-
यं बोहिददाय धम्मदाय धम्मदेसियाय धम्मनाथाय
धम्मसारदीय धम्मवरपाउरंगवववदीय अप्पटिप-

निष्ठाणं नारयाणं बुद्धाणं धोह्याणं मुत्ताणं मोक्षणं
 मध्यन्तणं मज्जदरिसीणं मिथमपलमरुअमणं
 फलप-मन्वायाह-मपुणरातिसि सिद्धिगः नामधेये ठा
 मंरत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ प्पडि
 मिट्ठा जे अ भविस्संमि शागण काले मंवरु अ वट्ठम
 मय्यं निचिह्णेण वेदामि ॥१॥

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् इरियायहिणं
 दिक्कमामि, इच्छं । इच्छामि वट्ठिमिउ इरियायहिण
 विराहणाण गमणागमणे पाणकमणे पाणकमणे इरि
 कमणे भामा उन्निग वणागदग मट्टमकहसंत्ताणा मंर
 णे जे मे जीवा विराहिया वणिदिवा वेइदिवा मेइदि
 यउरिदिवा वणिदिवा अमिहिया वणिगा लेमिया
 पाइया मंरहिवा वरियाविवा किल्लामिया उइविवा
 नाजोटाणं मंरामिया जीवियाजो वयरोविवा म
 मिच्छामि दूकहं ।

मम उल्लासणेण पाणच्छित्तकरणेण विमो
 कणेण विमट्टाकरणेण पावाणं कम्मणा निष्ठाणगडा
 दामि काटम्मणं ।

अथ कम्मणिणं नाममिण्णे यामिण्णे लोप
 जेमाइण्णे उट्टुण्णे पाणनिमयेणं भमन्ति विल
 रुडाणं मुट्टुमेहि भंगमंवात्तिहि मुट्टुमेहि मेलमं

जय जय नाभि नरिंद नंद सिद्धाचल मंडण ।
 जय जय प्रथम जिणंद चन्द भव दुःख विहंगण ॥
 जय जय साधु सुरिंद विंद वंदिय परमेसर ।
 जय जय जयदानंद कंद श्रीरिपभ जिणेसर ॥
 अमृत सम जिनधर्मनो ए दायक जग मे जाण ।
 तुम पद पंकज प्रीति घर निशि दिन नमत कल्याण ॥

नमोत्तुगं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं
 तिस्थपराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं
 पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोमुत्तमाणं
 लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईयाणं लोगपओअग-
 राणं अमपदयाणं अकखुदयाणं मग्गदयाणं सरणदया-
 णं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनाप-
 गाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्खवदीणं अत्थ-
 दिह्यवरनाणदंसणघराणं विअट्ठउमाणं जिणाणं
 जावयाणं तिसाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहियाणं मुत्ताणं
 मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिधमयलमरु-
 मणं नमक्खपमब्बापाहमपुणराविसि सिद्धिगइ ना-
 मपेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिपभयाणं जे अ
 अईया सिद्धा जे अ भविसंसंति यागए काले संपइ अ
 बहमाणा सव्वे तिथिदेण वंदामि ॥

नमिजिणं च । वंदामि रिद्धनेमि, पासं तद् वद्धमाणं
 ॥४॥ एवं मण अभिधुआ, विद्धयरयमला एहीण जर्म
 रणा । चउपीसं पि जिणवरा, तित्थपरा मे पसीयंतु ॥५॥
 कित्तिप-वंदिप-महिपा, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा
 आत्ताग पोहिलाभं, समाहिबर मुत्तमं दितु ॥६॥ वंरे
 निम्मलपरा, आइधेसु अहियं पयासपरा । सागरं वरा
 भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्यलोण अरिहंन चेइआणं करेमि काउस्सगं
 वंइणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्ति
 आणं सम्माणवत्तिआए पोहिलाभवत्तिआए निरुवस
 गं वत्तिआए सद्धाए मेइए धिईए धारणाए अणुए
 हाए वद्धमाणोए ठामि काउस्सगं ॥८॥

अमत्थ ऊससिणं नीससिणं खासिणं छीएणं उ
 भाइएणं उह्दएणं वायनिसग्गेणं भमलिणं पित्तमुच्छा
 सुहमेहि अंगसंचालेहि सुहमेहि सेलसंचालेहि सुहमे
 हि दिट्ठिसंचालेहि गयमाइएहि आगारेहि अमग
 अयिराहिआं दुअ मे काउस्सगो जाय अरिहंता
 भगवेणाणं नमुआरेणं न पारेमि सायकाए ठाणेणं मो
 गेणं भाणेणं अप्पाणं वोसरामि ॥

एक नवकाय का काउस्सग को पीछे गार के एक आइए
 दूसरी मूनि की बोले

माणं नमुकारेणं न पारेमि नाय कार्य ठाणेणं मोणेणं
भाणेणं अण्णाणं वोमिरामि

एक नरका का काउस्सग ५३ बार के एक चाली तीनों
स्तुति करे—

जने पायं भूयाद् भूयै ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारमयाणं परंपरमयाणं ।

लोअगमुयायाणं नमो सगा सव्वमिद्धाणं ॥१॥

जो देवाण विदेयो, जं देवा पंजला नमंमंति । तं देव दे-
य महिअं, सिरमा वंदे महार्वारं ॥२॥ इकोयि नमुकारं
जिणवर वसहस्स वद्धमागस्स । संसारसागराओ,
तारेइ नरं व नारिया ॥३॥ उअंतसेलमिहरे, दिक्खा
नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्खहिं, अरिद्धनेमि
नमंतामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस्स दोयवंदिया जिणवरा
चउज्जीसं । पग्गट्ठ निट्ठि अट्ठा सिद्धा सिद्धि मम विसंतु ॥

अन्नन्ध ऊससिणं नीससिणं खासिएणं ह्रीएणं
जंभाट्टणं उट्ठुणं वापनिसग्गेणं भमलिए पित्तमु-
च्छाप सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेतसंचा-
लेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं
अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव
अरिहंताणं भगवंनाणं नमुकारेणं न पारेमिताव कार्यं
ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अण्णाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

अंगेक कहे । पीछे चार स्तुति कमवाय पूरी हो जावे पीछे नमोत्थुणं का पाठ पूरा कहे ।

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं ति-
 त्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं
 पुरिसवरपुंडरिआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं
 लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगवईवाणं लोगपञ्चोअग-
 राणं अभवदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरखदया-
 णं पोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं
 धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्खदीणं अप्पडिहय-
 वरणाणंदसणधराणं विअट्ठउमाणं जिणाणं जावयाणं
 तिआणं तारयाणं बुद्धाणं पोहयाणं सुत्ताणं मोअगाणं
 सव्वन्तूणं सव्वदरिसीणं सियमयलमरुअमणंतम-
 वल्लय-मव्वपाह-मपुणराविसि सिद्धिगइ नामयेयं ठाणं
 संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ अइआ
 सिद्धा जे अ भविसंति शागए काले संपइ अ वइमाणा
 सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१॥

जावंति चेइआइ उट्ठेअ अहेअति रियलोए अ ।
 सव्वाइ ताइ वंदे इअ संनो तत्थ संनाइ ॥१॥

जावंत केवि साह भरहेरवय महाविदेहे अ ।
 सव्वेसि तेसि पणआ तिविहेण तिदंढ यिरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

को अवश्य त्याग करना चाहिये और शेष (५) घी, तेल, दूध, दही, गुड, खांड अथवा मीठा पक्वान ।

४ 'उपानह'—जूता, चूट, सिलीपर, मांजा आदि जो पांवमें पहना जाय ।

५ 'तंयोल्'—पान, सुपारी, इलायची, लौंग, पान का मसाला आदि ।

६ 'वत्थ'—वस्त्र (आभूषण 'जेवर' की संख्या भी इसी नियममें धार लेनी चाहिये) पगड़ी, टोपी साफा, अंगरखा, चोगा, कुड़ता, धोती, पायजामा, कुपड़ा, बहर, धंगोछा, रुमाल आदि मरदाना और जनाना कपड़ा जो ओढ़ने पहनेने में आवे ।

७ 'कुसुमेष्टु'—फूल, फूलकी बीजें जैसे—शब्या, पंखा, सेहरा, तुरा, हार, गजरा, अत्तर जो बीज संघनेमें आवे ।

८ 'वाहन'—सवारी-गाड़ी, फिट्टिन, सिगराम, हाथी, घोड़ा, रथ, पालखी, डोली, मोटर, साईकल, रेल, नाव, जहाज, स्टीमर आदि याने 'तरता-फिरता, घरता, और उड़ता' ।

९ 'शयन'—कुरसी, टेबल, पट्टा, पलंग, गद्दी, तकिया पिट्टीना, तख्त, मेज, सुखासन, आदि सोने वा बैठने की चीजें ।

१ काय.

१ पृथ्वीकाय-मिट्टी निमक आदि (ग्यानेमें वा उपभोगमें आवे) उसका वर्जन ।

२ अणुकाय - जो पानी पीनेमें या दूसरे उपयोगमें आवे उसका वर्जन. पानीकी जान कूबा, पावटी, तलाब, नदी, नल और मेघ आदिका प्रमाण संख्या भी करना अच्छा है, पानी छानकर कोई भी काममें लाना तथा जीवानीका यत्न करना अत्यावश्यक है ।

३ तेजकाय-चन्द्रा, अंगीठा, मट्टी, चिराक आदि का प्रमाण ।

४ वायुकाय-दिहोले पंखे [अपने हाथसे वा हुकमसे] जिनसे चलते होंवे उनकी संख्याका प्रमाण. 'दमालसे या कागजसे हवा लेनी यह भी पंखेमें गिनी जानी है उसकी जयणा' ।

५ धनस्पतिकाय-- दराशाक तथा फलादि इतनी जानके ग्याने घर संवेधी मंगाने जिसकी गिनती तथा बलन ।

६ ध्रुसकाय-- ध्रुसजीव अपरार्धा, पिनापरार्धाका विचार करना । यह ६ कायका परिमाण कर लेना ।

६ कर्म.

१ अर्सा (मग्न और भौजार) मलवार, पंदक,

६ काय.

१ पृथ्वीकाय-मिट्टी निम्नक आदि (स्थानोंमें वा उपभोगमें आये) उसका वर्जन ।

२ अणुकाय-- जो पानी पीनेमें वा दूसरे उपयोगमें आये उसका वर्जन. पानीकी जान कृषा, पावड़ी, तलाब, नदी, नल और मेघ आदिका प्रमाण संख्या भी करना अच्छा है, पानी छानकर कोईभी काममें लाना तथा जीवार्थका यत्न करना अत्यावश्यक है ।

३ तेलकाय- नुम्हा, अंगीठा, भट्ठा, गिराक आदि का प्रमाण ।

४ वायुकाय-हिंदोले पंखे [अपने हाथसे वा हुक-मारे] जिनसे चलने होंवे उनकी संख्याका प्रमाण. '६-मालामे वा कागजमे हवा लेनी गह भी वेनेमें गिरा जाता है उसकी जपना' ।

५ वनस्पतिकाय-- दराशाक तथा कच्चादि इनकी जातके स्थान पर संख्या संग्रहने जिसकी गिनती तथा बतल ।

६ प्रमकाय-- प्रमर्जन अपराधी, विनाशकारी विचार करना । गह ६ कायका परिमाण का लेना ।

७ कर्म.

१ मर्मा (जन्म और अंत्यार) मन्त्रकार, वैदिक.

१ संस्मृत १५, समन्तकाम, यह अथर्व वेदादि
 वेदों की ओर से विष्णुजी को देने लायक है ।

२ राज्यान्ता आग्नेयों को २४ ग्रह गृहकार्य में
 करना चाहिये ।

३ विवाह, शादीमें घंटिया, आभूषण आदि
 कुम्हारियों को देना चाहिये ।

४ एक वर्ष की अवधि में गानेवाले बिलने की लंगोचों में
 धूप प्रसार दे इसका भी देना चाहिये ।

५ साल भर की वृद्ध विवाह या बन्धुविवाह
 आदि कुम्हारियों को मिठा देना चाहिये वाने उपरान्त
 मृत्तिमें बहुत दानि होनी है ।

६ अथर्व वेद और बन्धाओं की नीति और धर्म-
 शास्त्रों की शिक्षा के लिये पाठशाला आदिको प्रबन्ध क-
 रना चाहिये ।

प्यारे जैनी भाइयों इस रूप में बिलाने द्वारा निम्न
 वैष्णव वेदों या १४ नियम बिलाने के अवश्य लाभ
 लेना चाहिये । इति काम ।

अथ भावकों के प्रत्याख्यान के ४६ भागा ।

(भांक नंबर ६)

भांक एक ११, का, एक करण और एक अंग से
 कठि नव ।

- १ करं नहीं मनसे
- २ करं नहीं वचनसे
- ३ करं नहीं कायासे
- ४ कराउं नहीं मनसे
- ५ कराउं नहीं वचनसे
- ६ कराउं नहीं कायासे
- ७ अनुमोदुं नहीं मनसे
- ८ अनुमोदुं नहीं वचनसे
- ९ अनुमोदुं नहीं कायासे

अंक एक १० का, एक कारण और दोष जोग से भागा ऊठे नथ ।

- १ करं नहीं मनसे वचनसे
- २ करं नहीं मनसे कायासे
- ३ करं नहीं वचनसे कायासे
- ४ कराउं नहीं मनसे वचनसे
- ५ कराउं नहीं मनसे कायासे
- ६ कराउं नहीं वचनसे कायासे
- ७ अनुमोदुं नहीं मनसे वचनसे
- ८ अनुमोदुं नहीं मनसे कायासे
- ९ अनुमोदुं नहीं वचनसे कायासे

अंक एक १३ का, एक कारण और तीन जोग से

भांगा ऊँडा एक ।

१ कम नहों कराई नहीं अनुमोदु नहीं मनसैं धूमनसे
कपासे ॥ १॥

जूमले ४९ ओगणपचास भांगा ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आराधनाका स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

सकल सिद्धि दायक सदा, श्रीवीरो जिनराय ।

सद्गुरु मामिनि सरस्वति, प्रेम प्रणम्य वाम ॥१॥

त्रिभुवनः त्रिदाला तणो, नंदन गुण गंभीर ।

नासन नायक जग जगो, बर्द्धमान बह वीर ॥२॥

इक दिन वीर जिणंदने, धरणे करि परगाम ।

भयिक जीवन दिन भणी, पूछे गौतम स्वाम ॥३॥

मुनिगर्ग आगविये, कलौ किण परे अरिदंन ।

सुंषा सरस मध वचन रम, भांते श्रीभगवंत ॥४॥

अतिवार आशोदये, मन धरिये गुरु ग्रास ।

जीव ग्रमायो सद्य जे योनि पोरानी लास ॥५॥

त्रिभिनु बली पोंसिरादिये, वापम्धान अहार ।

चार शरण निरव अनुमरो, निंदो दुरित आधार ॥६॥

शुभकरणी अनुमोदिये, भाष भलो मन ध्यान ।

अणमस्तु अणमर आदरी, नवगद जगो सु—

५ करुं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से काया से
 ६ करुं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से काया से
 ७ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से
 ८ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से काया से
 ९ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से काया से
 अंक एक २३ का, दो करण और तीन जोग से
 भांगा उठे तीन ।

१ करुं नहीं कराउं नहीं मन से वचन से काया से
 २ करुं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से काया से
 ३ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से काया से
 अंक एक ३१ का, तीन करण और एक जोग से
 भांगा उठे तीन ।

१ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से
 २ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से
 ३ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं काया से
 अंक एक ३२ का, तीन करण दो जोग से भांगा
 उठे तीन ।

१ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से
 २ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से काया से
 ३ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से काया से
 अंक एक ३३ का, तीन करण और तीन जोग से

भांगा जंठा एक ।

१ कल नहीं कराउ नहीं अनुमोदु नहीं मनसैं धनसैं
कापासे ॥ १॥

जूमले ४९ ओगणपचास भांगा ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आराधनाका स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

सकल सिद्धि दायक महा, खोखाक्षे जिनराय ।
महगुरु मामिनि सरस्वति, प्रेम प्रणम्य पाय ॥१॥
प्रियुधन त्रिशला मणो, मदन गुण गंभीर ।
दासुन नायक जग जयो, वर्द्धमान यह वीर ॥२॥
इक दिन वीर जिगंद्ने, चरणे करि परगुहाम ।
भयिक जीवनहि मणो, पुते गौतम स्वाम ॥३॥
मुक्तिपार्थ आगमिये, कहाँ किण परे अरिहंत ।
सुंघा सरस नय वचन रस, भांगे श्रीभगवंत ॥४॥
अनिवार आलाइये, घत धरिये गुरु माख ।
जोव मर्यादा मपज जे, गोनि चोरानी लाख ॥५॥
विधिगु वली वामिरादिये, वापस्थान अद्वार ।
नारशरण निरग अनुसरो, निंदो दुरित आचार ॥६॥
गुभवर्णो अनुमोदिये, भाव अछो मन आण ।
अणमय अवसर आदरी, सबद जयो सुजाण ॥७॥

शुभगति आराधन तणा, ए छे वृक्ष अधिकार ।
चित्त आणीने आदरो, जिन पामो भवभार ॥८॥

॥ झाल पहेली ॥

॥ ए छिडि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ज्ञान दरिस्सण चारिअ तप धीरज, ए पांचे आ
वार । एह तणा इह भव परभवना, आलोइये अनि
वार रे ॥ १ ॥ प्राणी, ज्ञान भणो गुणखाखी । धीर व
म घाणी रे ॥ प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ ए आंकणी ॥ गुरु ओ
उवाये नहीं गुरु धिनये, काले धरी यमुमान । मृ
मर्थ तंदुभव करी सुधा, भणिये वही उपवान रे ॥२॥
प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ ज्ञानोपकरण पांटी पोधी, उवणी नोक
वाली, तेह तणी कीर्धी आठामना, ज्ञान भक्ति न सं
माली रे ॥ ३ ॥ प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ इत्यादिक विपरीत
ग्यायी, ज्ञान विराध्युं जेह । आ भव परभव बलिप
मवोभव, मिच्छाकुफट तेह रे ॥४॥ प्राणी, समकिन
ग्यो शुद्ध जाणी ॥ ए आंकणी ॥ जिनवचने शंका नवि
तीजे, नवि परमत अभिलाख । साधु तणी निंदा परि
रजो फलसंदेह म राख रे ॥५॥ प्राणी ॥ स० ॥ मृ
पणुं छंडो परशंसा, गुणवंतने आदरिये । साहामीने
म करी धिरता, भक्ति प्रभावना करीये रे ॥६॥ प्राणी
स० ॥ संवैतय प्रासाद तणो जे, अवरणीचाद मन

देवो । इत्य देवतां जे विगसाह्यो, विगसाह्यो उमेण्यो
 ॥७॥ प्राणी ॥ अ० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाभी.
 समवित्तु लेह । आ भय० ॥ मिच्छा० ॥ ८ ॥
 प्राणी, चारित्र्य लो चित्त आणी ॥ १ अर्चणी ॥ पां
 समिति प्रग गुति विराधि, आटे प्रवचनमाय । माधु-
 मणे धर्म परमादे, अद्भुत वचन मन वाच रे ॥९॥ प्राणी
 ॥१०॥ आचरने धर्म सामाधिक, पांमहर्मा मन वाच ।
 जे जयणापदेक जे आटे, प्रवचनमाय न वाला रे ॥१०॥
 प्राणी ॥ अ० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाभी, चारित्र्य
 दोष्यु जेह ॥ आ भय० ॥ मिच्छा० ॥ ११ ॥ प्रा०
 ॥१२॥ पां धर्म नव नवि की दुःखने पांमे निज शक्ते ।
 धर्म मन वच वाच्य धारज, नवि कोरविण भगते रे ॥
 ॥१३॥ प्राणी ॥ अ० ॥ नवधारज आचारं एणि परं,
 विविध विराध्या जेह ॥ आ भय० ॥ मिच्छा० ॥ १४
 ॥ प्राणी ॥ अ० ॥ बलीय विदोषे चारित्र्य केरा, अति-
 चार आलाइये । धार जिणेमर वचन सुर्णाने, पां
 मयल नवि भोइये रे ॥ १४ ॥ प्राणी ॥ अ० ॥
 ॥ दाल धारज ॥ पां सुगुरु पसाय ॥ एदेशी ॥

पृथिवी पाणी नेउ, पाउ वनसवति ॥ १ पांते
 धायर कर्ता ॥ करि करमण आरंभ, तेप्र जे सेडियां
 कथा तत्त्व गणाधीयां ॥ १ ॥ पर आरंभ अनेक

कां भोयरां । मैडी माल चणावीयां ए । लीपण धुपण
 राज, हणी परे परपरे । पृथिवी काय विराधिया ए ॥ २ ॥
 गीयण नायण पाणी, ह्रीलण अपकाय । छोनी धोनी
 करी दूहव्या ए । भाठीगर कुंभार, लोह सोवन गरा ।
 माडमुंजा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काज,
 निखारण । रंगण रांधण रसवनी ए । इयी परे
 कर्मादान, परे परे केषली । तेउ घाउ विराधिया ए
 ॥ ४ ॥ घाडी वन आराम घावि वनस्पति । पान फल
 फल घुटीयां ए । पोहोक पापडी शाक, शेफ्यां सुक-
 प्यां । छुंयां छेयां आधीयां ए ॥ ५ ॥ अलसीने एरंड,
 पाणी घालीने । घणा निलादिक पीलीया ए । घाली
 कोण्डु मांदि, पीली शेल्डी । बंद मूल कलयेयीयां ए ॥
 ६ ॥ एम एकेंद्रिय जीव, हण्वा हणापीया । हणतां जे
 अनुमोदोगा ए ॥ आनय परभव जेह, बलिय भयोभवे
 ते मुझ मिच्छामि दुक्कडेण ॥ ७ ॥ कृमी सरमीयां
 कीटा, गाडर गंडोला । इपल पूरा अलसीयां ए ।
 थाना जलां चडेल, विचलिन रसतणा ॥ बली अथा-
 गां प्रमुग्घनां ए ॥ ८ ॥ एम वेइन्द्रिय जीव, जे मे दूह-
 व्या ॥ ते मुझ ० ॥ उदेही जू लांग्य, मांकड मंकोटा ॥
 गांवह कीटा कृथुआ ए ॥ ९ ॥ गहरीयां घीमेला, कान
 वजरहा । गांगोहा घनेडियां ए । एम तेइन्द्रिय जीव,

जे में दृष्ट्या । मे मुक्त ॥ १० ॥ मागी मगर दांग,
 मग पंगिया । बंगारी बंगियाबहा ग । दिगुण
 दिगु नोट, भमरा भमरिया । बंगी बग गदमोबरी
 ॥ ११ ॥ एव भीरिद्रिय जीव, जे में दृष्ट्या ॥ ले
 मुक्त ॥ जलमां मार्गी जाल, जलगर दृष्ट्या । बममां
 बग बंगिया ग ॥ १२ ॥ बीच्या बीची जीव, पाही
 पागमां । पोंपट पान्या पांजरे ग । तम वनेद्रिय जीव,
 जे में दृष्ट्या ॥ ले मुक्त ॥ १३ ॥

॥ दाल धाजी ॥

॥ प्रथम गोबाला लणे भये जी ॥ ए देखी ॥

गोए लोभ भय हास्यधी जी, बोल्या वपन अस-
 ॥ १ ॥ कूट करी घन पारकां जी, लीयां जेह अदम
 रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिच्छामि दुकट आज ॥ तुम
 माखे महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देह सारुं काज रे ॥
 जिनजी ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यगनां
 जी, मैथुन रिदयां जेह । विषवारस संपदपणे जी, घणु
 विटेव्यां देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परिग्रहनी ममता
 करी जी, भव भव सेली आथ । जे जिहानी ले तिहां
 रहा जी, कोह न आयो साथ रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥
 रपणी भोजन जे करी जी, कीयां अक्षय अमक्षय ।
 रसना रसनी छालधे जी, पाए करी प्रत्यक्ष रे ॥

सा० । ए अंजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृधा-
 बाद हिंसा बोरी, सा० । धन मुर्छा मेहुस तो ।
 कोष मान माया तृष्णा, सा० । प्रेम डेप वैद्युन्य
 तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न किजीये, सा० । कूडा
 न दीजे जाल मो । रति अरति मिथ्या तजो,
 सा० । माया मोस जंजाल मो ॥ ८ ॥ त्रि-
 विध त्रिविध बोसिराविये , सा० । पापस्थान
 अदार तो ॥ शिवगति आराधन तजो , सा० ।
 ए बोपो अधिकार तो ॥ ९ ॥

॥ दाल पांचमी ॥

॥ ह्ये निःसुणी इहां आवीयाए ॥ ए देशी ॥

जनम जरा मरणे करी ए , ए संसार असार
 तो । करवां कर्म सङ्ग अन्तुभवे ए , कोई न राखण
 हार तो ॥ १ ॥ कारण एक अरिहंतनुं ए, कारण
 सिद्ध भगवंत तो । कारण धर्म श्री जैननो ए, साधु
 कारण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए,
 बार कारण गित्त धार तो । शिवगति आराधन तजो
 ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आभव परभव
 जे करवां ए, पाप कर्म बेइ लाख तो । आत्मसाते ते
 निंदीये ए, परिहृमिये गुरु माख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति
 बसविषी ए, जे भांयवां बस्युस तो । इमति बस-

ले यदो ए, बडी भागां उम्मुत्र गो ॥ ४ ॥ वडां
 जे पलां ए, बंटी हल हरीशार गो । अशभव
 टी मुक्तिग ए, करना जीव मंहार गो ॥ ५ ॥ पार
 ने पोपिया ए, जनम जनम परिहार गो । जनमां
 पोहोला पडी ए, कोड न कीर्षा मार गो ॥ ६ ॥ आ
 य परभव जे करवां ए, इम अधिकरण अनेक गो ।
 विषयमोमरायोमे ए, आणी हृदय विवेक गो ॥ ७ ॥
 कृतं निंदा नम करी ए, पाप करवां परिहार गो ।
 यगनि आराधन तगो ए, ए छटा अधिकार गो ॥ ८ ॥

॥ दान छटा ॥

॥ आदि तुं जोइने आपणी ॥ १ ॥ देगी ॥
 धन धन ते दिन माहगे, जिहां कीयो धर्म । दान
 पेल तप आदरी, टाल्यां दृढर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ शैल-
 दिक तीर्थनी, जे कीर्षा यात्र । युगने जिनयर पूजीया,
 ती पोरवां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुमक ज्ञान लखा-
 पां, जिणहर जिणचैव्य । संघ चतुर्विंश साधव्या,
 साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणां सुपरं करवां,
 नुकंषा दान । साधु मरि उवच्छापने, दीधां बहुमान
 ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदीये, इम वारोवार ।
 यगति आराधन तणो, ए सातमो अधिकार ॥ ध०
 ५ ॥ भाव भलो मन आणीये, चित्त आणी ठाम ।

समता भाये भावीये, ए आनमराम ॥ ५० ॥ ६ ॥
 सुख दुःख कारण जीवने. कोइ अघर न होय । कर्म
 भाय जो आचर्या, भोगविशेषों ॥ ५० ॥ ७ ॥ समता
 विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यनां काम । छार उपर ते
 दीपतुं, हांहर चिन्ताम ॥ ५० ॥ ८ ॥ भाव भली परे
 भावीये, ए धर्मनो मार ॥ शिवगति आराधन ननों,
 ए आठमो अधिकार ॥ ५० ॥ ९ ॥

॥ दान सातमी ॥ रेवनगिरि उपरे ॥ १० देशी ॥

हये अघसर जाणा. करिगे संलेपण मार ॥ अण
 मण आदरीये. पद्यर्था चार आहार ॥ लल्लुमा सनि
 मूकी, हांही समता अंग । १० आनम गेरे. समता ज्ञान
 मंग ॥ १॥ गति चारे कांभा. आहार अनंत निःशंक ।
 पण तृप्ति न पाव्यों, जाय लाल-नीलां रक । दुलहा १०
 बली बली. अणमणनो परिणाम । गर्भ पांमोजे. शिव
 पद सुरपद ठाम ॥ २॥ धन धनो जालिभट्ट. मंत्रों मेघ-
 कुमार । अणमण आराधी. पाव्या भवनो पार ॥
 शिवमंदिर जांजे. कर्म एक अघनार । आराधन कैरी,
 ए नयमो अधिकार ॥ ३॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र सब
 कार । मनवी नवि मूको. शिवसुख कल सहकार ॥
 ए जपनां जाण, दुरगति दोष विचार । उपरे ए समता,
 नउद परधनो मार ॥ ४॥ जन्मो नरे जाणा. जो पामे

हुवे निमर्हाज ॥ पचासनी संग्या परगर्ही । मि० ॥ ४ ॥
 अनीम अनागत गिणनां एम । दोदसे कल्याणकथा-
 ये तेम ॥ कुण तिथि छे ए तिथि जेवही । मि० ॥ ५ ॥
 अनंत चौबीसी इग परे गिणो । लाभ अनंत उपवास
 तणो ॥ ए तिथि सहृ तिथि गिरराखही ॥ मि० ॥ ६ ॥
 मौनपणे रहा श्री महिनाथ । एक दिवस संपम धन
 साथ ॥ मौन तणो परिव्रत इम पर्ही । मि० ॥ ७ ॥
 अठ पोरने पोसो लीजिये । वाविहार विधिजुं कीजिये
 ॥ पण परमादन कीजे घरी । मि० ॥ ८ ॥ वरम
 इग्यारे कीजे उपवास । जाय जीय पण अभिरु उल्ला-
 स ॥ ए तिथि मोक्ष तणो पावही । मि० ॥ ९ ॥ अज-
 मणुं कीजे श्रीकार । ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार
 ॥ करो काउसलग्ग गुरु पाये वली । मि० ॥ १० ॥ देहरं
 म्नात्र कीजे वली । पोथी पूजीजे मन रली ॥ मुमतिपुरी
 कीजे दूकही । मि० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोदुं पर्य
 । आराध्यां सुग्य लहिये मर्य ॥ धन पचकस्याण करी आ-
 भरी । मि० ॥ १२ ॥ जेमल सोल इषपासी समे । की-
 धुं रमयन सहृ मन गमे ॥ समय सुन्दर कहे करो प्याव-
 ही । मि० ॥ १३ ॥

भलेरां, बहिलां ऊत्तर आपेरे ॥ ज० मु० ॥ ८ ॥ तुझ
 सरिग्या साहिब पिण मझारे, जो नबि कारज मारेरे
 ॥ ज० ॥ मो मुझ करम नगी गनि अवली, दोष न
 कोटि तुमारे रे ॥ ज० मु० ॥ ९ ॥ दीनदयाल दयाकारी
 दीजे, शुद्ध समकिस सहिनालीरे ॥ ज० ॥ सुगुण मे-
 वकना शान्तिदूस पंगे, मेरीज गुण मणिग्याणी रे ॥ ज०
 मु० ॥ १० ॥ सर्व अदारे गुणमालामे, जेष्टसुदी मोम-
 पामे रे ॥ ज० ॥ मालबंद प्रमिपददिन भेटदा, पीका-
 नेर मझारे रे ॥ ज० मु० ॥ ११ ॥

॥ श्री श्रीमंधरस्थामिका स्तवन ॥

मकर संसार अवनार न हंगुं, स्वामी श्रीमंधरा
 तुझ भगने भंगुं । भेटवा वागवचन आज हिमरे वणी,
 करिय सुपसाय जे वानपु मे सुगो ॥ १ ॥ तुझ गुं
 कट अरिहंस गुं गमिये, जिअया अगे निगो का
 जीहि करि भाविये । अति सवल मुहहिमे मोन माया
 वणी, एक मन भगनि किस करि अभुवन भणी ॥ २ ॥
 जाय आरति करे नयनशो परिगरे, शीठा चटको अदे
 मोभ परानि नरे । नयनरम वचनरम बामरम रदोषो,
 मेम अरिहंस गुं हिमरे नबि चरयो ॥ ३ ॥ दिवस
 ने रात हिमरे अनेगे भं, मुद मन शीरावा दलिय

મહેરો, ઘડિલાં કતાર આપેરે ॥ જ૦ મુ૦ ॥ ૮ ॥ તુઝ
 સરિયા સાહિય વિળ મહારે, જો નયિ કારજ સારે
 ॥ જ૦ ॥ નો મુઝ કરમ નગી ગતિ અવલી, દોષ ન
 કોઈ તુમારો રે ॥ જ૦ મુ૦ ॥ ૯ ॥ દીનદયાલ દયાકરી
 દીજે, શુદ્ધ સમક્તિ સહિનાર્ણારે ॥ જ૦ ॥ સુગુણ સે-
 વકના વાંન્દિત્ત પૂરો, તેહાંજગુણ મળિઆર્ણારે ॥ જ૦
 મુ૦ ॥ ૧૦ ॥ ઘરે અદારે ગુણનાર્ણારે, જિંદગી સોમ-
 વારો રે ॥ જ૦ ॥ ત્યાલબંદ પ્રતિપદદિન મેઢ્યા, વીકા-
 નેર મહારો રે ॥ જ૦ મુ૦ ॥ ૧૧ ॥

॥ શ્રી સીમંધરસ્વામિકા સ્તવન ॥

સકલ સંસાર અવતાર ન હું ગણું, સ્વાર્માસીમંધરા
 તુઝ ભગને મળું । મેઢવા વાગકમલ ભાવ દિપદે ઘણો,
 કરિય સુવમાય જે વાનથું ને મુખો ॥૧॥ તુઝ શું
 કહ અરિહંત શું રામિયે, જિણો અમે નિમ્નો કા
 જાંદિ કરિ આવિયે । અનિ સવલ મુક્તિયે મોહ માયા
 ઘણી, નક મન ભગતિ કિમ કરું ત્રિભુવન ભણી ॥૨॥
 જીવં અરિહંત કરે નવનથ પગિદે, રીશ ચટકો ચટ
 તોયે વર્ણા નહે । નળરમવળરમકામરમ રંગોયો,
 નેમ અરિહંત નું દિપદે નયિ ધર્માયો ॥ ૩ ॥ દિવસ
 ને રાત્રિયે અનેયો ધર્મ, મૃદ મન રીઝવા વલિય

जो होग तो सहिय आयो मिलु ॥११॥ मेरुगिरि
 लेखणी आभ कागल कलं, क्षीरसागर तर्णा दृष्ट खडिषा
 भनं । तुम्ह मिलवाना स्वामी संदेशड़ा, इंद्र पण ह-
 त्रिय न शके, अडे पढ़वा ॥१२॥ आपणे रंगभरि घात
 मुख जेटली, ऊपजे स्वामी न कदाय मुख तेटली ।
 तुणो सीमंधरा राज राजेसरा, लाढ़ ने कोढ़ प्रभु पर-
 सविमाहरा ॥१३॥ पुण्यभवि मोह पश नेह हृवे जहने,
 समरिये गणि संसार नित तेहने । मेहने मोर जिम
 कमल भमरो रमे, तेम अगिहंत नृ नित मोरं गमे
 ॥१४॥ खनं अगिहंतनुं ध्यान दिगड़े परगुं, पापहुं पाप
 हिय रहिय करदो कियुं । काम जिम गरुड घर पेलि
 आवेवही, नमस्त्रिण र्पनी जानि न शके रही ॥१५॥
 पाप में कज्ज मायअ मह परिहरि, स्वामी सीमंधरा तु-
 म्ह पप अणुमरी । गुढ चारित्र करिये प्रभु पालशुं,
 दुःख भेदार संसार भय टालशुं ॥१६॥ तुम्ह हूं दास
 हूं तुम्ह सेवक मही, एह में घात अगिहंत आगल
 करी । पयड़ा माहरी भगनि जाणी करी, आपजो पा-
 पजी सार केवल मही ॥१७॥ कलज ॥ एम फदि पृदि
 समृद्धि कारण, दुरित धारण सुग्य करो । उषझाप
 दर श्री भक्ति लाभ, पुण्यो श्री सीमंधरो । जप जपो
 जगगुरु जीय जीवन करी स्वामी मया घणी । करजीदी

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
 मान राहुं दोष भंगार्थी, देखी कीर्ति अनन्त ।
 भुजापले भवजल नरचा, पूजो मंथ महन्त ॥४॥
 रत्नद्रव गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
 नाभि कमल नी पूजना, करना अविचल धाम ॥५॥
 हृदय कमल उपशम पल, पास्या रागनें रांघ ।
 हेम देह वन स्थले, हृदय तिलक मंगोष ॥६॥
 मोल पहर देह देवता, कंठ विरर वर मूल ।
 मधुर धुनी सुरनर सुणे, निम गले तिलक अमूल ॥७॥
 मांभकर पद पुण्य थी, त्रिभुवन जन मेखन ।
 त्रिभुवन तिलक ममा प्रभु, भाल तिलक जयधन ॥८॥
 मिट्टगिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
 पमिया निम कारण मर्ता, मिट्ट जिन्हा पूजंत ॥९॥
 उपदेसक नय नयनां, निम नय भंग जिनेद ।
 पूजो पहुविध भावार्थी, कंठ सह वार मुनिदे ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हने राणी पद्मावती, जीवराजि लुमाये । जाण
 पाहुं जग मे भल्ल, गुण वेला ध्याये ॥ १ ॥ ते सुम,
 मिष्टामि दुष्टे, अरिहंनरी माण्य । जे में जीव विरा
 जिता, पदार्थी त्याग्य ॥ ते० ॥ २ ॥ मान त्याग्य पृथि-

करदंड । घेंदीयान मराविघा, कोरटा छटी दंड ॥ ते०
 ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीर्घां नारकी दुःख ।
 वेदन भेदन वेदना, ताडन अनिनिग्र ॥ ते० ॥ १५ ॥
 कुंभारनेभवे में किया, नाभाट पचाव्या । तेरी भवे
 निल वीलिया, पापे विंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥
 हली भवे हल वेदीर्घा, फाट्यां शूर्यानां पेट । गूढ
 निदान घमां किया, दीर्घां यत्नद चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥
 मार्याने भवे रोपिया, नानाविध वृक्ष । मूल पत्र-फल
 फूलनां, लागां पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आभां
 वाईयाने भवे, भरथा अधिक भार । पांटी पंटे कांटा
 पट्या, दया नाणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छांयाने भय
 ऐतरया, कीर्षां रंगण पाम । अग्नि आरंभ बीजावना,
 धातुवाद आवाम ॥ ते० ॥ २० ॥ जखणे रंग जूझ
 ता, मारयां माणमर्द । मदिश मांस मारण भर्त्ता,
 लाभां मूल ने बंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ ग्याण ग्याणा
 धातुना, पाणी उल्लेच्यां । आरंभ बीजा अतिवना,
 पांने पापज संख्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ बसि आंगार बीया
 वली, दरमं दव दीया । मम ग्याथा बीजरागना, कृदा
 कोमज बीया ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिळी भवे उंदर लांया,
 गिरली रग्यागि । गूढ गमार लणे भवे, में जू लीन
 मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भाटभुजा लणे भवे, एवेदिय

જોય । જુવારિ તળા મજી ડોકિયા, પાટનાં મોય ॥ તેં
 ॥ ૨૭ ॥ સ્વાંટળ પોમળ મારના, આરંભ અનેર ।
 રાંધળ રૂંધળ અગ્નિનાં, કીર્થાં પાપ ઉદેક ॥ તેં ॥ ૨૮ ॥
 વિક્રધા ગાર કોંથી ચલી, મેળ્યા પાંચ પ્રમાદ । ઇષ્ટવિ-
 યોગ પાછા કોયા, મટન વિપવાદ ॥ તેં ॥ ૨૯ ॥ માધુ
 અને ભ્રાશક તળા, ઘન મટીને મોંઘ્યાં । મહ અને
 ઉત્તર તળાં, મુમ્ક દુષળ તાગ્યાં ॥ તેં ॥ ૩૦ ॥ માર
 ચોળી મિદ્દ પીચરા, જકરાને સમલી । દિસક જીવતળે
 ભેદે, દિસા કીર્થા મચલી ॥ તેં ॥ ૩૧ ॥ મૃવાવડી
 દુષળ ઘળાં, ચલી મર્મે મલાડ્યા । જીવાળાં ડોરવા ઘળાં,
 જીલ્લત મેજાડ્યા ॥ તેં ॥ ૩૨ ॥ ભવ અનેત ભમતાં
 ધકાં, કીર્થા દેહ મેંધ ॥ ત્રિવિધ કર્મ ચોસિરું, તિળણું
 પ્રતિષ્ઠ ॥ તેં ॥ ૩૩ ॥ ભવ અનેત ભમતાં ધકાં,
 કીર્થા પરિગ્રહ મેંધ ॥ ત્રિવિધ ત્રિવિધ કરી ચોસિરું,
 તિળણું પ્રતિષ્ઠ ॥ તેં ॥ ૩૪ ॥ ભવ અનેત ભમતાં
 ધકાં, કીર્થા કુટુંબમેંધ ॥ ત્રિવિધ ત્રિવિધ કરી ચોસિરું,
 તિળણું પ્રતિષ્ઠ ॥ તેં ॥ ૩૫ ॥ ઇણિ પરે દુહમય પર-
 ભેદે, કીર્થાં પાપ અમ્યઝ ॥ ત્રિવિધ ત્રિવિધ કરિ ચોસિરું,
 કરું જન્મ પવિત્ર ॥ તેં ॥ ૩૬ ॥ ણિ વિધે ૫ આગ-
 ખના, ભાવે કરશે જેહ । સમય મુંદર કરું પાપનાં, ચલી
 હુદશે તેહ ॥ તેં ॥ ૩૭ ॥ રાગ વેરાદો જે સુણે, પદ

श्रीजी हात । समस्तमुन्दर कहे पापशा. छटे ममकाल
॥ने०॥३६॥इति॥

अथ श्रावक नीचैलखेल्ला श्रण मनारधने चिन्-

इने महा मोहोटी निज्जेग कर । मथा

संसारनां अंन कर, ने लिखिये छेये॥

कथां हं यात मथा अमंनर परिघट जे
महापापने मूल, दुर्गतिने बधारनां. काम काय मान
माया, मोह, विषय अने कथापनां स्वाधी. महादुःखनु
कारण, महा अनर्थकारं दुर्गतिना शिला मार्ग लेइयां
परिणामी, अज्ञान, मोह, मन्सर गण जने छेपनु मूल,
दुःखविध गतिधर्म ह्य कल्याणलक्षणा दावानम ज्ञान
क्रिया, क्षमा, दया, मन्त्र, मन्त्राय तथा वार्त्ता ज रूप
समक्षितनां नाश करनां मगम अने छल्लक्षणना घाल
करनां, कुमति तथा कुबुद्धि ह्य ५ महाविद्वना देवा
यातो, सुमति अने सुबुद्धि ह्य सुल्लक्षणा नाश
करनां, मय संगम ह्य धनने सुखनां लान वलेश
रूप समुद्रनां बधारनां, जन्म जगा अने मरणनां
देवायातो, कण्डना अहार, मित्राण्य दर्शन रूप दाहव-
नां अंगनां, साक्षात्कारना विघ्नकारं क. दण्ड कर्म विघ्न-
कनां देवायातो, अनेन संसारनां बधारनां, महा पाप,

इच्छामि मामि काउत्ससंगं जो मे गइआ ० क.११. नम
उत्तरी ० कड़ी, नष विनवर्णानो या चार लोमस अथवा
सोह बचकारनो काउत्ससंग करषो. ते पार्श्वे प्रगट
लोमस करी, छद्वा आषड्यकनो मुहवनि पटिलेनाने
पादनां वे देवो ॥

११ सकल मूर्ध्वद्वन्द्व कर्तव्ये यथाजसि ० यम
कायण करधुं ॥

॥ अथ मूर्ध्वद्वन्द्वना ॥

सकल मूर्ध्व पदं कर्जोष्ट. जिनवर नामे संगल
कोट । पहिले स्वर्ग लाग्य वर्जोस, जिनवर नामे मनु
निगदीस ॥ १ ॥ पाजे लाग्य अष्टाविंश कर्जां. श्रीज
शर लाग्य सहस्रां । नांधे स्वर्ग अष्ट लाग्य पार, पांशमे
पदं लाग्य जवार ॥ २ ॥ छट्ठे स्वर्ग सहस्र पचास, मानमे
शालिहा सहस्र प्रामाद । छाठमे स्वर्गे छ हजार, नवदश
मे पदं ज्ञान पार ॥ ३ ॥ अम्बार पारमे प्रणशे सार, नष
प्रेयेप्रे. प्रणमे अम्बार । पांश अनुसर सर्व मली, लाग्य
गोरार्जो अधिकार बली ॥ ४ ॥ सहस्र सत्ताणु प्रेवीज
सार, जिनवर भुवन मणो अधिकार । लांवां सो जोजन
विस्तार, पचास उंथां पदोनेर पार ॥ ५ ॥ एकसो पंचो दिव
परिमाण, मन्मासदिन एक नामे जाण । सो कोट वा-
धान कोट मन्मास, लाग्य गोरार्जु सहस्र पांजाल ॥ ६ ॥

, पडिक्क-
म पोली

' धायुं

माणं "

इयाणं,
मोर्जित्

, कर्त्ता
मो मर्षे

चार

सु "

न ।

॥ अथ वरकनक ॥

वरकनकजंखचिट्ठम-मरकतचनमहिम विगनमोहं ।
मननिगतं जिनानां सर्वामग्नजिनं वेदे ॥ १ ॥

॥ अथ अड्डाडज्जेसु मुनिवन्दन ॥

अड्डाडज्जेसु दीवसमुदेसु, पत्तरमसु कम्मभुमासु ।
जापेन केवि माह , गच्छण गुच्छ पटिग्गहभाग ।
वैयमहस्यभागा, अट्टारमसहम्मसालेगभागा । अकण्ठगा-
शरणिक्का, ते मध्ये मिग्गा मणमा मन्थणं वेदामि ॥

१. एवमात्मनो दद " इच्छाकारेण संदिमह भग-
वन् ! देवमिय पायच्छिन्न विमोहणत्थं काउममम
हं ? इच्छं, " " देवमिय पायच्छिन्न विमोहणत्थं
तेमि काउममम " अस्त्य उममिगणं० कर्त्ता पार
लोममम अथवा मोल नवकारनो काउममम करयो. मे
मार्ता प्रगट् लोममम कर्त्तमे पर्त्ता

२. वेसा एवमात्मनो दद, " इच्छाकारेण संदिमह
भगवन् ! मज्जाय संदिमहं ? इच्छं " कर्त्ता, धामं
एवमात्मनो दद " इच्छाकारेण संदिमह भगवन् !
मज्जाय भणुं ? इच्छं " एव मज्जायना आदेज मार्ता,
नव. नवकार गर्त्ता मज्जाय कहेया ॥ पर्त्ता

४ एव नवकार गर्त्ता, एवमात्मनो दद " इच्छा-



